सूचना.

इस राम वर्षा के द्वितीय भाग में भजनों के अतिरिक्त स्वामी राम तीर्थ जी महाराज का संक्षिप्त जीवन चरित भी है जो उन के परम शिष्य श्रीमान स्वामी नारायण जी की अपनी लेखनी से निरूपण हुआ है, और जिस का मूल्य भी ०॥) है॥ यह दोनों भाग निम्न लिखित पतों पर मिल सक्ते हैं —

(१) नागजी नथू भाई प्रीटर व मालिक

गणात्रा यन्त्रालय, राजकोट

(काठियावार)

(२) गोविन्द जी डाया भाई लाखानी

वकील पोरबंदर

(काठियावार)

(३) लाला अमीर चंद साहिब

प्रेम धाम, बड़ा दरीबा

देहिली

(पंजाब)

विज्ञापन.

विदित हो कि स्वामी राम तीर्थ जी महाराज की अन्य पुस्तकें और उन के परम शिष्य स्वामी नारायण जी के अन्य संशोधित तथा रचित ग्रन्थ भी निम्न लिखित पते पर मिल सक्ते हैं –

(१) अंग्रेज़ी भाषा में स्वामी राम तीर्थ जी के कुल उपदेश सहित संक्षिप्त जीवन चरित्र के ॥ पृष्ठ १६०० के लगभग। तीन भागों (जिल्दों) में विभक्त ॥
मूल्य प्रति भाग बिना जिल्द के १॥) १–८–०
" सहित जिल्द के २) २–०–०

(२) श्री वेदानुवचन (उर्दू भाषा में) बाबा नगीना सिंह जी कृत और स्वामी नारायण जी से संशोधित ॥ इस में उपनिषदों के गूढ़ रहस्य अति उत्तम तथा विचित्र रीति से स्पष्ट खोल कर वर्णित हैं
मूल्य बिना जिल्द के १) १–०–०
" सहित " १॥)........ ....१–८–०

(३) राम वर्षा उर्दू भाषा में भी छप रही है और स्वामी जी के कुल उपदेश अन्य भाषाओं में भी छपने वाले हैं। यह सब निम्न लिखित पते पर ही मिलेंगे ॥

अमीरचंद
प्रेम धाम, बड़ा दरीबा—देहिली

भुमिका.

आत्मा के केवल परोक्ष ज्ञान से हृदय में शान्ति और नित्यानन्द की प्राप्ति नहीं होती बल्कि: उस के अपरोक्ष ज्ञान अर्थात आत्म साक्षात्कार से ही सर्व प्रकार के दुःख निवृत होते हैं॥ और यह आत्म साक्षात्कार केवल युक्ति अथवा शब्द ज्ञान पर बस करने से प्राप्त नहीं होता बल्कि: परोक्ष ज्ञान के लगातार श्रवण, मनन और निदिध्यासन का नतीजा होता है। इसीलिये पूर्व काल के ऋषी श्रुति द्वारा अपना अनुभव यूं प्रगट करते भये:—

: "आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः" यानी आत्मा देखने अर्थात साक्षात्कार करने योग्य, सुनने योग्य, मनन करने काबल और निदिध्यासन कीये जाने लायक है, केवल युक्ति अथवा शब्द प्रमाण पर बस कीये जाने के योग्य नहीं॥ (वृ० ४, ५, ६).

इस आत्मज्ञान के मनन और निदिध्यासन का सुगम और सुलभ

तरीका मर्त जनों के लिये आम विचार के भजनों का नित्य सुनना और गाना है ॥ प्रथम तो भजन की मधुर ध्वनि ही पुरुष के चित्तको वाह्य वृत्तियों से हटा कर एक ओर अर्थात एकाग्र कर देती है, और द्वितीय अगर स्वर यानी राग के साथ भजन के अर्थ भी ख्रब समझ कर स्मरण होते रहें तो चित्त वृत्ति आत्मध्यान में लीन अर्थात परमानन्द मे युक्त हो जाती है ॥ विना भजन के अन्य तरीका अति सुगम या सरल आत्मध्यान में लीन करने व कराने का नज़र नहीं आता। बल्कि कहना पड़ता है कि पहले महात्माओं को प्राय इसी तरीके से शीघ्र आत्मानुभव हुआ है ॥ यही सबब है कि गीता, वेद, रामायण, ग्रन्थ साहिब, अन्य मस्त पुरुषों के उपदेश, यह सब के सब स्वरों, राग अर्थात भजनों की सूरत में कहे, और लिखे गये हैं ॥

मस्त पुरुषों के उपदेश और आत्मचिन्तन की पुस्तकों का स्वरों, गीतों, छंदों और मन्त्रों में लिखे जाने का दूसरा सबब यह भी है, कि कविता या मन्त्र में बड़ा फैला हुआ ख्याल थोड़ी जगह घेरता है, मानो मन्त्र द्वारा समुद्र एक कूजे में बंद हो जाता है। इसी सबब

से सरल इबारत की निसबत भजन अथवा कविता से वज्र वत चोट दिल पर लगती है ॥

चूंकि आत्म चिन्तन के भजनों, स्वरों भरे छंदों और रागों से चित्त की वृत्ति शीघ्र आत्म ध्यान में युक्त तथा लीन होजाती है, और भजनों का असर चित्त पर वज्र वत स्पष्ट है, इसलिये ऐसी (आत्म ज्ञान के भजनों की) पुस्तकों की जरूरत समझ कर प्रथम एक पुस्तक "राम वर्षा" के नाम से उर्दू भाषा में तरतीब दी गयी थी, जिस को श्री स्वामी राम तीर्थजी महराज की आज्ञा से राय बहादुर लाला बैज नाथ साहिब बी. ए. ऐफ. ए. यू वर्तमान पैनशनर जज ने सन् १९०२ में प्रकाशित कीया था। उस प्रति (जिल्द) मे स्वामी राम तीर्थ जी के सर्व भजन जो सन् १९०२ तक उन के आनन्द-समुद्र दिल से मस्ती भरी लैहरों में उठे थे वह सब के सब दर्ज थे॥ उन के अतिरिक्त अन्य मस्त पुरुषों के भजन भी जो स्वामी जी ने पसन्द कीये हुए थे उस जिल्द मे छपे थे ॥ मगर वह पुस्तक उर्दु भाषा में छपने के कारण हिन्दी के पाठकों को कुछ लाभ नहीं

देती थी। इस लिये उन सब भजनों का हिन्दी में उल्था कीया गया, जिस से हिन्दी के पाठक जन भी राम महाराज के मस्ती भरे उपदेशों तथा वाक्यों से लभ उठासकें ॥

इस हिन्दी राम वर्षा में परमहंस स्वामी राम तीर्थ जी के कुल भजन तथा उपदेश जो सन् १९०२ के पश्चात् भी उन के निजानन्द से प्रफुल्लित हृदय से आनन्द की धारा में शरीर छोड़ने तक बहे थे वह सब के सब सिल्सले वार दर्ज कीये गये हैं। इन से अतिरिक्त धीमीयों और भजन भी जो स्वामी जी ने उत्तम समझ कर अपने लिखित उपदेशों में अथवा अपनी निज की नोटबुक्कों में दर्ज कर रक्खे थे वह भी सब चुन कर इस प्रति में शामल कर दीये गये हैं, जिस से पाठक जन आनन्द सागर से बहती हुई नाना धारों के प्रयाग में एक ही जगह पर स्नान कर सकें, और इस में दिल खोल कर डुबकियें (गोता) लगाते हुए शान्त और प्रसन्न चित शीघ्र हों॥

इस हिंदी जिल्द के कुल भजन नव (९) अध्यायों में सिल्सलेवार बांटे गये हैं, और जिन भजनों को इन नव अध्यायों में

से किसी एक के भी अन्दर लाना वाजब नहीं समझा गया, वह सबके सब अन्तम् भाग में "राम की विविध लीला" के अध्याय (यानी मुतफ़र्रक चैपटर) में दर्ज कर दीये गये हैं। इसी लीये इस पुस्तक को दो भागों (हिस्सों) में बांट दीया गया है, और एक भाग के शुरु में भजनों की विषय सूची दी गयी है जिस से कि पाठकों को हर एक भाग के भजन पुस्तक के पढ़ने से पूर्व मालूम हो सकें ॥ दूसरे भाग के आखर कुल भजनों की वर्णानुक्रमणिका भी दर्ज कर दी गयी है जिस से हर एक भजन के ढूंडने में पाठक को आसानी (सैहल) हो जाये ॥

पाठकों को विदित हो कि स्वामी राम महाराज से कुल भजन उर्दू भाषा में बहे थे और इस हिंदी जिल्द में भजनों की ज़ुबान को नहीं बदला गया, सिर्फ़ हिन्दी टिप्पनी में उनका उल्था कीया गया है। और जो शब्द या भजन हिन्दी पाठकों की समझ से बाहर ख्याल कीये गये उन सब का सरल अर्थ हर एक भजन के नीचे नम्बरवार दर्ज कर दीया गया है ताकिः पाठक जन इस

पुस्तक से पूरा २ लाभ उठा सकें। इस के अलावा कठिन भजनों के सरल भावार्थ भी उन के तले खोल कर दे दीये गये हैं जिस से भजन का पूरा २ मतलब समझ में बैठ जावे॥ काठियावाड़ देश में जहां हिन्दी भाषा का अधिक परिचय नहीं वहां के प्रेस में पुस्तक छपने से कुछ गलतियां भी छप गयी हैं, उन का शुद्धि पत्र भी हर एक भाग के शुरु में दीया गया है ताकि भूल (गलत फैह्मी) भजन के पढ़ने में न होने पावे॥

अपनी ओर से जहां तक हो सका है इस हिन्दी प्रति (जिल्द) को साफ, सरल और लाभ दायक बनाने की कोशश की गयी है, तथापि अगर कोई त्रुटि किसी पाठक की नज़र में पड़े तो कृपा पूर्वक वह इतला दें ताकि दूसरी प्रति में वह नुक्स या त्रुटियें भी दूर की जायें॥

बहुत रामभक्तों की दरख्वास्त पर इस जिल्द में स्वामी राम तीर्थ जी का संक्षेप जीवन चरित्र भी दे दीया गया है जो दूसरे भाग के प्रस्तार में दर्ज है। यदि अवकाश मिला तो विस्तार पूर्वक

जीवन चरित एक अलग जिल्द (पुस्तक) में छापा जायगा ॥ इस संक्षेप जीवन चरित में ज्यादा तर वह हाल दीये गये हैं जो नारायण ने अपनी आंखों से खुद देखे या स्वामी जी से खुद सुने और या स्वामी जी के अपनी लेखनी से लिखे गये हैं। पंडित हरि शर्मा के रामचरित्रामृत की तरह अन्य लोगों से सुने सुनाये बहुत से झूठ गपौड़े और मुबालग़े नहीं.

अन्त में लेखक अन्त हृदय से आशीर्वाद देता है कि यह पुस्तक सर्व जनों को लाभकारी हो। सब पुरुष इस के भजनों के श्रवण मनन से निज स्वरूप के ध्यान में लीन (मैहू) हों, और इस की मदद से जन्म मरण रूप संसार (बन्धनों) से मुक्त हों। तथास्तु॥

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

आर. एम. नारायण.

विषय सूची.

३ उपदेश.

नम्बर	विषयवार भजन	पृष्ठ
२२	हरि को सिमर प्यारे ,उमर विहा रही है	४९
२३	सुन दिल प्यारे ! मन निज स्वरूप तू धारं वा।	५०
२४	कोई दम दा इहां गुजारा रे तुम किस परपाव पसारारे	५३
२५	जरा टुक सोच ऐ गाफल ! कि दम का क्या ठिकाना है	५४
२६	विश्वपति के ध्यान में जिस ने लगाई हो लगन	५५
२७	नाम जपन क्यों छोड दीया, प्यारे!	५६
२८	जितना बढ़े बढ़ा ले उलफत के सिलसले को	५७
२९	आख होय तो देख बदन के परदे में अल्लाह	५८
३०	जागो रे मंमारी प्यारे ? अब तो जागो मेरे प्यारे !	५९
३१	जो मोहन मे मन को लगाये हुए हैं	६०
३२	चेतो चेतो जल्द मुसाफर गाडी जाने वाली है	६१
३३	प्रभू प्रीतम जिस ने विसारा ! हाय जन्म अमोलक विगाड़ा	६३
३४	तू कुछ कर उपकार जगत में तू कुछ कर उपकार	६५
३५	राम सिमर राम सिमर यही तेरो काम है	६६

४ वैराग्य.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ
४	समझ बुझ दिल खोज प्यारे ! .आशक होकर सोना क्या	१०४
५	करूं क्या तुझ को मैं बाटे बहार	१०४
६	मेरे राना जी ! मैं गोविन्द गुण गाना	१०५
७	अब तो मेरा राम नाम दूसरा न कोई	१०६
८	माई ! मैं ने गोविन्द लीना मोल	१०७
९	जूं हीं आमद आमदे इश्क़ का मुझे दिल ने मुजदहा	१०७
१०	ख़बरे तहय्युरे .इश्क़ सुन न जुनूं रहा न परी रही	११३
११	.इश्क़ आया तो हम ने क्या देखा	११४
१२	कहा जो हम ने, दर से क्यों उठाते हो ?	११५
१३	तमाशाये जहान् है और भरे हैं सब तमाशाई	११६
१४	दुश्मन हैं .इश्क़ के माते दुश्मन को दोस्तां क्योंर	१२०
१५	हम कूचे दरे यार से क्या टल के जावेंगे	१२१
१६	राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा है	१२२
१७	अरे लोगो ! तुम्हें क्या है या वह जाने या मैं जानूं	१२३

६ आतम ज्ञान.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ
१८	न दुशमन है कोई अपना न साजन ही हमारे हैं	१८२
१९	बागे जहां के गुल हैं या खार हैं तो हम हैं	१८३
२०	दिल को जब गैर से सफ़ा देखा।	१८४
२१	यार को हम ने जा बजा देखा।	१८५
२२	भाग तिन्हां दे अच्छे जिन्हां नूं राम मिले	१८७
२३	मिक़राजे मौज दामने दरया कतर गयी	१८९
२४	है लैहर एक आलम बैहरे सरूर में	१९२
२५	प्रश्न—मेरा राम आराम है किस जा?	१९२
२६	उत्तर—देखो मौजूद सब जगह है राम।	१९३
२७	खिला समझ कर फूल बुलबुल चली	१९४
२८	पड़ी जो रही एक मुद्दत ज़मीं में।	१९५
२९	जां तू दिल दीयां चशमां खोलें, तू अल्लाह तू अल्लाह बोलें।	१९८
३०	की करदा नी! की करदा, तुसी पुछोखां दिलबर की करदा!	२००
३१	बिना ज्ञान जीव कोई मुक्त नहीं पावे।	२०१
३२	मक्के गया गल्ल मुकदी नाहीं जे न मनों मुकाईये	२०२

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ट

७ ज्ञानी.

८ राग (फ़कीरी)

९ निजानन्द (खुद मस्ती)

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ
२	कोई हाल मस्त कोई माल मस्त....	३०७
३	आ दे मुकाम उत्ते आ मेरे प्यारया !	३०९
४	गर हम ने दिल सनम को दीया फिर किसी को क्या	३११
५	भग्न हुवा हर जिस्म से सिर से टरी बला	३१२
६	आप में यार देख कर आईना पुर सफ़ा कि यूं	३१३
७	हस्ती ओ इल्म हूं मस्ती हूं नहीं नाम मेरा	३१५
८	क्या पेशवाई बाजा है अनाहद शब्द है आन	३१६
९	बाजीचा-ए इतफ़ाल है दुन्या मेरे आगे	३२०
१०	दुन्या की छत पर चढ़ ललकार	३२१
११	गुल को शमीम आब गौहर और नूर को मैं	३२४
१२	यह दर से मिहर आचमका अहाहाहा, अहाहाहा	३२५
१३	पीता हूं नूर हर दम जामे मसूर पे हम	३२६
१४	हवाले जिस्म लाखों मर मिटे पैदा हुए मुझमें	३२९
१५	मुझ में, मुझ में, मुझ में, मुझ में,	३३२
१६	शिव ! शिव ! ! शिव ! ! !	३३६

शुद्धिपत्र.

पृष्ट.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	१	मगळाचरण	मगलाचरण
८	१६	अर्पन	अर्पण
११	१	जलसा	जल्वा
१३	४	रो करा	रोकना
१५	१६	कन्हा	गदहा
२०	१४	स्त्री वेगरा	स्त्री वगैरह
२२	१	अफ लामो	अफलामों
२५	५	जलफे दगन	जुलफे दराज
२५	१२	६ ईश्वर	७ ईश्वर
२७	६	तेर	तेरे
२८	८	मूरते मिहर	सूरते मिहर
३१	११	वटना	वटावना
३५	६	पानी से	पानी में
३५	७	टाकाना	टिकाना
३७	२	वैहमी	वैहमी
३७	८	बही	मुर्दा

पृष्ट.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४५	११	करता हे	करता है
४७	९	धरो	भरो
४८	१६	कहे हुसैन फकी	कहे हुसैन फकीर
५४	५	लगाला	लगाता
५७	१३	मारने की लीये	मारने के लिये
६०	१०	वेद वानी	वेद वाणी
६१	८	गुरुकी बानी	गुरु की वाणी
६५	११	पुन्य	पुण्य
६६	३	स्वप्ने	स्वप्ने
६८	२	ऐता	ऐसा
७७	४	ज बफत	जरवफत
७८	६	अमीर	अमीँर
८८	५	ऐ मन ' मेरे	ऐ मन मेरे !
९०	३	मस्तर	मत्सर
९९	५	जम	जब
१०२	४	बाद्शाह	बादशाह
१०५	१६	पागली	पगली
१०९	६	जगह	निगाह

पृष्ट.	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
१०९	९	मु	से
१२६	१०	आत्मानुभव] कर लेना है तो	आत्मानुभव कर लेना है] तो
,,	१५	अड़ाडा धम	अड़ा डा धम
,,	१८	(अन्त कर्ण) गुम हो	(अन्त करण) में दफ़तर गुम हो
१२७	३	बलकि यह तमाम गलत है	दुन्या के कुल झगड़े क्या अच्छा तरह से मिट गये
१३०	१३	ए अग्निरूपी पहाड़	. ऐ अग्नि के पहाड़ रूपी दीपक (आत्मदेव)
,,	,,	वानी	वाणी
,,	८	ओर	और (इस कविता में, जहां ओर है वहां और समझें)
१३३	११-१२	ओर .जैस	और जैसे
१३६	८	मर्दे स्याम	मर्दे श्याम
१३७	७	मुस कुछ	मुझ पै कुछ

पृष्ट.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	१२	तपड़ने	तडपने
१४२	७	वहिंमुख	वहिर्मुख
१४७	११-१२	फन. सीमाब	फन. सीमाव
१५५	१३	मक्त जन	भक्त जन
१६१	३	यानी यानी	वाणी वाणी
१६३	७	नशव-ओ-ममा	नशव-ओ-नमा
१६४	१४	पकाश	प्रकाश
१७९	३	मसजूदो मलायक	मसजूदे मलायक
१८२	१०	़र	तर
१८७	७	.इसक़	.इशक
१८८	१४	माग्य	भाग्य
१९७	१४	फास	फांसी
१९९	१६	शाह रग	शाह रग
२००	७	सिर्फ सिफ है और तेर कोई	सिर्फ है और अन्य कोई
२०८	१२	पतल बैंत	पतले बैंत
२०९	१३	मुसक्हट वाला	मुसकाहट वाला
२१०	१६	४१ पानी	४१ पानी

XXX शुद्धिपत्र.

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध
२१४	८	पोझाक	पोशाक
२२०	१४	मटोल, जी।[२४]	मटोल, जी[२४]
२२१	१७	अन्य सोग	अन्य लोग
२२६	१६	जोद	चाद
,,	१२	खजोन की	खजाने की
२२८	६	सोयं	सोये
२३१	५	वोह	वाहें
२३५	१३–१४	वालो कर्म यारडी	वाले वर्म कोई
२३८	८	मारत	भारत
२४२	आखरी	विम्वित	प्रति विम्वत
२४४	१०	मो राम	म राम
,,	१२	हुसना इशक	हुसनो इशक
२४६	४	वक सीना	वरके सीना
२४९	१	ज्ञानी की ताउन्त्री	ज्ञानी की वे तडपती
२५१	आखरी	झागडा	झगडा
२५३	११	हड्डी पावों	हड्डी पाओं
२५६	४	पाया दान	पापा दान
२६५	आखरी	फा कोइ	वा कोई

पृष्ठ	पंक्ति.	अशुद्ध	शुद्ध
२७१	११	सेरे	मेरे
२७६	१५	मजवूरी	मजबूरी
२८१	१२	वर्जुर्गी	बुजुर्गी
२९४	१४	ंिवर	कियरे
३१६	८-९	१३ घर १४ मसूर	१४ घर १५ मसूर
३१७	१०	वर्म नशा	कर्मफशा
३२४	१४	दता हू	देता हू
३३२	६	उन्तज़ार	इन्तज़ार
३३५	११	माशूक़	माशूक़
३३९	६	वादी	वादी
३४३	३	ख्वाव	ख्वाव
३४४	८	घृण	घृणा
३४०	१२	ईस्यात	इकरार oा यक स्यात
३४७	७	हिप हुंर	हिप २ हुंर
३५८	७	ताकि म	ताकि मं
३७६	आखरी	खट्टा माठा	खट्टा मीठा
३७७	३	टाठ ये	ठाठ ये

पृष्ट.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३१८	३	हम	हम
३८३	१	१० जुज	११ जुज (आगे अंक १४ तक बढा कर बदल लो)
३८६	५	भंवे	भवें

मंगळा चरण.

१ दोहरा राग विभास

नारायण सब रम रह्या नहीं द्वैतकी गंध,
वही एक बहु रूप हैं पैहिला बोलूं छन्द. १
कृपा सतगुर्देव से कटी अविद्या फन्द,
मै तो शुद्ध ब्रह्म हूं द्वतीया बोलूं छन्द. २
स्व स्वरूप रामको लखूं एक सच्चिदानन्द,
वह मेरो है आत्मा तृतीया बोलूं छन्द. ३
स्वांस स्वांस अनुभव करूं रामकृष्ण गोविन्द,
सो मैं ही कोई भिन्न न चतुर्थ यह बोलूं छन्द. ४
सो स्वरूप सा मैं लख्यो निजानन्द मुकुन्द,
सो आनन्द मैं एक रस पञ्चम बोलूं छन्द. ५

१ नाना, अनेक. २ अपना असली स्वरूप. ३ अलग, जुदा. ४ वही,

२ सवैया राग धनासरी

सब शाहों का शाह मैं मेरा शाह न कोय
सब देवों का देव मैं मेरा देव न होय
चाबक सब पर है मिरो क्या सुलेतान अमीर
पत्ता मुझ बिन न हिले आँन्धी मेरी अँसीर

(१) मेरा (२) राजा, महाराजा (३) झक्कर हवा (४) क़ैद

---

३ लावनी सवैया।

शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर अमर अज अवनाशी
जास ज्ञान से मोक्ष हो जावे कट जावे यम की फांसी
अनादि ब्रह्म अद्वैत द्वैत का जा में नामो नशां नहीं
अखंड सदा सुख जा का कोई आदि मध्य अवसां नहीं
निर्गुण निर्विकल्प निर् उपमा जा की कोई शान नहीं
निर्विकार निरवैर माया का जा में रञ्चक भान नहीं
यही ब्रह्म हूं मनन निरंतर करें मोक्ष हित संन्यासी
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर अमर अज अवनाशी ॥ १

सर्व देशी हू, ब्रह्म हमारा एक जगह अस्थान नहीं
रमा हू सब में मुझ से कोई भिन्न वस्तू इन्सान नहीं
देख बिचारो स्वाये ब्रह्म के हूवा कभी कुच्छ आन नहीं
कभी न छूटे पींड दुख से जिसे ब्रह्म का ज्ञान नहीं
ब्रह्म ज्ञान हो जिसे उसे नही पडे भोगनी चौरासी
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर अमर अज अवनाशी॥ २
अद्रष्ट अगोचर सदा द्रष्ट में जा का कोई आकार नहीं
नेति नेति कह निगम ऋपीश्वर पाते जिसका पार नहीं
अलख ब्रह्म लियो जान जगत् नही कार नही कोई यार नही
आख खोल दिलकी टुक प्यारे कौन तर्फ गुलज़ार नहीं
सत रूप आनन्द राशी हूं कहे जिसे घट घट वासी
शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रह्म हूं अजर अमर अज अवनाशी॥ ३

(नोट) यह खुद भाषा में है इसवास्ते शब्दार्थ नहीं लिखे गये.

---

४ सवैया राग धनासरी

वाकी अदायें देखो। चन्द्र का सा मुखड़ा पेखो (टेक)
बादल में रहने जल में वायु में तेरी लटकें
तारों में नाजनी मे मोरों में तेरी मटकें ॥ वाकी० १
चलना ठुमक ठुमक कर बालक का रूप धर कर
घोंघट उपर उलट कर हसना यह बिजली बन कर॥ वा० २
शशनम गुल और सूरज चाकर हैं तेरे पट के
यह आन बान सज धज ऐ राम ! तेरे सदके

राम महिमा अथवा गुरु स्तुति

१ तर्ज़ बलोचां ज़ाग्मां, पद राग एमन कल्याण

लखूं क्या आप को ऐ अब प्यारे
अवनाशी कव वाचके शब्द तुम्हारे
जहां गति रूप की न नाम की है
वहां गति आ हमारे राम की है
वहीं इक रूप से पी प्रेम शरवत
नदी जंगल में जा देखे हैं परवत
यही इक रूप से नगरों में फिरता
किसी के खोज में डगरों में फिरता
अजब माया है तेरी शाहे दुन्या !
कि जिस मे है मेरी तेरी यह दुन्या
न तुझको पा सका कोई जहां में

१ बोला जाने वाला शब्द २ पहुंच ३ भूमंडल के बादशाः

न देखा जिस ने तुझको हर मकाँ में
तुझे समझा कीये सौ कोस अब तक
नहीं समझा मगर अफसोस अब तक
तू ही है राम और तू ही है यादूँ
तू ही स्वामी तू ही है आप माधव

४ देश ५ कृष्ण (माधो)

---

२ साखी

बैठत राम ही ऊठत राम ही बोलत राम ही राम रह्यो है
खावत राम ही पीवत राम ही धाम ही राम ही राम घयो है
जागत राम ही सोवत राम ही जोवत राम ही राम लह्यो है
देत हू राम ही लेत हू राम ही सुंदर राम ही राम रह्यो है

---

३ राग पीलू ताल दीपचंदी.

तेरी मेरे स्वामी यह बांकी अदा है
कहीं दास है तूं कहीं खुदे खुदा है

१ नखरा २ आप ईश्वर

कहीं कृष्ण है तूं कहीं राम है तूं
कहीं संगी है तूं कहीं तूं जुदा है
पलाया है जब से मुझे जाम तूं ने
मेरी आंख में क्या नया गुलें खिला है
तेरे इशक़ के बैहर मे मस्त हूं मैं
वक़ा में फनाँ है फना में बका है
तेरी ज़ात तजि़र्यः है तशंबीह से फारग़
मगर रंग तशबीह का तुझ पर चढा है
नज़ारा तेरा राम हर जां पे देखुं
हर इक नग़मों ऐ जां! तेरी सदाँ है

३ प्रेम का पियाला ४ फूल खिड़ा है ५ समुद्र ६ अस्ति, मौजूदगी ७ नेस्ती ८ शुद्ध, पाक, बेदाग पूजनीय ९ मसाल १० जगह, देश ११ आवाज़, सुर १२ प्यारे! १३ आवाज़

---

४ राग केदार राग रूपक ऐ राम!

रफीक़ों में गर है मुरव्वत तो तुझ से

१ मित्र लोग २ मद ।

राम महिमा अथवा गुरु स्तुति.

अज़ीज़ों में गर है महब्बत तो तुझ से
खज़ानों में जो कुच्छ है दौलत तो तुझ से
अमीरों में है जाह-औ-सौलत तो तुझ से
हकीमों में है इल्मों हिकमत तो तुझ से
या रौनक जहां या है बर्कत तो तुझ से
है रोकर यह तक़रारे उल्फ़त तो तुझ से
कि इतनी यह हो मेरी किसमत तो तुझ से
मेरे जिस्मों जां मे हो वर्कत तो तुझ से
उड़े मा-औ-मनी की यह शिर्कत तो तुझ से
मिले मदर्कः होने की इज़्ज़त तो तुझ से
सदा एक होने की लज्ज़त तो तुझ से
उड़ें टेढ़ी बांकी यह चालाकयां सव
सिपर फेंक ढूंढें सलामत तो तुझ से

२ मरनव और रोब अर्थात् डर ४ प्रेम के वार वार इक़रार करने और फेर देने ५ शरीर और प्राण ६ अहंकार ७ अलहदगी जुदाई ८ अर्पन करना ९ तिस पर १० बचाओ

———

५ राग कल्याण

क्या क्या रक्खे है राम सामान तेरी कुदरत
बदले है रग क्या क्या हर आन तेरी कुदरत
सब मस्त हो रहे है पैहचान तेरी कुदरत
तीतर पुकारते है सुबहान तेरी कुदरत
कोयैल की कूक में भी तेरा ही नाम हैगा
और मोर की जटलें मे तेरा ही प्याम हैगा
यह रग सोलईडे का जो सुबहो शाम हैगा
यह और का नही है तेरा ही काम हैगा
बादल हवा के ऊपर घघोर नाचते है
मेंडक उछल रहे है और मोर नाचते है
बोलें बीयें बटेरे कुमरी पुकारे कू कू
पी पी करें पपीहा बगले पुकारे तू तू
क्या फाख्तों की हक हकं क्या हुद हुदो की हू हू
सब रट रहेहै तुझ को क्या परंं क्या पखेरू

१ समय २ मुबारक, पाक ३ पक्षीका नाम ४ चाल ५ पैगाम, खबर, चिट्ठी ६ शफक़ ७ प्रात काल साय काल ८ पक्षीका नाम ९ जानवरोंका नाम १० पक्षी बड़े छोटे

६ बरवा ताल तीन

कहीं कैवाँ सतारह हो के अपना नूर चमकाया
जुहल में जा कहीं चमका कहीं मंरीख में आया
कहीं सूरज हो क्या क्या तेज़ जलवाँ आप दिखलाया
कहीं हो चान्द चमका औंर कहीं खुद वन गया साया
तुं ही बातेन में पिनेहां है तू ज़ाहर हर मकान पर है
तुंमुनियो के मनों में है तुं रिंदों की ज़बान पर है (टेक) ॥१
तेरा ही हुक्म है इन्दर जो बरसाता है यह पानी
हवा अठखेलियां करती है तेरे ज़ेरे निग्रानी
तजॅल्ली आतशे सोज़ां में तेरी ही है नूरांनी
पड़ा फिरता है मारा मारा डर से मर्ग हेवांनी ॥ तूं ही० २
तूं ही आंखों में नूरे मर्दमक हो आप चमका है
तूं ही हो अक़्ल का जौहर सिरों में सब के दमका है

१. सतारा का नाम (ज़ोहल का स्तारा)=शनिश्चर तारा
२. मंगल तारा ३ प्रकाश ४ अन्दर ५ छुपा हुवा ६ निग्रानी के नीचे, इन्तज़ाम, इन्तज़ाम के तेहत ७ रौशनी ८ जलती हुई अग्नि ९ चमक १० ईंदशी मृत्यु देवता ११ आंख की पुतली की रौशनी

तेरे ही नूर का जलसा है कतरः में जो नेमं का है
तूं रौनक़ हर चमनेंकी है तू दिलबर जामे जमेंका है ॥ तूंही० ३
कहीं तॉऊस जेरीं बाल बनकर रकॅस करता है
दिखाकर नाच अपना मोरनी पर आप मरता है
कहीं हो फॉखतः कू कू की सी आवाज़ करता है
कहीं बुलबुल है खुद है बागवां फिर उससे डरता है ॥ तूं० ४
कहीं शौहीन बना शेहपर कहीं शेकरः है मस्ताना
शिकारी आप बनता है कहीं है आंब और दाना
लटक से चाल चलता है कहीं माशूक़ जॉनाना
सनमें तूं ब्रह्मण नॉकूस तू खुद तू है बुतखॉना ॥ तूंही० ५
तू ही यॉकूत मे रौशन तुही पिखराज और दुर्रमें
तू ही लॉल-ओ-बदखशां में तू ही है खुद समुद्र में

१२ तरी १३ बाग ३ जमशेद का पियाल (शराबवाला)
१५ मोर १६ सुनैहरी बालो वाला १७ नाच १८ घुग्गी (घुगगतो) (१९, २०, २१) पक्षीयों के नाम २२ पानी और दाना २३ दोस्त स्त्री की तरह २४ मित्र प्यारा २५ शंख २६ मंदर (२७, २८, २९) मोती और लाल

तू ही कोहै और दर्या में तू ही दीवार में दरें में
तू ही सेहरा में आबादी में तेरा नूर नय्यरें में ॥ तुंही० ६
३० पर्वत ३१ घर, दरवाजा ३२ जंगल ३३ सूरज.

---

७ राग खमाज ताल ठुमरी.

तूंहीं हैं मैं नाहीं वे सजनां ! तूंहीं हैं मैं नाहीं (टेक)
जां सोवां तां तूं नाले सोवें जां चल्लां तां तूं राहीं ॥ तूं० १
जां बोलां तां तूं नाले बोलें चुप करां मन माँहीं ॥तू० २
सहक सहक के मिलया दिलबर जिंदड़ी घोलं गंवाई ॥तूं० ४
१ मेरे प्यारे २ जब ३ तब ४ साथ ५ जब चलूँ ६ तब तूं साथ रास्ते में होता है ७ चूप होवुं तो तू मन के अन्दर होता है ८ तड़प तड़प के ९ जान १० उसी के पाने में था न्यूरण में गो दी

---

८ राग आसावरी ताल तीन.

पास खड़ा नज़रों में न आवे ऐसा राम हमारा रे (टेक)
है घट में घट की सब जाने रहित सलक से न्यारा रे॥पास० १
१ दिल के अन्दर.

कोई ध्यावे पीर पैगम्बर, कोई ठाकुरद्वारा रे॥पास० २
जप तप संजम और वरत सब कर कर सबे हारा रे॥ पास ३
गुरु गम से कोइ लक्ष्य न पावे कहत कबीर विचारा रे॥पास ४

२ तप आदी इन्द्री और दिल को रोकना ३ गुरु के समझाने के बगैर ढूंडना। अर्थात बगैर गुरु के उसको पाने की कोशिश करना ४ निशाना, पता

उपदेश.

१ झिंझोटा ताल दादरा.

ग़फ़लत में जाग देख क्या लुत्फ़ की बात है (टेक)
नज़दीक यार है मगर नज़र न आत है
दूई की गर्द से चश्मे की रौशनी गई
मह्बूब के दीदार की ताक़त नहीं रही
इसी बात से दुन्यां के तूं फंदे में फांसे है ॥ गफ़० १
बिसियार तलब है अगर तुझे दीदार की
मुर्शिद के सखुन से चलो गली विचार की
जिस से पलक में सब फंद टूट जात हैं ॥ गफ़० २
जिस के ज़ुहूर से तेरा रौशन वजूद है
खल्क़ की सब्ही ख़ूबियोंका भी जो खूब है

१ भूल २ आंख, नेत्र ३ प्यारा, माशूक़ ४ देखना, दर्शन, ५ फंसा हुवा ६ अधिक, बहुत ७ जिज्ञासा, ढूंढ, चाह ८ गुरु आत्मविद ९ उपदेश, नसीहत १० दरबार, हाज़री अर्थात मौजूदगी ११ शरीर

सोई है तेरा यार यह सब वेद गात हैं ॥ गफ० ३
कहते हैं ब्रह्मानद नहीं तेरे से जुदा
बुही है तू क़ुरान में लिखा है जो खुदा
जिगर में लेकें समझना मुशकल की बात है ॥ गफ०४
१२ लेकिन, किन्तु

---

७ झिंजोटा ताल दादरा

गाफल तूं जाग देख क्या तेरा स्वरूप है
किस वास्ते पडा जन्म मरण के कूपे है (टेक)
यह देह गृह नाशवान हैं नहीं तेरा ।
दयाभिमान जात में फिरे कहा घेरा
तूं तो सदा विनाश से परे अनूप है ॥ गाफल तूं०१
भेद दृष्टि कीन जब्ही दीन हो गया,
स्वभाव अपने से ही आप हीन हो गया,
बिचार देख एक तूं भूपों का भूप है ॥ गाफल० २
कूआ, कढहा २ समुद्र, आनन्द धारा ३ मालक बादशाह, रक्षक

तेरे प्रकाश से शरीर चित्त चेततो,
तूं देह तीन दृश्य को सदा है देखता,
द्रष्टा नहीं होता है कभी दृश्यरूप है ॥ गाफल० ३
कहते हैं ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद पाइये,
इस बात को विचार सदा दिल में लाइये,
तूं देख जुदा करके जैसे छाया धूप है ॥ गाफल० ४

४ हरकत करता, चिंतन करता

---

३ झंझोटी ताल दादरा

अजी मान मान मान कहा मान ले मेरा -
जान जान जान रूप जान ले तेरा (टेक)
जाने बिना स्वरूप गम न जावे है कभी,
कहते हैं वेद बार बार बात यह सभी,
हुशियार हो आज़ाद वोर डार मैं मेरा ॥ मान मान०
जाता है देखने जिसे काशी दुवारका,

१ बोझा

मुकाम है वदन[१] में तेरे उसी यारका,
लैकिन विना विचार किसी ने नहीं हेरा ॥ मान० २

नैननँ के नैन जो है सो वैनैन के वैन है,
जिस के विना शरीर में न पलक चैन है,
पिछान ले वखूँवे सो स्वरूप है तेरा ॥ मान० ३

ए प्यारी जान ! जान तूं भूपों की भूप है,
नाचत है प्रकृति सदा मुजरा अनूप है,
संभाल अपने को, वह तुझे करे न घेरा ॥ मान० ४

कहते हैं ब्रह्मानंद ब्रह्मानंद तूं सही,
वात यह पुराण वेद ग्रन्थ में कही,
विचार देख मिटे जन्म मरण का फेरैं ॥ मान० ५

२ पाया, ३ चक्षु आंखे ४ ज्ञान चक्षू अथवा अंत्रीय आंख बुद्धि इत्यादि ५ अच्छी तरह से ६ आवागमन

४ गज़ल ताल दादरा.

जाग जाग जाग मोह नींद से ज़रा
भाग भाग भाग भोग जाल से नरा ! ॥ टेक
विषयों के जाल में फंसा छूटे नहीं कभी
जन्म जन्म में विषय संग होत हैं सभी
विना वैराग न कोई भवसिंधु को तरा ॥ १ ॥ टेक
वर्ष गया मास गया दिन गयी घड़ी
दुन्या के कारवार में खबर नहीं पड़ी
नज़दीक काल आगया मन में नहीं डरा ॥ २॥ टेक
संगत मे देह की स्वरूप को अपने विसारिया
जगत को सत्यमान के मन को पसारिया
दिन रात करे शोच राग द्वेष से भरा ॥ ३ ॥ टेक
अपने स्वरूप को विचार देख ले सही
ईश्वर है तेरे पास वह तुझ से जुदा नहीं
पम याद रख यहि वेद का वचन खरा ॥ ४ ॥ टेक

१ संसार रूपी समुद्र

५ लावणी

नाम राम का दिल से प्यारे, कभी भुलाना ना चाहिये
पा कर नर का बदन रतन को, खाक मिलाना ना चाहिये ॥ टेक
सुंदर नारी देख पियारी, मन को लुभाना ना चाहिये
जलति अगन में जान, पतंग, समान समाना ना चाहिये
बिन जाने परिणाम काम को, हाथ लगाना न चाहिये
कोई दिन का खियाल कपट, का जाल बिछाना न चाहिये ॥ ना
यह माया बिजली का चमका, मन को जमाना ना चाहिये
बिछडेगा संयोग भोग का, रोग लगाना ना चाहिये
लगे हमेशा रंग संग, दुर्जन के जाना ना चाहिये,
नदी नाव की रीत किसीसे, प्रीत लगाना न चाहिये ॥ ना २
बाधंव जन के हेत पाप का, खेत जमाना न चाहिये,
अपने पाँव पर अपने करें से, चोट लगाना न चाहिये,
अपना करना भरना दोष, किसी पर लाना न चाहिये,
अपनी आस है मद चंद को, दो बतलाना न चाहिये॥ ना ३

१ नतीजा २ सम्बन्धी ३ कारण (सबब) ४ हाथ

करना जो शुभ काज आज, कर देर लगाना न चाहिये,
कल जाने क्या हाल काल को, दूर पिछाना न चाहिये,
दुर्लभ तन को पाय कर, विषयों में गंवाना न चाहिये,
भवसागर में नाव पाय, चक्कर में डुबाना न चाहिये॥ ना ४
दारादिक सब घेर फेर, तिन में अटकाना न चाहिये॥
करी वँमन के ऊपर फिर कर, दिल ललचाना न चाहिये,
जान आपनो रूप कूपँ, गृह में लटकाना न चाहिये,
पूरे गुरु को खोज मजहब का, बोझ उठाना न चाहिये, ॥ ना ५
बचा चाहे पापन से मन से, मोत भुलाना न चाहिये,
जो है सुख की लाग तो कर मन त्याग, फसाना न चाहिये,
जो चाहे तु ज्ञान विषय के, बाण चलाना न चाहिये,
जो है मोक्ष की आश संग की पांश बढ़ाना न चाहिये, ना. ॥ ६
परमेश्वर है तन में वन में, खोजन जाना न चाहिये,

५ स्त्री वैगरा ६ कै की हुई या उलटी ७ घर रूपी कूवा मेल मिलाप ८ उमेद, आशा ९ फामी फाही

कस्तूरी है पास मिरग को, घास सुंघाना न चाहिये,
कर सतसंग विचार निहार, कभी विसराना न चाहिये,
आत्म सुख को भोग भोग में, फिर भटकाना न चाहिये ॥ना७.

१० ठेखना पेखना ११ भूलना

---

६ गजल भैरवी

शाहंशाहे जहान् है सायल हूवा है तू
पैदा कुंने ज़मान् है डायल हूवा है तू
सौ बार गर्ज होवे तो धो धो पीये कदम
क्यों चर्खो मिहरो माह पै मायल हूवा है तू
खंजर की क्या मजाल कि इक जखम कर सके
तेरा ही है ख्याल कि घायल हुवा है तू
क्या हर गदाओ शाह का राजक है कोइ और

१ जहान का बादशाह २ मगता फकीर ३ जमाने का पैदा करने वाला ४ घडी का पंडूलम ५ आकाश, सूरज और चाद ६ आशक मोहित ७ ताकत ८ फकीर और बादशाह ९ रिजक देने वाला

अर्फ लासो तंग दस्ती का क़ायल हुवा है तू
दायम है तेरे मुजरे के मौका की ताक में
क्यों डर से उस के मुफ़त में जायल हुवा है तू
हमबग़ल तुझ से रहता है हर आन राम तो
बन पर्दा अपनी वस्ल में हायल हुवा है तू

१० ग़रीबी मुफ़लसी ११ मानने वाला १२ (अंग्रेजीमन्द है) अर्ध काल, समय [अर्थात् काल इस ताड़ में लगा रहता कि मौका उसर पाये तो आप के आगे मुजरा (नाच) करे १३ तुच्छ (घटना) १४ साथ अपने १५ हर समय १६ मुलाक़ात १७ दो वस्तुओं के बीच में आने वाला पर्दा.

---

७ राग पीलो ताल तेवरा

शशि सूर्य पावक को करे प्रकाश सो निजधाम वे
इस चाम से त्यज नेह तूं उस धाम कर विश्राम वे
इक दमक तेरी पायके सब चमकदा संसार वे

१ चन्द्रमा २ सूरज ३ अग्नि ४ अपना असली घर ५ चमड़े ६ प्यार, मोह ७ घर ८ आराम

टुक चीन ब्रह्मानन्द को जगनीर से होय पार वे
मंसूर ने सूली सही पर बोलता वोही बैनें वे
बन्दाः न पायो खलक में जब देखयो निजे नैन वे
आशक लखावें सैनें जो लख सैन को कर चैन वे
तू आप मालक खुद खुदा क्यों भटकदा दिन रैनें वे
भंपे ज्ञानी मुन प्राणी नीरें न धर धीर वे
आपा भुलायो जग बनायो सब अपनी तकसीर वे

९ ले, अनुभव कर १० जगत के समुद्र से पार हो ११ एक मस्त ब्रह्मज्ञानी का नाम है १२ कल्मा, मन्त्र, रमज १३ जीव १४ सृष्टि, खलकत १५ अपनी आंखे १६ इशारा, रमज़ १७ समझ, याद कर १८ रात्री १९ कहे २० जल २१ अपना स्वरूप २२ कसूर.

---

८ मिश्र भैरवी

मरे न टरे न जरे हरे तम।
परमानन्द सो पायो ॥
मंगल मोद भरयो घट भीतर।

१ मुरझाना कुमलाना, २ अन्धकार.

गुरु श्रुति ब्रह्म त्वमेव बतायो ॥
टूटी ग्रैन्थी अविद्या नाशी ।
ठाकर सत राम अवनाशी ॥
लै मुझ में सब गयो रे बाक़ी ।
वासुदेव सोहम कर झाकी ॥
अर्निश् का सूरज में नाश ।
अहं प्रकाश प्रकाश प्रकाश ॥
सूरज को ठंडक लगे जलको लगे प्यास ?
आनन्द घन मम राम से क्या आशा को आस

३ मुझ को ही [अर्थात तूही ब्रह्म है] ऐसा ४ हृदय की गाठ या शरीरकी गाठ ५ मुझ मे सब लै होजाने पर मैंही वासुदेव हूं ऐसा पाया ६ दिन रात ७ उमद को उमद ८ जैसे सूरज को कभी ठंडक और जलको कदाचित प्यास नहीं लगती एसे मुझ आनन्द घन रामको कभी आशा नही होती या आशा का मुझ में कदाचित निवास नहीं

---

९ राग गारा ताल दादरा

हर लैहज़ा अपनी चश्म के नक़शो नैगार देख,
ऐ गुल ! तूं अपने हुसन की आपही वहार देख॥ (टेक)
ले आयीना को हाथ में और वार वार देख ।
सूरत में अपनी क़ुद्रते पैरवर्दगार देख ॥
खाले स्याह अरु खत्ते मुशकअंबार देख ।
ज़ुलफे दराज़ो तुर्रहे अंबर फशार देख ॥ हर लैहज़ा० १
आयीना क्या है ? जान ! तेरा पाक साफ दिल
और खाल क्या है तेरे स्वैदां रुख के तिल
जलफे दराज़ फेहम रसा से रही है मिल
लाखों तरह के रंज ही में हम रहे हैं खिले॥हर लैहजा २

हर पल २ चक्षू ३ वज़ा वता, सुन्दर चित्र ४ पुष्प, ऐ खूब सूरत प्यारे (जिज्ञासू) ५ सुंदरता ६ शीशा ५ ईश्वर की ताक़त (लीला) ८ स्याह तिल (दाग़) ९ कस्तूरी से खुशबूदार खत (वज़ा, लकीर) १० लम्बी ज़ुलफ [बालोंकी] ११ मस्तक पर वालों का लटकता हुवा गुच्छा जिस पर अम्बर की खुशबू छिडकी हुई हो १२ एक नुक़ता स्याह जो दिल पर होता है मगर यहां काले से मुराद है १३ तेज बुद्धि १४ खेल रहे हैं

मुशके ततॉर मुशके खुतन भी तुझी में है
याक़ूते सुर्ख ओ लालेयमन भी तुझी में हे
निसरीं ओ सोसिया ओ समन भी तुझी मे है
अठकिस्मा क्या कहूं चमन भी तुझी में हे ॥हर लेहजा० २
सूरज मुखी ने गुल की गर दिल में तान है
तू अपने मुख को देख कि खुद आफतॉब है
गुल ओर गुलाब का भी तुझी में इमान है
रुखसार तेरा गुल व पसीना गुलाब है ॥हर लेहजा०
नर्गिस के फूल पर तू न अपना गुमान कर
और सुरूं से भी दिल न लगा अपना जान कर
अपने सिवाय किसी पे न हरगज तू ध्यानकर
यह सब समा रहे ह तुझी में तो आन कर ॥हर लेहाज़०

१५ तातार और खुतन देश के मृग का मुशक नाफा १६ लाल रंग का कीमती हीरा १७ सफर्ती (सफ़ार्ती) का फूल १८ पुष्प का नाम १९ आठ प्रकार भाउत्कार २० बाग २१ गर्मी शौक २२ सूरज २३ गाल, कपाल २४ एक पुष्पका नाम

नरगस वह क्या है ? जान ! तेरी चश्मे खुश निगाह[२५]
और सर्व[२६] क्या है यह तेरा कद्दे दराज़[२७] आह
गर सैर बाग़ चाहे तो अपनी ही कर तू चाह
हक़[२८] ने तुझी को बाग़ बनाया है वाह वाह ॥हर लैहज़ा ६

गर दिल में तेरे कुमरी[२९] ओ बुलबुल का ध्यान है
तो होंठ[३०] तेरे कुमरी है बुलबुल जुबान है
है तूही बाग़ और तूही बागबान है
बागो चमन हैं जितने तू उन सब की जान है॥हर लैहज़ा ७

बाग़ो चमन के गुंचाः[३१] ओ गुल मे न हो असीर[३२]
कुमरी की सुन सफ़ीर[३३] न बुलबुल की सुन सफीर
अपने तईं तू देख कि क्या है ? अरे नज़ीर[३४]
है हरफ मनअरफ[३५] के मानी[३६] यही नज़ीर ! ॥हर लैहज़ा ८

२५ आनन्द भरी दृष्टि २६ एक वृक्षका नाम है २७ लम्बा कद २८ ईश्वर २९ एक पक्षी का नाम है ३० लब ३१ कली और पुष्प ३२ क़ैद ३३ बुलबुल की आवाज ३४ कवी का नाम ३५ अपने आप को पैहचान ३६ मतलब.

१० राग कल्याण ताल दादरा

१ गंजे निहां के कुफ़्ल पर सिर ही तो मोहरे शाह है
तोड़ के कु़फ़्ल-ओ-मोहर को कन्ज़ को खुद न पाये क्यों ॥ टेक

२ दीदः-ए-दिल हुवा जो वां खुल गया हुसने दिलरुबा
यार खड़ा हो साम्हने आरस न फिर लड़ाये क्यों ॥ गंजे० १

३ आप ही डाल साया को उस को पकड़ने जाये क्यों
साया जो दौड़ता चले कीजिये वाये वाये क्यों ॥ गंजे० २

४ जब वह जुंमालेदिलफरोज़ सूरते मिहरे नीमरोज़
आप ही हो नज़ारः सोज़ पर्दे में मुंह छुपाये क्यों ॥ गं० ३

५ दशनैः-ए-ग़मज़ जाँस्ताँ नावके नाज़े वे पनाह
तेरा ही अक्से रुख सही साम्हने तेरे आये क्यों ॥ गं० ४

१ खजाना २ छुपा हुवा, ३ ताला जन्द्रा ४ बादशाह की मोहर ५ रतन खजाना ६ दिल की आग ७ खुली ८ माशूक प्यार की सुंदरता ९ हाय हाय का शोर १० दिल के रौशन करने वाला ११ दुपैहर के सूरज की सूरत १२ दृश्य को चमकावे (तपावे) १३ आग के इशारे की कटारी १४ जान को सताने वाला १५ नखरे का तीर १६ मुंह का प्रतिबिम्ब

६ अँहल्[16] ओ अयाल[17] ओ माल[18] ओ ज़र[19] सब का है बार[20] रामपर
अस्प[21] पै साथ बोझ दर सिर पै उसे उठाये क्यों ॥ गं०५

१७ टब्बर कबीला १८ दौलत १९ रुपय २० बोझ २१ घोड़ा

पंक्तिवार अर्थ

१ छुपाहुवा खज़ाना [जो आदमी के अन्दर है] उसके उपर बादशाह [आत्मदेव] की मोहर हर एक का सिर है, ऐ प्यारे इस ताले और मोहर को तोड़कर खज़ाना क्यों नहीं पाता ? ॥

२ दिल की चक्षु जब खुली तो [आत्मदेव] यार का हुसन [सौन्दर्यता] अन्दर खुब गया। ऐ प्यारे जब यार रूबू साह्मने खड़ा हो तो फिर उस से आंख क्यों नहीं लड़ाता ?

३ अपना साया [परछावां] अपने पीछे आप ही डालकर उसको पकड़ने क्यों जाता है, और जब [तेरे भागने से] साया दौड़ता जाता है तो तू फिर बाये बाये [हाये हाये] क्यों करता है ? ॥

४ जब यह दिल के प्रकाश करने वाला, दुपैहर के सूर्य की तरह आप ही दृश्य पदार्थों को चमकाता है [तपाता है] तो तू क्यों पर्दे में मुंह छुपाता है ? ॥

५ ऐ जान लेने वाले [आत्मस्वरूप] ! तेरी आंख के इशारे की कटारी और नखरे का तीर ख्वाह तेरे ही रूप का साया है मगर तेरे साम्हने क्यों आता है [अर्थात मोहने वाली तेरी माया तेरा साया हो कर तेरे आगे आ कर तुझ को क्यों टक देती है ?

६ घर बार [टब्बर कबीला] और माल धन सब का बोझ तो राम [ईश्वर] पर है तो तू उस भोले जाट* की तरह घोडे के साथ होकर बोझ को सिर पर मुफ्त में क्यों उठाता है ?

* एक भोला आदमी गाऊं को अपना घोडा और असबाब लेकर जा रहा था, असबाब घोडे की पीठ पर था और आप असबाब के ऊपर घोडे पर सवार था । रास्ते में जो घोडे का मोह दिल में जोश मारने लगा तो ख्याल करने लग पडा कि बोझ घोडे की पीठ को कहीं खराब न करदे ॥ फिर असबाब को घोडे की पीठपर से उतार कर अपने सिर पर रख लीया और घोडे पर सवार हो गया । घोडे पर तो बोझ वैसाही रहा मगर उस जाट ने अपनी गर्दन मुफत में तोडली ॥ [ऐसा ही वह पुरुष अपनी गर्दन मुफ्त में तोड लेता है जो ईश्वर पर भरोसा न करके सिर्फ यह ख्याल करता रहता है कि बच्चों आदि को मैं पालता हूं] इसवास्ते ऐ प्यारे ! सब ईश्वर पर छोड मुफ्त में अपनी गर्दन क्यो तोडता है । क्योंकि ऐसा ख्यालकरे या न करे ईश्वर पर तो बोझ हर सूरत में वैसा ही रहता है ।

११ राग भैरवी ताल ठुमरी. १

दिलबर पास बसदा ढूंडन किथे जावना ॥ टेक.
गली ते बाज़ार ढूण्डो शहर ते दयार ढूंडो ।
घर घर हज़ार ढूंडो-पता नहीं पावना ॥ दिलबर पास० १
मक्के ते मदीने जाईये, मथे चा मसीत घसाईये ।
उची कूक बांग सुनाईये मिल नहीं जावना ॥ दिलबर० २
गंगा भावें जमुना न्हावो, कांशी ते प्राग जावो ।
बद्री केदार जावो मुड़ घर आवना ॥ दिलबर पास० ३
देस ते दसौर ढूंडो दिल्ली ते पशौर ढूंडो ।
भावें ठौर ठौर ढूंडो किसे न बतावना ॥ दिलबर पास० ४
बनो जोगी ते वैरागी संन्यासी जगत त्यागी ।
प्यारे से न प्रीत लागी भेस की बटना ॥ दिलबर पास० ५
भावें गल माला डाल चंदन लगावो भाल ।
प्रीत नहीं साईं नाल जगत नूं दखावना ॥ दिलबर पास० ६
मोमनांदी शकल बनावें काफरां दे कम्म कमावें ।
मैंथे ते मेहराब लगावें मौल्वी कहावना ॥ दिलबर पास० ७

१ किस जगह २ और ३ मुल्क ४ स्नाह ५ वापस ६ सन्तों की ७ पेशानीपर ८ दहलीज की राख या मन्दर के चरणों की राख, भस्म,

१२ राग गारा ताल दादरा

तनहा न उसे अपने दिले तंग में पैहचान ।
हर बाग़ में हर दश्त में हर संग में पैहचान ॥
बे रंग में बॉरंग में नैरंग में पैहचान ।
मंज़ल में मुक़ामात में फ़रसंग में पैहचान ॥
नित रूम में और हिंद में और ज़ंग मे पैहचान।
हर राह में हर साथ में हर संग में पैहचान ॥
हर अज़्म इरादाः में हर आहंग में पैहचान ।
हर धूम में हर सुलह में हर जंग में पैहचान ॥
हर आन में हर बात में हर ढंग में पैहचान ।
आशक़ है तो दिलबर को हर इक रंग मे पैहचान॥ १
हसता है कोई रोंद किसी का बुरा है हाल।

१ सिर्फ़, अकेला २ तंग दिलमें ३ जंगल ४ पथ्थर ५ रंगदार ६ क़िस्म क़िस्म के रंगमें, तरह २ के रंगवाले ७ पत्थर मे मुराद पत्थर के मकानों से ८ हबशी ९ इरादा या मक़सद १०आवाज़ सुर ११ सुल

रोता है कोई हो के ग़मो दर्द में पामाल
नाचे है कोई शोख़ वजाता है कोई ताल
पैहने है कोई चीथड़े ओढ़े है कोई शाल
करता है कोई नाज़ें दखाता है कोई माल
जव ग़ौर से देखा तो उसी की है यह सव चाल
हर वात में हर आन में हर ढंग में पैहचान
आशक़ है तो दिलवर को हर इक रंग में पैहचान॥ २

११ कुचला हुवा, अर्थात तकलीफ़ से दवा हुवा १२ नख़रा
१ तरीक़ा, समय, चाल

---

१३ राग माढ ताल दीपचन्दी तरज लैली मजनूं

साधो दूर दुई जब होवे
हमरी कौन कोई पंत खोवे ॥ टेक
ऐसा कौन नशा तुम पीया
अबलौं आप सही नाहीं कीया ॥ १ ॥ साधो०

१ द्वैत २ इज़्ज़त ३ अभी तक ४ दुरस्त, ठीक पिछाना

सिन्ध विषे रश्वक सम देखें
औंज नहीं पर्वत सम पेखें ॥ २ ॥ साधो०
चमके नूर तेज सब तेरा
तेरे नैनन काँहे अन्धेरा ॥ ३ ॥ साधो०
तूं ही राम भूप पति राजा
तूं ही सर्व लोक को साजा ॥ ४ ॥ साधो०

५ समुद्र में छोटे से मोती को तो ढूंड रहा है और अपने अन्दर पहाड़ जितने अपने स्वरूप को नहिं अनुभव करता ६ आंखको ७ क्यों.

---

१४ राग भैरवी ताल तीन

अये नाम भी अपना न कुच्छ बाक़ी नशां रखना।
न तन रखना न दिल रखना न जी रखना न जां रखना ॥
तअल्लुक़ तोड़ देना छोड़ देना उस की पाँबंदी ।
खबर दार अपनी गर्दन पर न यह बारे गिरां रखना॥
मिलेगी क्या मदद तुझ को मददगाराने दुंन्या से।

१ नाम मात्र भी २ सम्बन्ध ३ रस्सी, कैद मजबूरी ४ भारी बोझ ५ दुन्या की मददचाहने वाले.

उमेंदे थावरी उन से न यहां रखना न वहां रखना ॥
बहुत मज़बूत घर है आक़बत का दारे दुन्या से ।
उठा लेना यहां से अपनी दौलत और वहां रखना ॥
उठा देना तसव्वरे ग़ैर की सूरत का आंखों से ।
फ़क़त सीने के आईने में नक़्शे दिलेस्तान् रखना ॥
किसी घर में न घर कर बैठना इस दारे फ़ानी से ।
ठाकाना बे ठाकाना और मकां बर लामकां रखना ॥

६ मुरादों के पूरा होने की उम्मेद ७ परलोक, आख़र वाला ८ दुन्या के घर से ९ बेहद, ख़ियाल १० द्वैत ११ दिल के शीशे में १२ दिल लेने वाले (आत्मा, यार) की सूरत (ध्यान) रखना १३ अन्त वाला घर (मुक़ाम) १४ स्थानो के ऊपर, स्थान रहित (मुक़ाम)

१५

तू को इतना मिटा कि तू न रहे ।
और तुझ में *दूई की बू न रहे ॥

जुस्तजू भी हजाबे हसनी है।
जुस्तजू है कि जुस्तजू न रहे॥
आँर्ज़ू भी वसाले पर्दा है।
आर्ज़ू है कि आर्ज़ू न रहे॥

१ जिज्ञासा २ सुन्दर पर्दा ३ उमेद, ख्वाहश ४ दर्शण में पर्दा

---

१६ राग सिन्दोरा ताल दोपचदी

नहीं अब वक्त सोने का सोये दिल को जगा देना।
जो लेटा गोटे गफ़लत में वहां से अब उठा देना॥
न जागे इस तरह गर वह तो झट उस के कानों में।
ढंडोरा चार वेदों का बतशरीहन सुना देना॥
है आत्म ओर ब्रह्म एको नहीं इस में फरक कुच्छभी।
बमैये मानि-व-मतलब के यक़ी इस पर करा देना॥
है दुन्या खेल जादू का कहो या ख्वाब ही इस को।
अगर कुच्छ शक हो इस में तो युक्ति से मिटा देना॥

१ सुसती के बिस्तर [आगोश] २ खोल कर, साफ़ साफ़
३ अर्थ सहित, साथ मतलबके ३ अर्थ सहित [साथ] अर्थ के

नमूदें इस की है ख्यालों पर हक़ीकत में नहीं कुच्छ भी।
ससेोपते मे कहां भासे? है वेहभी यह जता देना ॥
सर्व द्रष्टा सर्वाधार सब से परे जो है चैतन्यै (चेतन)।
वही आनन्दघन व्यापक वही आत्म लखा देना ॥
उसी में जीव ईश्वर की कलपना है पड़ी होती।
वही मक्राति हो भासे हमहँ वह है बता देना ॥
हमह का लफ़ज़ भी जिस बिन नहीं रखता हैसीयत को।
वही वह है हमह फ़र्जी मुफस्सल यह सुझा देना ॥
कहां दूई कहां वहदत कहां असली कहां नक़ली।
है केवेल एक ही गोविन्दं सबक़ आखर पढ़ा पेना ॥

४ भासमान [नज़र आना] ५ सषुपत्ति अवस्था ६ आत्म चैतन्य स्वरूप ७ सब कुच्छ [सर्व तमाम] ८ साफ़ तफ्सील वार ९ द्वैत १० एकता ११ सिरफ़ १२ कवी का नाम.

---

१७ गजल

दुन्या अजब बाजार हैं कुछ जिन्से यहां की साथ ले
नेकी का बदला नेक है बद से बदी की बात ले
मेवा खिला मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले
आराम दे आराम ले दुःख दर्द दे आफात ले
कल जुग नहीं कर जुग है यह यहां दिन को दे और रात ले
क्या खूब सौदा नकद है इस हाथ दे उस हाथ ले ॥ (टेक) १

कांटा किसी के मत लगा गो मिस्ले गुल फूला है तू
यह तेरे हक में तीर है किस बात पर झूला है तू
मत आग में डाल और को क्या घास का पूला है तू
सुन रख यह नुकता बेखबर किस बात पर भूला है तू॥
कलजुग नहीं० २

शोखी शरारत मकरो फैन सब का बसेखा है यहां

१ वस्तु, चीज २ दुःख, मुसीबत ३ पुष्प की तरह ४ तेर वास्ते, तेरे को ५ दगा, फरेब ६ बसेरा, रहने की जगह, घर

जो जो दिखाया और को वह खुद भी देखा है यहां
खोटी खरी जो कुछ कही तिस का परेखा[७] है यहा ॥
जो जो वडा तुलता है मोल तिलतिल का लेखा है यहां
कलजुग नहीं० ३

जो और की वस्ती[८] रखे उस का भी वस्ता है पुरा.
जो ओर के मारे छुरी उस के भी लगता है छुरा.
जो और की तोडे धडी उस का भी तुटे है घडा.
जो और की चीते[९] वदी उस का भी होता है बुरा ॥
कलजुग नही० ४

जो और को फल देवेगा वह भी सदा फल पावेगा
गेहूं से गेहूं जौ से जौ चांवल से चांवल पावेगा
जो आज देवेगा यहां वैसा ही वह कल पावेगा
कल देवेगा कल पावेगा फिर देवेगा फिर पावेगा ॥
कलजुग नही० ५

७ परखना, जाचना ८ नगरी ९ दिल में लाना, ख्याल में लावे

जो चाहे ले चल इस घड़ी सब जिन्स यहां तय्यार है
आराम में आराम है आज़ार में आज़ार है
दुन्या न जां इस को मीयां दरया की यह मंजधार है
औरों का बेड़ा पार कर तेरा भी बेड़ा पार है ॥

कलजुग नहीं॰ ६

तूं और की तारीफ कर तुझ को सनाख्वानी मिले
कर मुशकल आसां और की तुझ को भी आसानी मिले
तूं और को मेहमान कर तुझ को भी मेहमानी मिले
रोटी खला रोटी मिले पानी पिला पानी मिले ॥

कलजुग नहीं॰ ७

जो गुल खिलावे और का उसका ही गुल खिलता भी है
जो और का कीले है मुंह उस का ही मुंह किलता भी है
जो और का छीले जिगर उस का जिगर छिलता भी है

जो और को देवे कपट उस को कपट मिलता भी है ॥
कलजुग नहीं० ८

कर चुक जु कुछ करना है अब यह दम तो कोई आंन है
नुक्सान में नुक्सान है इहसान में एहसान है
तोहमत में यहां तोहमत लगे तूफान में तूफान है
रैहमांन को रैहमान है शैतान को शैतान है ॥
कलजुग नहीं० ९

यहां जैहर दे तो जैहर ले शक्कर में शक्कर देख ले
नेकों को नेंकी का मज़ा मुंज़ी को टक्कर देख ले
मोती दीये मोती मिले पथ्थर में पथ्थर देख ले
गर तुझ को यह बावेंरं नहीं तो तू भी करके देख ले
कलजुग नहीं० १०

अपने नफे के वास्ते मत और का नुक़सान कर
तेरा भी नुक़सान होवेगा इस बात पर तूं ध्यान कर

१४ घड़ी पल १५ बखशश करने वाला, बरकत देने वाला १६ सताने वाला, दु.ख देने वाला १७ निश्चय, यक़ीन.

खाना जो खा सो देख कर पानी पीये सो छान कर
यहां पाँ को रख तूं फूंक कर और खौफ से गुज़रान कर
कलजुग नहीं० ११

ग़फलत की यह जगह नहीं साहिबे इदराक रहे
दिलशाद रख दिल शाद रहे गमनाक रख गमनाक रहे
हर हाल में भी तूं नज़ीर अब हर कदम की खाक रहे
यह वह मकां है ओ मीयां यां पाक रहे बेबाक रहे ॥
कलजुग नहीं० १२

१८ तेज़ समझ वाला पुरुष १९ प्रसन्न चित्त, आनन्द चित्त २० कवी का नाम है २१ शुद्ध पवित्र २२ नडर, बेखौफ भयराहित.

---

१८ ग़ज़ल

दुन्या है जिसका नाम मीयां यह अजब तरह की हस्ती है
जो मेहंगो को तो मेहंगी है और सस्तों को यह सस्ती है
यहां हरदम झगड़े उठते हैं हर आंन अदालत बस्ती है

१ मस्त्र है २ हर वक्त, हरदम

गर मस्त करे तो मस्ती है और पस्त³ करे तो पस्ती है-

कुछ देर नही अंधेर नही इनसाफ⁴ और अदलपरस्ती है } टेक
इस हाथ करो उस हाथ मिले यहां सौदा दस्तबदस्ती है } १

जो और किसी का मान रखे तो उस को भी अरु मान मिले
जो पान खिलावे पान मिले जो रोटी दे तो नॉन⁵ मिले
नुक्सान करे नुक्सान मिले एहसान करे एहसान मिले
जो जैसा जिस के साथ करे फिर वैसा उस को आन मिले ॥
कुछ देर नही अंधेर॰ २

जो और किसी की जां बखशे तो हक़⁶ उस की भी जान रखे
जो और किसी की आँन⁷ रखे तो उस की भी हक़ आन रखे
जो यहां का रहने वाला है यह दिल में अपने ठान रखे

३ घटाना, कम करना ॥ अर्थात जो झगडे बढावे तो उसके वास्ते बाजार गर्म है और जो लड़ाई झगडों को घटाना चाहे तो उसके वास्ते घटा हुवा बाजार है ४ न्याय, इन्साफ ५ रोटी ६ सत्य स्वरूप ईश्वर ७ ,इज्ज़त, आबरू

वहु तुरत फुरत का नक़शा है उस नक़शे को पहछान रखे ॥
कुछ देर नहीं अंधेर० ३

जो पार उतारे औरों को उस की भी नाव उतरनी है
जो ग़र्क़ करे फिर उस को भी यां डुबकूं डुबकूं करनी है
शमशेर तबर वंदूक संनां और नशतर तीर निहंरनी है
यां जैसी जैसी करनी है फिर वैसी वैसी भरनी है ॥
कुछ देर नहीं अंधेर० ४

जो और का ऊंचा बोल करे तो उस का बोल भी बाला है
और दे पटके तो उस को भी कोई और पटकने वाला है
बेजुर्म ख़ता जिस ज़ालिम ने मज़लूम ज़िबह करडाला है

८ जल्दी, फौरन अर्थात अदले का बदला फौरन ही मिल- जाता है ऐसा दुन्या का नक़्शा है ९ भाला १० निहेरण, छीलना या छीलने का या नाखुन काटने का औज़ार । इसपाक्त में सब हथ्यारों के नाम हैं ११ इस जगह इस दुन्या में १२ बडी इज़्ज़त से पुकारे या किसी का ज़िकर करे १३ नामवरी १४ क़सूर रहित पुरुष १५ ज़ुल्म करने वाला, या नाहक़ दु:ख देने वाला १६ जिस पर ज़ुल्म कीया गया हो अर्थात दु:खी १७ गला घूट कर या छुरी से मारदेना,

उस जालिम के भी लहू का फिर वैहता नदी नाला है ॥
कुछ देर नहीं अंधेर नही० ५

जो मिसरी और के मुंह में दे फिर वह भी शक्कर खाता है
जो और के तई अब टक्कर दे फिर वह भी टक्कर खाता है
जो और को डाले चक्कर में फिर वह भी चक्कर खाता है
जो और को ठोकर मार चले फिर वह भी ठोकर खाता है॥
कुछ देर नही अंधेर० ६

जो और किसी को नाहक में कोइ झूठी बात लगाता है
और कोइ गरीब विचारे को नाहक में जो लुट जाता है
वह आप भी लूटा जाता है और लाठी मुक्की खाता है
वह जैसा जैसा करता है फिर वैसा वैसा पाता है ॥
कुछ देर नही अंधेर० ७

है खटका उस के साथ लगा जो और किसी को दे खटका
वह गैब[18] से झटका खाता है जो ओर किसी को दे झटका

१८ अप्रगट स्थान, दैवयोग से अर्थात् क़ुदरत से वह चोट खाता है.

"चीरे के बदले चीरा है पटके के बदले है पटका
क्या कहिये और नज़ीर आगे यह है तमाशा झटपटे का॥
कुछ देर नहीं अंधेर० ८

१९ एक किस्म की सुंदर पगड़ी का नाम है २० पटका भी एक उत्तम पगड़ी को कहते हैं २१ उसी ही समय बदला देने वाला.

---

१९ राग देस कार ताल दादरा

ज़िन्दः रहो रे जीया ; ज़िन्दः रहो रे (टेक)
तू सदा अखंड चिदानन्द घन मोह भै शोक क्यों करो रे।
जिन्दः रहो रे जीया ! जिन्दः रहो रे ॥ १ ॥
आया ही नहीं तो जायेगा कौन यह
सोया ही नहीं तो कहां जागे।
उपजा ही नहीं तो बिन्से गा किस तरह
वैहम और रोग सब हरो रे ॥ जिन्दः० २ ॥

तू नहीं देह बुद्धि प्राण मन तेरो नहीं मान अपमान जन।
तेरा नहीं नफ़ा नुकसान धनगम चिन्ता डर खौफ को
तेरो रे ॥ जिन्दः० ३ ॥
जाग रे लालन जाग रे घर तेरे सदा सुहाग रे।
सूरज वत उगरे भाग रे सब फिकर को परे कर
धरो रे ॥ जिन्द ० ४ ॥
है राम तो सदा ही पास रे हंस खेल क्यों हुवा उदास रे।
आनन्द की शिपर वर वास रे हर स्वांस में सोहंगं को
धरो रे ॥ जिन्दः० ५ ॥

२ ऐ पुरुष ३ ए प्यारे ४ वह [ईश्वर] मैं हूं वह आत्म स्वरूप मै हू.

---

२० राग धुन ताल तीन

काहे शोक करे नर मन में, वह तेरा रखवारा है रे॥टेक.
गर्भवास से जब तूं निकला, दूध स्तनों में डारा है रे।
बालकपन में पालन कीनो, माता मोद दुवारा है रे॥१॥का

अन्न रचा मनुषों के कारण, पशुवों के हित चारा है रे।
पक्षी वन में पान फूल फल, सुख से करत अहारा है रे॥२॥
काहे शोक०
जल में जलचर रहत निरंतर, खावें मास करारा है रे।
नाग बसें भूतल के मांहि, जीवें वर्ष हज़ारा है रे॥३॥ का०
स्वर्ग लोक में देवन के हित, बहुत सुधा की धारा है रे।
ब्रह्मानंद फिकर सब तज के, सिमरो सर्जन हारा है रे॥
॥ ४ ॥ काहे०

१ सरवत.

---

२१ राग परज.

बात चलन दी कर हो, 'ऐथे रहना नांहि ॥ टेक
खाय खुराकां पैहन पुशाकां जमदा वकरा पल हो ॥१॥ऐथे
गंगा जावें गोदावरी न्हावे अजौं न समझें खले हो ॥२॥ऐथे.
उमर तेरी ऐवें पई जाँदी घड़ी घड़ी पल पल हो ॥ ३ ॥ ऐथे.
कहे हुसैन फकी साईं दा भय साहिब दा कर हो ॥४॥ऐथे.

१ इस संसार में २ बेवकूफ नालायक

---

२२ गजल ताल ३

हरि को सिमर प्यारे ! उमर विहो रही है ।
दिन दिन घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन में जा रही है ॥
(टेक)

दीपक की जोत जावे, नदीयों का नीरं धावे ।
जाती नज़र न आवे, चंचल समा रही है ॥ १ ॥ हरि०
पिछली भलाई कमाई, मानुषा देह पाई ।
प्रभु हेतें ना लगाई, बिरथा गमा रही है ॥ २ ॥ हरि०
घर माल मीत नारी, दुन्या की मौजें भारी ।
होवे पलक में न्यारी, दिल को फंसा रही है ॥ ३ ॥ हरि०
क्या नींद मे पड़ा है, सिर काल आ खड़ा है ।
उठ दिन चढ रहा है, रजनी बता रही है ॥ ४ ॥ हरि०

१ गुजर (बीत) रही है २ जल ३ छोड़े मुराद यहां से
४ कारण (अर्थात प्रभुके लीये) ५ तरंग, लहर ६ रात

२१ लावणी लगड़ी.

सुन दिल प्यारे ! भज निज स्वरुप तूं वारंवारा ॥ टेक
इस दुन्या में एक रतन[1] है मिलता वारंवार नहीं
जैसे फूल गिरा डाली से, फिर होता गुलज़ार नहीं
उस की क़ीमत है बडभारी, जानत लोग गंवार[2] नहीं
परमेश्वर के मिलने का फिर, उस के विना दुवार नहीं
काच खरीद करे बदले में, देकर उस को मति मारा ॥१॥ सुन.
इस दुन्या में इक पुतली[3] ने ऐसा भारी जाल रचा
स्वर्ग लोक पाताल ज़िमीं पर, कोई न उस के हाथ बचा
क्या जोगी क्या पीर पैगंबर, सब को उस ने दिया नचा
फंसा नहीं जो उस बंधन में, सोई है गुरुदेव सचा
मोक्ष मारग के जाने में, सो ठग जानो लूटन हारा ॥२॥ सुन.
इस दुन्या में एक अचंभा, हम ने देखा है जो बड़ा
एक छोड़ कर चला ज़िमीं को, दूजा करता है झगड़ा
वह नहीं मन में समझे मूरख, मैं भी जावनहार खड़ा

१ मनुष्य देह से मुराद है २ बेवकूफ़, जिसकी बुद्धि नहीं
३ स्त्री से मुराद है.

घड़ी पलक का नहीं ठिकाना, किस के भरोसे भूल पड़ा
पर आगे जाने का समान कोई, विरला करता है पियारा ३ सुन
इस दुन्या में एक कूंप है, जिस का पार कोय नाहि पावे
तिस के भरने कारण प्राणी देश देशांतर को जावे
ध्यान भजन चिंतन ईश्वर का उस के कारण बिसरावे
दीन भया पर घर में जाकर सेवा कर कर मर जावे
वही जो ध्यावे निजस्वरूप को शोक फिकर तज दे सारा
॥ ४ ॥ सुन०

इस दुन्या में एक वृक्ष पर पक्षी करत बसेरा है
सांझ पड़े जब सब मिल जावे, बिछड़ें होत सवेरा है
चार घड़ी के रहने कारण करते मेरा मेरा है
ऐसी बात न मन में लावे, बस बस गये बडेरा है
क्या ले आया क्या ले जासी वृथा करत है हंकारा
॥ ५ ॥ सुन०

४ कूवा, यहां मुराद है पेटसे ५ यहां मुराद घर, मकान से है.

इस दुन्या के वीच निरंतर एक नदी चलती भारी
दिन दिन पल पल छिन छिन उस का वेग बड़ा है बलकारी
पशु पक्षी नर देव दनुज६ उस में बहती दुन्या सारी
जमे न उस में पैर किसी का कर के यतन सब पचहारी
विन स्वरुप जाने, किसी का, कभी न होगा निस्तारा
॥ ६ ॥ सुन दिल०

इस दुन्या में एक अंधेरा सब की आंख में जो छाया
जिस के कारण सूझ पडे नहीं कौन हूं मैं कहां से आया
कौन दिशा में जाना मुझ को किस को देख कर ललचाया
कौन मालक है इस दुन्या का किस ने रची है यह माया८
निजानन्द पाने विन कबहु मिटे नहीं यह संसारा
॥ ७ ॥ सुन दिल०

६ यहां मुराद है कालं अगवार से ७ दानव ८ अज्ञान से मुराद है

२४ राग जंगला

कोई दम दा ईहां गुज़ारा रे। तुम किस पर पॉव पसारा रे॥
इहां पलक झलक दा मेला है। रहना गुरू न रहना चेला है॥
कोई पल का यहां गुज़ारा रे ॥ १ ॥ कोई दम०
यहां रात सराय का रहना है। कछु अस्थिर होय न जाना है॥
उठ चलना सांझ सकारा रे ॥ २ ॥ कोई दम०
ज्यों जल के बीच बताशा है। त्यों जग का सभी तमाशा है॥
यह अपनी आंख निहारा रे ॥ ३ ॥ कोई दम०
देखन में जो कोई आवे है। सब खाक माहिं मिल जावे है॥
यह सभी काल का चॉरा रे ॥ ४ ॥ कोई दम०
यह दृष्टमान सब नॉशी है। इस काल के सब घर फांसी है॥
इस काल सबन को मारा रे ॥ ५ ॥ कोई दम०
दर जिन के नौबत बाजे है। वे तख्त छोड कर भाजे है॥
लशकर जिनके लाख हज़ारा रे ॥ ६ ॥ कोई दम०

१ यहां २ सवेरे, प्रात काल ३ देखा ४ घास, नतीजा खुराक ५ नाश होने वाला.

२५ ग़ज़ल

ज़रा टुक सोच ऐ ग़ाफ़िल ! कि दम का क्या ठिकाना है।
निकल जब यह गया तन से तो सब अपना बिगाना है॥
मुसाफ़र तूं है और दुनियां सरा है भूल मत ग़ाफ़िल !।
सफ़र परलोक का आख़र तुझे दरपेश आना है ॥१॥ ज़०
लगाना है अ़बस दौलत पे क्यों तूं दिल को अब नाहक़।
न जावे संग कुछ हरगिज़ यहीं सब छोड़ जाना है ॥२॥ ज़.
न भाई बंधु है कोई न कोई आशना अपना।
बख़ूबी ग़ौर कर देखा तो मतलब का ज़माना है ॥३॥ ज़रा०
रहो लग याद में हक़ की अगर अपनी शफ़ा चाहो।
अ़बस दुन्यां के धंधों में हुआ तूं क्यों दिवाना है ॥४॥ ज़रा०

१ बे फायदः, फ़जूल २ दोस्त मित्र ३ साथ रफ़ीक़, ईश्वर ४ भलाई, बेहतरी ५ पागल.

२१ राग भूपाली ताल दादरा

विश्वपति के ध्यान में जिस ने लगाई हो लगन ।
क्यों न हो उस को शान्ति क्यों न हो उस का मन मगन॥
काम क्रोध लोभ मोह यह हैं सब महाबली ।
इन के हैनन के वास्ते जितना हो तुझ से कर यतन॥१॥वि.
ऐसा बना सुभाव को चित्त की शान्ति से द ।
पैदा न ईर्षा की आंच दिल में करे कहीं जलन॥ २॥ विश्व.
मित्रता सब से मन में रख त्याग दे वैर भाव को ।
छोड़ दे टेढ़ी चाल को ठीक कर अपना तू चलन॥३॥ विश्व.
जिस से अधिक न है कोई जिस ने रचा है यह जगत् ।
उस का ही रख तू आश्रा उसकी ही तू पकड़ शरन॥४॥वि.
छोड़ के राग द्वेश को मन में तु अपने ध्यान कर ।
तौ निश्चय तुझ को होवेगा यह सब हैं मेरे आत्मन ॥५॥ वि.
जैसा किसी का हो अमल वैसा ही पाता है वह फल ।

१ मारना, क़ाबूकरने से मुराद है. २ भाग

दुष्टों को कष्ट मिलता है शिष्टों का होता दुःख हैरन ॥६॥ वि०
आप ही सब तु रूप है अपना ही कर तू आश्रा ।
कोई दूसरा नाहिं होगा सहाय जो छेटे तेरे दुःख कठन ७॥ वि-

३ उत्तम पुरुष ज्ञानवान ४ दूर होना ५ मददगार, साथी

---

१७ राग जंगला

नाम जपन क्यों छोड़ दिया, प्यारे ! (टेक)
झूठ न छोड़ा क्रोध न छोड़ा
सत्य वचन क्यों छोड दिया ॥ १ ॥ नाम०
झूठे जग में दिल ललचाकर
अमल वतन क्यों छोड़ दिया ॥ २ ॥ नाम०
कौडी को तो खूब सँभाला
लाल रत्न क्यों छोड दिया ॥ ३ ॥ नाम०
जिहिं सुमिरन ते अति सुख पावे
सो सुमिरन क्यों छोड दिया ॥ ४ ॥ नाम०
खालस इक भगवान भरोसे
तन मन धन क्यों न छोड दिया ॥५॥ नाम०

८ ग़ज़ल, झंझोटी

जितना बढ़े बढ़ा ले उलफतें के सिलसले को·
वैहरे असीरये दिल जंजीर है तो यह है
चाहे जो काम्यावी तो क़दर वक़त की कर
तैक़दीर है तो यह है तर्देबीर है तो यह है
जैसा यहां करेंगे वैसा वहां भरेंगे
वस तेरी ख्वावे हस्ती! तावीर है तो यह है
नेकी सदा कीया कर उस की वदी के वदले
क़तलेअदू के क़ाबल शमशीर है तो यह है
पुर हिर्स दिल को अपने तू पाक कर हवस से
दुन्या में ए मुहेव्वस! अकसीर है तो यह है

१ मोह के सवन्ध को २ दिल के कैद करने के लीये ३ प्रारब्ध ४ पुरुषार्थ ५ स्वप्ना का वृतान्त व भाष्य ६ शत्रू के मारने की लीये ७ तल्वार ८ लालची ९ लालच १० लालची, भुक्खा, जिस का दिल कभी न भरे ११ रसायन

जिस से र्खता हो सैर्इद उस को मुआफ कर दे
इन्सान के गुनाह की तौज़ीर है तो यह है
करती है गुँफतगू क्यों इसरीर ज़ाते हक़ में
अक़्ले दक़ीक़ः रस की तक़सीर है तो यह है

१२ कसूर १३ पाप हो जाय, अथवा कीया जाय, १४ सज़ा, दंड १५ वाणी, जुबान १६ जिद, हठ १७ सत्य स्वरूप १८ गुप्त भेदों को जानने वाली बुद्धि १९ भूल, क़सूर,

---

२९

आंख होय तो देख बदन के पर्दे में अल्लाह । } टेक
पर्दे में अल्लाह क़ंदर को साफ करो वल्लाह ॥

जप तप दान यज्ञ तीरथ से यही काम भला ।
अंत समय परमीत साथ न जावे इक छल्ला ॥१॥ आंख.

१ दिल, अन्तःकरण २ अच्छा ३ दूसरे का दोस्त अपना नहीं अर्थात जो अपने साथ अन्त में संबन्ध न रखे

भव सागर से पार लघाने को सतगुरु मिल्ला।
झूठा है दंरा झुंत मित्र मुफत का रंल्ला ॥ २ ॥ आंख.
"तूं तेरा," "मैं मेरा" स्वप्ने का सा है हँल्ला।
अपना जान सुखी हो जा, है यही नेक सल्लाह ॥३॥ आंख.
अंज अविनाशी आत्म जाने होये खैर सल्लां।
निर्भय ब्रह्म रूप निज जाने हुवा पींक पल्ला ॥४॥ आंख०

४ स्त्री ५ पुत्र ६ झगडा, शोर ७ शोर ८ जन्म से रहित ९ उत्तम, शुभ १० शुद्द,

---

३०

जागो रे ससारी प्यारे। अव तो जागो मेरे प्यारे॥ टेक
गोर अविद्या के वश होकर, स्वामी से तुम भये हो कंकर।
विषयनके कीचर में फस कर, स्मृत नही हो तुम संभारे १ जा०
ज्ञान वडाई खोई है तुम ने, झूंटी विद्या पढ़ी है तुम ने।
माया को नहीं चीनां तुम ने, अव तो सोचो टुक मेरे प्यारे २ जा.

१ होश, अपने स्वरूप का स्मृण २ जाना, पैहचाना, यहा मुराद है क़ाबू (वश) करने से

जिन को नित उठ तुम हो गावो, मूरत जिन की होत बनावो।
शिक्षा उन की चित्त में लावो, देखो उन की तरफ निहारे ३
शिव संकादिक जिस को ध्यावें, नेति नेति से वेद लखावें।
मन बुद्ध जा का पार न पावें, वह तुम ही हो मित्र प्यारे! ४ जा०
विष्यन से अब चित्त को खैंचो, प्रेम के जल से ४हीये को सींचो।
ज्योती से मत नैनन मीचो, तुम ज्योतन के ज्योत हो प्यारे ५
महाँवाक्य को मन में गावो, अहम ब्रह्म यह नित उठ गावो।
ओंकार से अलख जगावो, आनन्द से नहीं तुम हो न्यारे! ६

३ गौर से देखो, सोच विचार कर ४ हृदय ५ चक्षु यहां दिल की आंख से मुराद है ६ वेदवानी अर्थात अहं ब्रह्मास्मि इत्यादि,

---

३१ गज़ल

जो मोहन में मन को लगाये हुए है। (टेक)
वो फल मुक्ति जीवन का पाये हुए है ॥ १ ॥ जो०
जो बंदे हैं दुन्या के, गंदे सरासर।

१ कृष्ण, मुराद अपने प्यारे स्वरूप से है

वह फंदे में खुद को फंसाये हुए हैं ॥ २ ॥ जो०
जो सोते हैं ग़फलत में रोते है आखिर।
वह खोते रतन हाथ आये हुए है ॥ ३ ॥ जो०
खतर है न यम का न डर मौत ग़म का।
जो मोहन को दिल में बिठाये हुए है ॥ ४ ॥ जो०
पकड़ पाया मुर्शिद के दामन को जिस ने।
वह ही है मगन, मन सताये हुए हैं ॥ ५ ॥ जो०

२ डर, भय ३ ब्रह्मनिष्ट गुरू ४ गुरु की बानी, उपदेश से मुराद है.

---

३२ लावनी

चेतो चेतो जल्द मुसाफिर गाडी जाने वाली है।
लाइन क्लीयर लेने को तैय्यार गार्ड वनमाली है॥ } टेक
पांच धातु की रेल है जिसको मन अजन लेजाता है।
इन्द्री गण के पैयों से वह खूब ही तेज़ चलाता है॥
मील हजारों चलने पर भी थकने वह नहीं पाता है।

कठिन वज्र लोहे जैसा होकर चंचलता दिखलाता है ॥
बड़े गार्ड धन्माली से होती इस की रखवाली है ॥ १ ॥ चे.
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती तुर्या चार मुख्य अष्टेशन है ।
आठ पैहर इन ही में विचरे रेल सहित यह अंजन है ॥
कर्म उपासन ज्ञान टिकट घर लेता टिकट हर इक जन है ।
फस्ट सैकड अरु थर्ड क्लास ले जितना पल्ले शुभ धन है ॥
बैठ न पावे हरगिज वह नर जो इस ज़रसे खाली है ॥२॥ चे.
रहगीरों के ललचाने को नाना रूप से सजती है ।
तीन घंटिका बाल तरुण और जरा की इस में बजती है ॥
तीसरी घैंटी होने पर झट जगह को अपनी तजती है ।
आते जाते सीटी देकर रोती और चल्लाती है ॥
धर्म सनातन लाइन छोड के निपट बिगड़ने वाली है ३ चे.
पाप पुन्य के भार का बडल अस्सर साथ ही रखते हैं ।
काम क्रोध लोभादिक डाकू खड़े राह में तकते हैं ॥
अष्टेशन इस्टेशन पर रागादिक रिपू भटकते हैं ।

१ धन २ बुढापा ३ जल्द ४ बदमाश, ठगबाज़, शत्रू

पुलिसमैन सद्गुरु उपदेशक रक्षा सब की करते हैं ।।
निर्भय वह ही जाता है जो होवे पूरा ज्ञानी है ॥४॥ चे-

---

१३ (तरज लैली मजनू)

प्रभू प्रीतम जिस ने विसारा । हाय जनम अमोलक
विगाड़ा ॥ (टेक.)

धन दौलत माल खज़ाना, यह तो अन्त को होवे वेगाना ।
सत्य धर्म को नाहीं विचारा, भूला फिरता है मुग्ध गंवारा १ प्र०
झूठे मोह में तन मन दीना, नाहीं भजन प्रभू का कीना ।
पुत्र पौत्र और परिवारा, कोई संग न चल्लन हारा ॥२॥ प्र०
भ्रात्री भाव न प्रीती प्रसपर, कपट छल है भरा मन अंदर ।
कुछ भी कीया न परउपकारा, खोटे करमों का लीया
अंजारा ॥ ३ ॥ प्रभु०
तेरा योवन और जवानी, दलती जावे ज्यों बर्फ का पानी ।

१ मूर्ख, आवारह गर्द २ कुटम्भ ३ ठेका.

मीठी नींद में पाओं पिसारा, चिड़ियां चुग गयी खेत तुम्हारा ॥ ४ ॥ प्रभू०

धोके बाज़ी के दाम फैलाये, विषय भोग के चैन उड़ाये।
पुन्न दान से रखा नियारा,ऐसे पुरुषों को हो धिक्कारा॥५॥प्र०
जो जो शास्त्र वेद बिखाने, मूर्ख उलटा ही उन को जाने।
समय खोया है खेल में सारा, सतसंग से कीया किनारा॥६॥प्र०
ऐसे जीने पे तू अभमानी, टीला रेत का ज्यों बीच पानी।
क्यों न गुन अरु कर्म सुधारा, मानुश जन्म न हो वारंवारा ॥ ७ ॥ प्रभू०

तेरे करम हैं नौं मयाना, जिस में बैठा है तू अज्ञाना।
गेहरी नद्या है दूर किनारा, कोई दम में तू डूबन हारा ॥८॥ प्र०
अपने दिल में तू जाग रे भाई, कुछ तो कर ले नेक कमाई।
संग जाये नहीं कुनबा सारा, सत धर्म ही देगा सहारा ॥९॥ प्र०

४ उपदेश करे ५ बेदों, किनारा ६ नदी पुत्र.

३४ रागनी भिभास ताल तीन

तू कुछ कर उपकार जगत में तू कुछ कर उपकार। टेक.
मानुष जनम अमोलक तुझ को मिले न बारंबार ॥१॥ तू.
सुकृत[1] अपना कर धन संचय यह वस्तू है सार।
देश उन्नती कर मित्री सेरा[2] गुनीयन का सतकार॥२॥ तू.
शील संतोश परस्वारथ रती दया क्षमा उर धार।
भूखे को भोजन प्यासे को पानी दीजै यथा अधकार॥३॥ तू.
कठन समय में होवेंगे साथी तेरे सेष्ट आचार।
इस लीये इन का कर तू संग्रह[3] सुख हो सर्व प्रकार॥४॥ तू.
...ोय अज्ञानी कहे वन्दा गन्धः तिस को है धिक्कार।
...है ज्ञान ही औशद सब अवगुण[4] की करते वेद पुकार॥५॥ तू.

१ पुन्य कर्म रूपी धन २ आराम, आनन्द, खुशी ३ एकत्र
४ कसूर पाप, बेवकूफियां

३५ रेखता ताल दादरा

राम सिमर राम सिमर यही तेरो काज[1] है॥ (टेक)

१ फर्ज, काम

माया को सग साग, प्रभू जी की शरण लाग। जगत सुख मान मिथ्या झूठो ही सब साज है ॥ १ ॥ राम॰
स्वप्ने जैसा धन पैहचान, काहे पर करत मान,।
वालू की सी भित्त जैसे, वसुधा: को राज है॥२॥रा॰
नानक जन कहत बात, विनस जाये तेरी गॉत।
छिन छिन कर गयो काल, ऐसे जात आज है॥३॥रा॰

२ टुकड़े, शकल, अर्थात रेत के घर या रेत की दीवारें ३ धन दौलत ४ कवी का नाम है ५ अग, बल

३९

हरि नाम भजो मन! रैन दिना (टेक)
सुन सुन मीता, परम पुनीता, हरि यश गीता, गाये स्वारो-निज जन्मे ॥ १ ॥ हरि॰ सुत परिवारा, परम प्यारा, नित घरवारा, नाहिं सहारा-समझ मना ॥२॥हरि॰

१ रात दिन २ ऐ प्यारे

कोई न अंगी, होवे न संगी, सब टल जावें, काम न आवें,
कोई जना ॥ ३ ॥ हरि० यह जग सारा, निपट असारा³,
दिन दो चारा, बीतन हारा, कुछ दिन में ॥४॥ हरि०
ढोलरें⁴ माडी, छत्र त्यारी, मुनि घरबारी, अन्त समय
तज, चल बसना ॥ ५ ॥ हरि० जब लग प्राण, रहें घट
अन्दर, बानी सुन्दर, रट मैहमां, हरि लाय मना॥६॥ह०
किस दे कारण, पाप कमावें, जन्म गंवावें, समय टलावें,
समझ बिना ॥७॥ हरि० हरि यश गावन, पाप नसावन,
धन मन भावन, जोड़ लियो सग जिस चलना ॥८॥ हरि०
निश दिन भज हरि, जन्म सफल कर, भैव सिन्धू जाय,
तर, हरि सहँवास तू, होय जना ॥ ९ ॥ हरि०

३ सार रहत ४ बडे २ गुम्मजदार मकान ५ दूर करना
६ दुन्या रूपी समुद्र ७ हरि को घट अन्दर पाकर हरि में सर्वदा
स्थिति कर.

३७ गगनी पील ताळ तीन

नेक कमाई कर ले प्यारे ! जो तेरा परलोक सुधारे। टेक.
इस दुन्या का पेना लेखा, जैसा रात को स्वप्ना देखा ॥१॥ने.
ज्यों स्वप्ने में दौलत पाई, आंख खुली तो हाथ न आई॥२॥ने.
कुटुंब कबीला काम न आवे, साथ तेरे इक धर्म ही जावे ३॥ने.
सब धन दौलत पड़ा रहेगा, जब तू यहां से कूच करेगा॥४॥ने.
तोशा कुच्छ नहीं सफर है भारा, क्योंकर होगा तेरा गुज़ारा५
अबतक गाफल रहा तू सोया, वक्त अनमोल अकारथ खोया
टेढ़ी चाल चला तूं भाई, पग पग ऊपर ठोकर खाई ॥७॥ने.
खूब सोच ले अपने मन में, समय गंवाया मूरख पन में ८॥ने.
यदि अब भी नहीं तु यतन करेगा, तो पछताना तुझ को पड़ेगा
कर सत संग और विद्याऐन, तब पावे तू सुख और चैन १०
एक प्रभू बिन और न कोई, जिस के सिमरे मुक्ति होई ११॥ने
उसी का केवल पकड़ सहारा, क्यों फिरता है मारा मारा १२॥

१ रास्ते की खुराक २ बेफायदा: ३ विद्या ज्ञान की पढ़ो ४ सिर्फ, कवी का नाम भी है

३८ राग झुमाच ताल तान

करनी का ढंग निराला है, करनी का ढंग निराला है ॥टेक.
कोई दिगम्बर कोई पीताम्बर, पैहने शाल दोशाला है ॥१॥
कोई भूपति है कोई सेनापति, कोई गडरिया गुवाला है ॥२॥
कोई अंधा कोई लूल्हा लंगड़ा, कोई गोरा कोई काला है ॥३॥
कोई भूखा प्यासा व्याकुल है, कोई मद पी पी मतवाला है ॥४
कोई मद पी भंगी चरसी है, कोई पीवे प्रेम प्याला है ॥ ५ ॥
जब तक फिरे न मन का मनका, क्या तसबीह क्या माला है ६
निशदिन भजे जो हरिनारायण को, सोई करने वाला है ॥७॥

१ अमल करने का स्वभाव २ पृथ्वि का राजा ३ स्मरणी जपनी, माला ४ हर रोज

---

३९ गजल

लगा दिल ईश से प्यारे अगर मुक्ति को पाना है (टेक)
मगरना यासो हसरत के सिवा क्या हाथ आना है ॥१॥ल०

१ ईश्वर २ ना उमेदी और अफसोस

यह दुन्या चंदैरोज़ा है यहां रहना नहीं दायँम ।
जवान हो पीर हो तिँफल्क सभों ने छोड़ जाना है ॥२॥ल०
करोड़ों हो गये योधा जो भारत के सतारे थे ।
निशां उन का कहां बाकी कहां उन का ठिकाना है ॥३॥ल०
बहारे ज़िन्दगी पर किस लीये भूला फिरे नादान ।
खजां को याद रख जिस ने निशा तेरा मिटाना है ॥४॥ल०

३ बहुत स्थिर न रहने चले ४ हमेशा ५ बच्चा.

---

४० राग भैरो ताल तीन

(टेक) मन परमात्मन को सिमर नाम । घड़ी घड़ी पल पल छिन छिन निशँदिन ॥ स्वांस स्वांस से सिमर नाम॥१॥म.
घट घट व्यापक अन्तर यामी है, रोम रोम में रम रहे स्वामी।
अद्वैती ब्रह्म परमात्म पूर्ण है, विश्वंबर या को नाम ।

१ प्रति दिन २ सिर्फ एक अकेला ३ विश्व को धारन करने वाला.

निरविकार शुद्ध रूप निरंजन, कर वा को पुनि पुनि प्रणाम ॥ २ ॥ मन०

नित्य पवित्र सृष्टि का कर्ता, दुःख दरिद्र मल मनके हर्ता।
अजर अमर दयालून्याकारि, करुना सिंधू सरब हितकारी।
मंगल दायक सचदानन्द को, भज ले रे नर आठों याम ॥ ३ ॥ मन०

अन्न धन सब भोग पदारथ, भक्ती मुक्ती दो अर्थ परमारथ।
जो जन गावे घर में पावे, कर भक्ति निष्काम।
अमीचंद प्रभू पूरन करता है, सकल मनोरथ सिध काम ॥ ४ ॥ मन०

४ रहीम, रैहम करने वाला ५ कवी का नाम है.

———:०:———

वैराग्य.

—— o ——

१ जंगला ताल तिन

प्रीतम जान लीयो मन माही (टेक)
अपने सुख सें सब जग बान्धयो को काहू को नाही ॥ प्री०
सुख में आन बहुत मिल बैठत रहत चहों दिश घेरे ।
बिपॅद परी सब ही संग छाडत कोऊ न आवत नेडे ॥ प्री०
घर की नार बहुत हितै जा से रहत सदा संग लागी ।
जब ही हंसे तजी यह काया प्रेत २ कह भागी ॥ प्री०
जीवत को ब्योहार बनयो है जा से नेह लगायो ।
अंत समय नानक बिन हर जी कोई काम न आयो ॥ प्री०

१ तरफ २ तकलीफ या मुसीबत ३ प्यार, स्नेह ४ जीव
५ मोह भ्रम जिस से लगाया

———

२ राग देव गंधारी.

झूठी देखी प्रीत जगत में झूठी देखी प्रीत (टेक.)
मेरो मेरो सब ही कहत हैं हित से बान्धयो चीत ॥ ज०
अपने सुख हित सब जग फांदयो क्या दारा क्या मीत॥ज०
अन्त काल संगी नाहि कोऊ यह अचरज है रीत ॥ ज०
मन मूरख अजेंहों नाहि समझत सुख दे हारयो नीत ॥ ज०
नानक भवजल पार पड़े जो गावे प्रभु के गीत ॥ ज०

१ प्यार, मोह २ दिल ३ सबब, कारण ४ स्त्री ५ मित्र, दोस्त ६ तरीका ७ अभी तक ८ नित्य, हमेशां सुख का हारा हुवाहै ९ ससार समुद्र

---

३ रागी राग जोगी ताल धुमाली

जग में कोई नही ज़िन्द मेरीये! हरी विना रछपाल (टेक)
धन जोड़न नूं बहुत सियाना रैन दिनां यही चिन्ता।

१ ऐ जान मेरी ! २ रक्षा करने वाला ३ दाना, अक़्ल मंद ४ रात दिन.

अन्त समय यह सब धन तेरा कँदे न होसी मन्ता ॥ जि०
खावँन पीवन दे विच रचया भूल गया प्रभू अपना।
यह जिस नू अपना कर जाने होसी रैनें का सुपना ॥ जि०
महल अंहे माड़ी उचे अटारी है शोभा दिन चारी।
नाम बिना कोई काम न आवे छूटन अन्त दी वारी ॥ जि०
जगत जंजाल तेरे गल फांसी ले सी जान प्यारी।
हृदय भजन बिना इस जग विच सके न कोई उतारी॥ जि०
जंगल ढूंडन जा न प्यारे निकट वसे हरी स्वामी।
तू जाने हरी दूर वसे है वह तो घट घट अन्तर्यामी ॥ जि०
होये अँचीत सोवें सुन मूरख! जन्म अकारथ जावे।
जीवन सफल तदे ही होवे भक्ति हृदय विच आवे ॥ जि०
भक्ति बिना सुखों अंधराता देख देख कर झूरे।

५ कभी ६ अच्छा फल देने वाला ७ खाना पान ८ लगा गया, मसरूफ होगा ९ रात्री का स्वप्न १० और ११ ऊंचा मकान १२ चार दिनकी शोभा वाली १३ पार उतारना १४ समीप १५ बेखबर, बे होश हो कर सोना १६ बेफायदा १७ घोर अन्धकार

जब मन अन्दर नाम बसे है नर्सन संकेल वेसूरे ॥ जि०
अमृत नाम जपे जद प्राणी तृपा सकल मिट जावे ।
तपत हृदय मिट जावे सारी ठंड कलेजे आवे ॥ जि०

१८ मार्ग १९ तमाम २० तकलीफ, दु.ख.

---

४ साकी राग कालंगडा.

यह जग स्वप्ना है रजनी का, क्या कहे मेरा मेरा रे (टेक)
मात तात सुत दारा मनोहर, भाई बन्धु अरु चेरा रे ।
आपो अपने स्वारथ के सब, कोई नहीं है तेरा रे ॥१॥ यह.
जिन के हेत करत धनसंचय, कर कर पाप घनेरा रे ।
जब यमराज पकड़ ले जावे, कोई न संग चलेरा रे ॥२॥ यह.
ऊंचे ऊंचे महल बनाये, देश दिगंतर घेरा रे ।
सब ही ठाठ पड़ा रह जावत, होत जंगल में डेरा रे ॥३॥ यह.
अतर फुलेल मले जिस तन को, अंत भस्म की ढेरा रे ।
ब्रह्मानंद स्वरूप बिन जाने, फिरत चौरासी फेरा रे ॥४॥ यह.

१ रात २ पिता ३ बेटा ४ स्त्री ५ शिष्य ६ कारण ७ सकट्ठा जमा.करना ८ बहुत.

५ राग धनासरी.

जीवत को व्योहार जगत में, जीवत को व्योहार (टेक)
मात पिता भाई सुत[1] बान्धव, अरु निज[2] घर की नार ॥ जग०
तन से प्राण होत जब न्यारे, तुरत[3] प्रेत पुकार ॥ जग०
अर्ध घडी कोई नहीं राखे, घर से देत निकार ॥ जग०
मृग तृष्णा[4] ज्युं रहे जगरचना, देखो हृदय विचार ॥ जग०
जन नानक यह मत संतन को, देख्यो ताहिं पुकार ॥ जग०

१ बेटा २ अपनी ३ फौरन, जलदी ४ रेत जो पानी नजर आवे

६ राग मारू

जिन्हां[1] घर झूलते हाथी हज़ारों लाख थे साथी ।
उन्हां को खा गयी माटी तू खुश कर नींद क्यों सोया ॥ टेक.
नक्कारह कूच का बाजे, कि मारू मौत का बाजे ।
ज्यों सावण मेघरा गाजे, तूं खुश कर नींद क्यो सोया ॥१॥
कहां गये खान[3] मद[2] माते, जो सूरज चांद चमकाते ।

१ जिन के २ बड़े अहंकार वाले अथवा बड़े मतंग्या वाले ३ खान् साहिब

न देखे कहां जी वह जाते, तूं खुश० ॥ २ ॥
जिन्हां घर लाल और हीरे, सदा सुख पान और बीड़े।
उन्हां नूं खा गये कीड़े, तूं खुश० ॥ ३ ॥
जिन्हां घर पालकी घोडे, ज़री ज़रवफत के जोड़े।
वुही अब मौत ने तोड़े, तूं खुश० ॥ ४ ॥
जिन्हां दे बाल थे काले, मलाईयां दूध से पाले।
वह आखर आग में डाले, तूं खुश० ॥ ५ ॥
जिन्हां सग प्यार था तेरा, उन्हां कीया खाक में डेरा।
न फिर वह करनगे फेरा, तूं खुश० ॥ ६ ॥

---

७ रागिनि सुढस ताल धीमा

ऐथे[1] रहना नाहिं मत खरमस्तीयां कर ओ (टेक)
तन मंद[2] धन मद और राज मद। पी कर मस्ती न कर ओ १ ऐ.
कैरव पांडव भोज और विक्रम। दस कहां गये किधर ओ २ ऐ.
राम चंद्र लङ्केश[3] भवीक्षन। लङ्का को गये खाली कर ओ ३ ऐ.

१ इस जगह २ अहंकार ३ लङ्का का मालक, रावण

कालवारन्ट नकाल अचानक। तुर्त ले जासी फड़ ओ ४ ऐ.
साथ न जासी संपत तेरे। ज़ब्त हो जासी घर ओ ५ ऐ.
मर्घट दे विच मिलसी भूमी साढ़े तीन हाथ भर ओ ६ ऐ.
यह देह खेहँ हो जासी पल विच। रूप जोवन जैंर ओ ७ ऐ.
अमीर कँवीर न बचिया कोई, मौतनूं दे कर ज़र ओ ८ ऐ.

४ धन दौलत ५ राख ६ मुरझाना ७ बड़ा पुरुष, कवि का नाम है ८ धन दौलत.

---

८ राग पहाड़ी

धन जन यौवन संग न जाये प्यारे ! यह सब पीछे रहजावें ॥ (टेक)

रैनें गंवाई देह नसौंरे प्यारे खा कर दिवैस गंवाये।
मानुष जनम अकारथ खोया मूर्ख समझ न आवे ॥१॥ध०
धन कारण जो होवे दीवाना: चारों दिशा को धावे।
राम नाम कभी न सिमरे सो अंते पछतावे ॥ २ ॥ धन०

१ पुरुष २ रात ३ सोये ४ दिन ५ आखर में.

प्रीती सहत मिल आवो रे साधो ईश्वर के गुण गावें।
जिस के कीये सदा शुभ होवे तिस को काहे भुलावें ॥३॥४०

५

इस तन चलना प्यारे! कि डेहरा जंगल में मलना (टेक)
सूरत योवन भी चल जांदा कोई दिन दा ढोल वजांदा।
आखर माटी में मलना ॥ कि इस तन चलना० ॥ १॥
सब कोई मतलब दा है वेली[1] तेरी जासी जान अकेली।
ओड़क वेला[2] नहीं टलना ॥ कि इस तन चलना० ॥२॥
यह तो चार दिनां दा मेला रहना गुरू न रहना चेला।
इस तन आतश[3] में जलना ॥ कि इस तन चलना० ॥३॥
जिस नूं कहें तू मेरी मेरी यह नहीं मेरी है न तेरी ॥
इस ने खाक विषे[4] रलना ॥ कि इस तन चलना० ॥४॥
यह तन अपना देख न भुल रे बिन ईश्वर के फ़ैना[5] है कुल रे।

१ प्यारा २ समय, वक्त ३ अग्नि ४ खाक के बीच ५ नाशवान

प्रभु दे भजन बिना गल्लना ॥ कि इस तन चलना० ॥ ५॥
मिट्ठा बोल हत्थों कुच्छ दे लै नेकी कर जिंदगी दा है वेला ।
पिछ्छो किसे नहीं घल्लँना ॥ कि इस तन चलना० ॥ ६॥

६ हाथ से ७ भेजना

---

१० ग़ज़ल

हाय्ये क्यों ऐ दिल! तुझे दुन्या-ऐ-दूँ से प्यार है ।
भूल कर हक़ को तेरी क्यों इस तरफ़ रफ़्तार है ॥१॥
कारे दुन्या में है रहता हर घड़ी चालाको चुस्त ।
पर भजन में सर्वदा सुस्त क्यों रफ़्तार है ॥ २ ॥
क्या तुझे जज़्बात की मेरी का हि रहता है ध्यान ।
उन पै गालब आना क्यों तेरे लीये दुशवार है ॥ ३ ॥
ख्वाहश के पीछे क्यों फिरता है मारा रोज़ो शब ।

१ घर बार, और दुन्या के विषय वस के मोह २ ईश्वर, सत्य ३ गति ४ व्योहारक काम, व्योपार इत्यादि ५ विषयकी चटक या रस ६ भरना दिल का, सन्तुष्ट ७ मुशकल ८ दिन रात

क्या यही दुन्या में तुझ को एक बाकी कार है ॥ ४ ॥
भागता है नेक सोहबत से दिलां किस वास्ते ।
वह तो मिसले डाक्टर है और तू बीमार है ॥ ५ ॥

९ काम १० ऐ दिल! ११ डाक्टर के सदृश.

११

मान मन क्यों अभिमान करे (टेक.)
योवन धन छनभंगुर तिन पै काहे मूढ़ मरे ॥१॥ मान०
जल बिच फेन बुदबुदा जैसे छिन्न छिन्न बन बिगड़े ।
सो यह देह खेह होय छिन में बहुर न दीख परे ॥२॥ मान०
मंदर मैहल बैहल रथ वाहन यहीं रह जात धरे ।
भाई बन्धु कोई संग न लागे न कोई साँख भरे ॥३॥ मान०
चाम के देह से नेह लगावे उस दिन नाहिं टरे ।
धृक तो कों अरे! अति सुंदर हरि! ताकी सुध ना करे ॥४॥

१ फिर २ ख्वारी ३ मुराद है कि कोई साथ न रहे और न कोई मदद करे ४ प्यार

हरि चर्चा सत सेवा अँर्चा इन ते निपट डरे।
कूकर सूकर तुल्य भोग रत अंध होय विचरे ॥८॥ मान०

५ पूजा.

१२

नहीं जो खाँर से डरते वही उस गुल को पाते हैं।
मिला मिट्टी में अपने आप को खिरमँन उठाते हैं॥
नशा पाते हैं पैहले जो नशा अपना मटाते हैं।
खुद अपना नाश करके बीज फिर फल फूल पाते हैं॥
जिन्हें बन्दों से भीती है वही साहिब को भाँते हैं॥

१ कांटा २ पुष्प ३ फसल का अनाज ४ पसिन्द आना.

---

१३ गजल

दिला गाफिल न हो यक दम यह दुन्या छोड़ जाना है। ⎫
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मीं अंदर समाना है॥ ⎭ टेक.

१ ऐ दिल !

वदन नाज़ुक गुलों जैसा जो लेटे सेज फूलों पर।
होवेगा एक दिन मुरदा यही कीड़ों ने खाना है ॥ १ ॥
न वेली होयगा भाई न वेटा वाप ना माई।
क्या फिरता है सौदाई अमल ने काम आना है ॥ २ ॥
पियारे नज़र कर देखो पड़ी जो माड़ियां खाली।
गये सब छोड़ फानी देह दगावाज़ी का बाना है ॥ ३ ॥
पियारे नज़र कर देखो न खेशों में नहीं तेरा।
ज़नों फर्ज़न्द सब कूकें किसे तुझ को छुड़ाना है ॥ ४ ॥
तमामी रैनें ग़फ़लत में गुज़ारे चार पाई पर।
गुज़ारे रोज़ खेलों में नज़र कर क्यों गंवाना है ॥ ५ ॥
ग़लत फेहमी यहि तेरी नहीं आराम है इस जाँः।
मुसाफर बेवतन तू है कहां तेरा ठिकाना है ॥ ६ ॥

२ पुष्प, फुल ३ संबन्धी, रिश्तेदार ४ स्त्री, पुत्र ५ रात ६ बे समझी ७ स्थान, मुराद है दुन्या से.

१४.

चपल मन मान कही मेरी, न कर हरि चिन्तन में देरी (टेक
लख चौरासी योनि भुगत के यह मानुष्य तन पायो।
मेरी तेरी करते करते नाहक जन्म गमायो ॥ १॥ चपल०
मात पिता सुत भ्रात नारि पति देखन ही के नाते।
अंत समय जब आय अकेला तो कोई संग नहीं जाते॥२॥च०
दुन्या दौलत माल खज़ाने व्यजने अधिक सुहाने।
प्राण छूटें सब होयें पराये मूरख मुफत लुभाने ॥ ३ ॥ च०
काम क्रोध मद लोभ मोह यह पांचों बड़े लुटेरे।
इन से बचने के लीये तूं हरि चरणन चित्त दे रे ॥४॥च०
योग्य यज्ञ तप तीरथ संयम साधन वेद बताये।
हरि सुमरण सम एक हु नाहिं, बद भाग्य, जो पाये५॥च०

१ ज़ियादा २ मोह लेने वाले, लुभायमान

१५.

इस माया ने अहो कैसा भुलाया मुझ को। (टेक)
झूंठे संसार के फंदे में फंसाया मुझ को ॥ १ ॥ इस०
नूर जिस प्यारे का रौशन है हरेक ज़र्रे में।
ख्वाब में भी न वह दिलदार दिखाया मुझ को ॥२॥इस०
दिल के आईने में तस्वीर सुनी थी उस की।
सैंकड़ो कोस मगर मुफत घुमाया मुझ को ॥ ३ ॥ इस०
सुन लीया दर्श वह देता है सिरफ प्रेमी को।
युंहि तप जप में कैई साल भ्रमाया मुझ को ॥ ४ ॥ इ०

१ शीशा.

१६

दुन्या के जंगलों में है यह दिल भटक रहा।
अटका यहां जो आज तो कल वहां अटक रहा ॥१॥
मंदर में फंस गया कभी मसजद में जा फंसा।
छूटा जो यहां से आज तो कल वहां अटक रहा ॥२॥

हिन्दू का और किसी को मुसल्मान का गरूर।
ऐसे ही बाह्यात में हर इक भटक रहा ॥ ३ ॥
वह हर जगह मौजूद है जिस की तलाश है।
आखों के आगे परदाः-ए-ग़फलत लटक रहा ॥ ४ ॥
गुलज़ार में है गुल में है जंगल में बैहर में।
मीनाः में सिर में दिल में जिगर में खटक रहा ॥ ५
ढूंढा है उस को जिस ने उसे आन कर मिला।
अटका जो उसकी राह से उस से अटक रहा ॥ ६ ॥
सिदक़ और यक़ीन के बिन दिलबर मिले कहां।
गो जंगलों में बरसों ही सिर को पटक रहा ॥ ७ ॥
यार उमेद एक पे रख दिल को साफ कर।
क्या विस्मरता का काटा है दिल में खटक रहा ॥८॥

१ सुस्ती (अविद्या) का पर्दा २ बाग ३ समुद्र ४ शुद्ध हृदय
५ संदेह, दुबधा, शक

---

१७ राग समाच ताल ३.

चंचल मन निशदिन[1] भटकत है, ।
एजी भटकत है भटकावत है ॥ टेक ॥
ज्यों मर्कट[2] तरु ऊपर चढ़ कर ।
डार डार पर लटकत है ॥ १ ॥ चंचल०
रुकैंत[3] पतन से क्षण विषयण ते ।
फिर तिन हीं में अटकत है ॥ २ ॥ चंचल०
काच के हेत लोभ कर मूरख ।
चिंतामणि को पटकत है ॥ ३ ॥ चंचल०
ब्रह्मानन्द समीप छोड़ कर ।
तुच्छ विषय रस गटकंत[4] है ॥ ४ ॥ चंचल०

१ हर रोज़ २ कपि, बन्दर ३ रुक कर, रुका हुआ होकर ४ गट गट कर पी रहा है

१८ झंझोटी ठुमरी ताल ३.

भजन बिन बिरथा जनम गयो ॥ टेक ॥
बालपनो सब खेल गमायो, योवन काम वह्यो ॥१॥ भ०
बृद्धे राग ग्रसी सब काया, पर वश आप भयो ॥२॥ भ०
जप तप तीरथ दान न कीनो, ना हरिनाम लयो ॥३॥ भ०
ऐ मन! मेरे बिना प्रभु सिमरण, जा कर नरक पयो ।४। भ०

१ विशय वासना में बेह गया २ दूसरे के वश में, दूसरे के सहारे

---

१९ भैरवी ताल ३

मेरो मन रे! राम भजन कर लीजे ॥ टेक. ॥
यह माया बिजली का चमका रे यामें चित नहीं दीजे ॥१॥
फूटे घट में जल न रहावे रे, पल पल काया छीजे ॥ २ ॥
सबहि गांठ पड़ा रह जावे रे, चलत नदी जल पीजे ॥ ३ ॥
इह कारण करो हरि सुमरण रे, भवजल पार तरीजे ॥ ४ ॥

१ शरीर २ संसार समुद्र.

---

२० धनासरी.

मेरो मन रे भज ले कृष्ण मुरारी (टेक)
चार दिनन के जीवन खातर रे कैसी जाल पसारी।
कोई न जावत संग तुम्हारे रे मात पिता सुत[1] नारी ॥ कृ०
पाप कपट कर संचित[2] धनको रे मूरख मौत विसारी।
ब्रह्मानन्द जन्म यह दुर्लभ रे, देत वृथा किम डारी ॥ मे०

१ बेटा २ जमा, इकठ्ठा.

---

२१ भैरवी.

सुनो नर रे राम भजन कर लीजे (टेक)
यह माया बिजली का चमका रे, या में चित्त न दीजे।
फूटे घंट[1] में जल न रहावे रे, पल पल कायां[2] छीजे[3],
सबही ठाठ पड़ा रह जावे रे, चलत नदी जल पीजे।
ब्रह्मानंद रामगुण गावो रे, भवजल[4] पार तरीजे ॥ भजन०

१ घड़ा २ शरीर ३ मुरझाना. घटना ४ दुन्या रूपी समुद्र.

---

२२ राग धनासरी ताल घुमारी

रचना राम बनाई रे सन्तो! रचना राम बनाई ॥टेक.॥
इक विनैसे इक अस्थिर माने, अचरज लख्यो न जाई ॥ रे
काम क्रोध मोह मस्तैर लालच, हरी सुरतैा विसराई ॥ रे०
झूठा तन साचा कर मान्या, ज्युं सुपैन रैनै में आई ॥ रे०
जो दीसे सो सकैल विनासे, ज्युं बादैर की छाई ॥ रे०
नाम रूप कछु रैहन न पावे, छिन में सर्व उड़ जाई ॥ रे०
जिस प्यारे हरि आप पिछाना, तिस सब विधि बन आई ॥ रे०

१ नाश होना २ अहंकार, गरूर ३ हरि की सुरती, ध्यान ४ स्वप्न, ख्वाब ५ रात ६ सब नाश होवे ७ बादल ८ तरह

---

२३ राग सावन ताल दीपचंदी.

मनो! तैं ने राम न जान्या रे (टेक.)
जैसे मोती ओसै का रे तैसे यह संसार।
देखत ही को झिलमैला रे जाँत न लागी वार ॥ मना०

१ हे मन! २ शबनम, साक तोल ३ चमकता है ४ जाती दृष्ट

सोने का गढ़ लङ्क बनायो सोने का दरवार ।
रत्ती इक सोना न मिला रे रावण मरती वार ॥ मना०
दिन गंवाया खेल में रे रैणं गंवाई सोय ।
सूर दास भजो भगवन्ता होनी होय सो होय ॥ मना०

देर नहीं लगाता ५ सोने की लंका ६ खोया ७ रात ८ भगवान को भजो जो होना है सो होने दो (होता रहे)

---

२४ राग नट नारायण ताल दादरा

मनुवा रे नादान ज़री मान मान मान (टेक)
आत्म गंग संग जंग विष्ट में ग़लतानें । मनुवा रे०
शाहंशाही छोड़ के तू क्यों हुवा हैरान । मनुवा रे०
शङ्कर शिव स्वरूप त्याग शवें न वन री जान । मनु०

१ हे मन ! २ कम समझ ३ ज़रा सा ४ जैसे गंगा के साथ पत्थर बहाओ में लड़ाई करते हैं ऐसे तू विष्टा में (गर्क़) गुल्तान हो कर आत्म रूपी गंगा के साथ युद्ध कर रहा है ५ मुर्दा

उदय अस्त राज तेरा तीन लोक साज तेरा फैंक दे अज्ञान। म
हाय ब्रह्मघात करके करे तू खान पान। मनुवा रे०
तू तो रवी रूप राम शोक मोह से काहे काम तिमिर की
सन्तान। मनुवा रे०

६ पूरव पच्छम (पश्चम) तक राज तेरा ७ आत्म हत्या
८ खाना पीना ९ सूरज १० अन्धकार, अर्थात् यह शोक मो-
हादि सब अन्धकार की ११ ठलाद, कबीला, टब्बर हैं.

---

२५ राग नट नारायण ताल दादरा.

मनुवा वे मदारिया नशंग बाज़ी ला (टेक.)
नेशंग बाज़ी ला वे नहंग बाज़ी ला ॥ मनुवा वे०
महल अरू माड़ी उच अटारी दम भर दे निच ढा ॥मनु०
झगड़े झांजे सब कर कोताः अपने आप में आ ॥ मनु०

१ निर्भयता से २ ग्राम रहन होकर ३ ऐ मदारी या
जादूगर मन ४ गिरा दे ५ छोटे, कम अर्थात वैराग्य करदे.

२६ होरी राग जिला काफी

जीआ तोकुं समझ न आई, मूरख तैं उमर गंवाई (टेक)
मात पिता सुत कुटुंब कबीलो, धन जोवन ठकुराई ।
कोई नहीं तेरो तूं न किसी को, सग रह्यो ललचाई,
उमर में तै धूल उड़ाई—जीआ तोकुं० १
राग द्वेष तू किन से करत है एक ब्रह्म रह्यो छाई ।
जैसे स्वॉन रहे काच भुवन में, भौंक भौंक मर जाई ॥
खबर अपनी नही पाई—जीआ तोकुं० २
लोभ लालच के बीच तू लटकत, भटक रह्यो भरमाई ।
तृषा न जायगी मृगजल पीवत, अपनो भरम गंवाई ॥
श्याम को जान ले भाई—जीआ तो कुं० ३
अगम अगोचर अकलंक अरूपी, घट घट रहत समाई ।
सूरश्याम प्रभु तिहारे भजनबिन, कबहु न रूप दिखाई ॥

श्याम को औ लेंखो संदाई—जीआ तो कु० ४

१० पाओ समझो ११ सर्वदा हमेशा

---

९७ राग सिंदोरा ताल दीपचंदी

गुज़ारी उमर झगड़ों में बगाड़ी अपनी हालत है ।
हुवा सारज अपील अपना .अजायब यह वकालत है॥
मुकदमें गैर लोगों के हज़ारों कर दीये फैसल ।
न देखा मिसल अपनी को .अजायब यह .अदालत है॥
दलीलें दे के गैरों पर कीया साबत अमूल अपना ।
दिल अपने का न शक टूटा .अजायब यह दलीलत है॥
बहुत पढने पढ़ाने से हूवा सब इल्म में कांमल ।
न पाया भेद रब्बी का .अजायब यह कमालत है ॥
बना हाफ़ज पढ़े मसले सुनाये दूसरों को भी ।
वैले टूटा न कुफर अपना .अजायब यह मसौलत है ॥

१ दर्लाल बाजी २ सरपस, पूरा ३ मददगार स्वरूप, (आत्मा) ४ किन्तु, लेकिन ५ प्रमाण मसले पढ के सुनाना

तू कर फैसल हसाव अपना तुझे औरों से क्या गोविन्द।
न क़िस्सा .तूँल दे इतना फजूल ही यह तुर्वालत है ॥

६ कवी का नाम ७ लम्बा ८ लम्बा जिकर बढाना

---

२८ राग खमाच ताल दादरा

तेर तीव्र भयो वैराग तो मान अपमान क्या,
जानयो अपना आप तो वेद पुराण क्या,
खुद मस्ती कर मस्त तो फिर मदरा पान क्या,
किंचा देहाभ्यास तो आत्म ज्ञान क्या,
वीतं राग जब भये तो जगत की लोड क्या,
तृणवत जानयो जगत तो लाख क्रोड क्या,
चाँह रजू से बन्धयो तो फिर मरोड़ क्या,
किंचा भ्रान्ति साथ तो विवाद फिर होरँ क्या,

१ बहुत भारी २ राग ३हत ३ चाह (रचाहरा) की रस्सी
४ झगड़ा ५ और अधिक, दूसरा.

२६.

यह पीरें .अजब है दुन्या की और क्या क्या जिन्स अकट्ठी है,
यां माल किसी का मीठा है और चीज किसी की खट्टी है,
कुच्छ पकता है कुच्छ भुनता है पकवान मिठाई फट्टी है,
जब देखा खूब तो आखर को न चूल्हा भाड़ न भट्टी है,
.गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है,
हम देख चुके इस दुन्या को यह धोखे की सी टट्टी है॥ १
कोई ताज खरीदे हम हंस कर कोई तखत खडा बनवाता है,
कोई रो रो मातम करता है कोई गोरें पडा खुदवाता है,
कोई भाई बाप चचा नाना कोई बाबा पूत कहाता है,
जब देखा खूब तो आखर को नहीं रिश्तः है नहीं नाता है,
.गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड पानी मट्टी है,
हम देख चुके इस दुन्या को सब धोखे की सी टट्टी है॥ २
कोई बाल बढाये फिरता है कोई सिर को घोट मुडाता है
कोई कपडे रंगे पैहने है कोई नंग मनगा आता है

१ मंडी २ कबर ३ समरुन्द ४ शोर शराबा.

कोई पूजा कथा बखाने है कोई रोता है कोई गाता है,
जब देखा खूब तो .आखर को सब छोड़ अकेला जाता है,
.गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है,
हम देख चुके इस दुन्या को सब धोखे की सी टट्टी है ॥ ३
कोई टोपी टोप सजाता है कोई बांद फिरे .अमामा है,
कोई साफ बरहना फिरता है नें पगड़ी नै पाजामा है,
कमखाब गर्ज़ी और गाढ़े का नित कज़ीया है हंगामा है,
जब देखा खूब तो आखर को न पगड़ी है न जामा है,
.गुल शोर बगोला आग हवा और कीचड़ पानी मट्टी है,
हम देख चुके इस दुन्या को सब धोके की सी टट्टी है ॥ ४

५ पगड़ी ६ नगा ७ नहीं ८ झगड़ा ९ लड़ाई.

३०

जो खाक से बना है वह आखर को खाक है ॥ टेक ॥
दुन्या से जबकिः औलिया अरु अंबीया उठे ।

१ बड़े बड़े पैगम्बर, ऋषी २ नबी लोग, बड़े बड़े आत्म ज्ञानी महात्मा.

अजमाम पाक उन के इसी खाक में रहे।
रूहें हैं खूब जान में रूहों के हैं मजे।
यह जिस्म से तो अब यही साबत हुआ मुझे ॥जो०॥१

वह शख्स थे जो सात विलायत के बादशाह।
हशमत मे जिन की अर्श से ऊंची थी बारगाह।
मरते ही उन के तन हुवे गलीयों की खाके राह।
अब उन के हाल की भी यही बात है गवाह ॥जो० ॥२

किस किस तरह के हो गये महबूब कजकुलाह।
तन जिन के मिसलें फूल थे और मुह भी रश्के माह।
जाती है उन की कबर पै जिस दम मेरी निगाह।
रोता हूं जब तो मै यही कह कह के दिल में आह॥जो०॥३

३ जिस्म की जमा, शरीर ४ जीवात्मा ५ इज्जत, मरतबा, विभूती ६ आकाश ७ रास्ते की धूल (मिट्टी) ८ प्यारे माशूक ९ टेहडी टोपी पेहनने वाले, जो सुन्दर पुरुष अपनी सौन्दर्यता को बढ़ाने के लीये पेहना करते है १० मानन्द, सादृश्य ११ चाद से ईर्षा करने वाला, अर्थात चाद से भी अति सुदर — —

भक्ति अथवा इशक़.

१ राग भैरवी ताल दादरा.

.अक़ल के मदरस्से से उठ .इशक़ के मैकदे में आ।
जामे शरावे वेख़ुदी अव तो पीया जो हो सो हो ॥ १
लाग की आग लग उठी पम्बा सां सव जल गया।
रख़्ते वजूदओजानओतन कुच्छ न वचा जो हो सो हो ॥ २
हिजँर की जम मुसीवतें .अर्ज की उसके रूवरू।
नाज़-ओ-अदा से मुस्को कहने लगा जो हो सो हो ॥ ३

१ (प्रेम के) शराव खाना २ वेख़ुदी की शराव का प्याला ३ प्रेम की लाग (लटक) ४ रूयी के फम्बे की तरह ५ प्राण और तन रूपी सव असवाव ६ शरीर और प्राण (रूपी असवाव कुच्छ न बचा) ७ जुदायेगी ८ नाज़ और नख़रे से ९ हस कर.

इशक में तेरे कोहे[10] गम सिर पै लीया जो हो सो हो।
ऐश-ओ-नेशाते[11] ज़िन्दगी सब छोड दीया जो हो सो हो॥४
दुन्या के नेकओबंद[12] से काम हम को न्याज़[13] कुच्छ नही।
ऑप[14] से जो गुजर गया फिर उसे क्या जो हो सो हो॥८

१० गम या शोक का पहाड ११ जिन्दगी की खुशी आनन्द १२ अच्छे और बुरे १३ कवि का नाम १४ जान हथली पर रखे रखना, अर्थात जो अहकार को मारे हुए हो अपने आप से गुजर चुका हो॥

---

२ राग खमाच ताल दादरा

१ कलीदे[1] इशक को सीने[2] की दीजीये तो सही। टेक.
मचा के लूट कभी सैर कीजीये तो सही॥
२ करो शहीद खुदी[3] के स्वार को रो कर।
यह जिस्मे दुल्दुले[4] बेपार कीजीये तो सही॥

१ प्रेम की कुजी २ दिल ३ अहकार ४ उस घोडे को कहते जो हसन हुसैन [मुसलमानो के पैगम्बर] की लडाई में मरने के पश्चात अपने स्वार से खाली घर में आगया था जिस खाली घोडे को लडाई से वापस आते देखकर उसके [हसन के] सम्बन्धी रोये

३ जला के खानाओअस्वाब मिस्ल नीरो के।
मज़ा स्रोदें का शोलों का लीजीये तो सही॥

४ है ख़ुम तो मैं से लबालब यह तिशनों कामी क्यों।
लो तोड़ मोहरे ख़ुदी मै भी पीजीये तो सही॥

५ उड़ा पतंग महब्बत का चेर्ख़ से भी दूर।
खिरद की डोर को अब छोड़ दीजिये तो सही॥

६ मज़ा दिखायेंगे जो कहदो राम मैं ही हूं।
ज़मीन ज़मान को भी यूं राम कीजीये तो सही॥

५ घर, जायदाद ६ एक बादशाह का नाम है जो अपने मुलक को आग लगा कर खुद पहाडी पर चढ़ कर दूर से लोगों को जलते हूये देखकर अत्यन्त खुशी मनाया करता था और खुद राग रंग मे लगा रहता था ७ राग और आग का ८ मटका ९ शराब १० पियासा गला ११ आकाश १२ अकल १३ राम स्वामी जी का तखल्लुस १४ ताबियादार, गुलाम

———:०:———

१ दिल को प्रेम की कुजी तो दो और अन्दर के खज़ाना की लूट मचार कर कभी सैर तो करिये,

२ देह का स्वार जो अहकार [इस को] मार कर शहीद [जीवन मुक्त] तो दरा और शरीर को स्वार रहत घोडे की तरह करिये

३ नारो बादशाह की तरह अपना घर बार अस्वाब [कुल अहंकार के मुल्क को जला कर] [अपने स्वरूप की पहाडी पर चढ कर] इस आग का और अपने [स्वरूप के] राग रग का मजा तो लो

४ दिल रूपी मटका [आत्मानन्द रूपी] शराब से लबालब भरा हूवा पास है तो फिर प्यासा गला क्यों रखना इस अहकार की मोहर को तोड कर शराब भी पीजीये तो सही

५ प्रेम का पतग [अर्थात् दिल] आकाश से भी दूर उड गया अब अकल की रस्सी को ढीला छोड देना चाहिये ताकि प्रेम में मेहव [मगन] हुवा दिल फिर अकल होश में न आजाय

६ आत्मानन्द [मजा] खुब दखायगे [अनुभव होगा] अगर आप खुद मनन करो "कि राम मैं खुद हू" ऐसे अभ्यास से कुल देश काल को अपना गुलाम ताबियादार कीजीये तो सही

——*——

३. राग भैरवी ताल दादरा.

ऐ दिल तू राहे इश्क़¹ में मरदानाः हो मरदाना हो ।
क़ुर्बान कर अपनी जान को जानाना² हो जानाना हो ॥१॥
तू हज़रते इनसान है लाज़म तुझे ईर्फ़ान³ है ।
हरगिज़ न तू हैवान सा दीवाना⁴ हो दीवाना हो ॥२॥
हर गम से तू आज़ाद हो खुर्सन्द⁵ हो और शाद⁶ हो ।
हर दो जहां के फिकर से बेगाना⁷ हो बेगाना हो ॥३॥
कर तर्क ज़ोहर्द⁸ ज़ोहदा⁹ मजलस¹⁰ नशीं रिंदो का हो ।
दीवानगी¹¹ से दर्गुज़र फरज़ाना¹² हो फरज़ाना हो ॥४॥
मै तू का मनशा अक़ल है लाज़म है तुझ को क़ादरी¹³ ।
पी कर शरावे बेखुदी मस्ताना हो मस्ताना हो ॥५॥

१ प्रेम के रास्ते में २ आशक़ अर्थात जान देने वाला ३ आत्म ज्ञान ४ पागल ५ आनन्द ६ खुश ७ फिकर रहत हो ८ तप तपस्या ९ तपी, कर्म काण्डी १० मस्तों की सभा में बैठने वाला धन ११ पगलापन या बेवकूफी १२ आत्मवित, अकलमन्द १३ कवी का नाम है.

---

४ लावनी सवैया

समझ बुझ दिल खोज प्यारे .आशक़ हो कर सोना क्या॥
जिन नैनों से नींद गवाई तकिया लेफ बछौना क्या ॥
रूखा सूखा राम का टुकडा चिकना और सलूना क्या ॥
पाया है तो कर ले शांदी पाई पाई पर सोना क्या ॥
कहत क़ुमाल प्रेम के मार्ग सीस दिया फिर रोना क्या ॥

१ दिल में विचार कर के २ खुशी ३ कबी का नाम ४ रास्ता

---

५ राग आसावरा ताल तान

कर क्या तुझ को मैं बादे बहार ॥ टेक ॥
आग लगे उस गुले गुल्दान को पास न होवे मेरा यार॥ क०
लकड़ी जल कोयला भयी रे कोयला जल भयी राख।
मैं पापन ऐसी जली रे कोयला भयी हू न राख ॥ कर०
कागा कुरंग न छेडियो रे सब चुन खायो मास।
दो नैनन मत छेडियो रे पीया मिलन की आस ॥ कर०

१ बाग के फूल २ कौवा ३ आसका ढेला या आसकी पुतली ४ आंखें

नैनन की कर कोठरी रे पुतली दियों रे बछा।
पलकन की चिक तान के रे साजन लीयो रे बुला॥करूं०
आई बसन्त खिले हैं गेन्दू और कंवल के फूल।
भंवर तो सारे शाँद हुए हैं दिल मेरा है मलूल॥ करूं०

५ खुश ६ उदास

---

६ सारी राग जोगी.

मेरे राना जी मैं गोविन्द गुण गाना॥ टेक.॥
राजा रूठे नगरी राखे वह अपनी, मैं हर रूठे कहां जाना॥मे०
डबिया में काला नाग जो भेजियों, मैं ठाकर करके माना॥मे०
राना ने भेजियो ज़हर प्यालड़ा, मैं अमृत करपी जाना॥मे०
भयी रे मीरां प्रेम दीवानी, मैं सांवरया वर पाना॥मे०

१ नाराज हो तो २ पियाला ३ पागली

---

७ राग समाज ताल दादरा

अब तो मेरा राम नाम दूसरा न कोई (टेक.)
माता छोडी पिता छोड़े छोड़े सगा सोई ।
साधू संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥ अब तो० १
सत देस दौड़ आई जगत देख रोई ।
प्रेम आंसू डार डार अमर वेल बोई ॥ अब तो० २
मारग में तारण[२] मिले सत राम दोई ।
संत सदा शीश[३] पर राम हृदय होई ॥ अब तो० ३
अंत में से तंत[४] काढयो, पिछे रही सोई ।
राणे भेज्यो विष[५] का प्याला, पीते मस्त होई॥ अब तो०
अब तो बात फैल गयी, जाने सब कोई ।
दास मीरां लाल गिरधर, होनी सो होई॥ अब तो० ५

१ सर्वदा रहने वाली २ पार करने वाले, बचाने वाले, तराने वाले ३ सिर ४ तत्व, मग्य वस्तु से मुराद है ५ ज़हर

८. राग कालगड़ा ताल धुमाली.

माई मैंने गोविन्द लीना मोल　(टेक.)
कोई कहे हलका कोई कहे भारी, लीया तराजू तोल॥मा०
कोई कहे सस्ता कोई कहे मैहंगा, कोई कहे अनमोल[1] ॥ मा०
ब्रिन्द्रा बन की कूंज गली में, लीया बजा के ढोल ॥ मा०
मीरां कहे प्रभु गिरधर नागर, पूर्व जन्म के बोल ॥ मा०

१ बे कीमती.

९ देश ताल तेवरा

जुंदीं[1] आमदे आमदे .इशक का मुझे दिल ने मुज़ेदह[2] सुना दीया ।
ख़िंर्दो हवासो[3] शकेब ने वुहीं कूँसे[4] कूच बजा दीया ।
जिसे देखना ही मुहाल[5] था न था जिस का नामो नशां कहीं
सो हर एक ज़र्रे में इशक़ नें मुझे उस का जलवा दखा दीया

१ प्रेम का आना　२ ख़ुश ख़बरी　३ .अक़्ल अरु होश　४ नक़ारा चलने का　५ मुशकल..

३ करूं क्या वियान मैं हर्मनशीं असर उस की लुतफे नगह का
कि तऽय्यनात की क़ैद से मुझे एक दम में छुड़ा दीया ॥

४ यह जो नक़शेपा की तरह रही थी नमूद अपने वर्जूद की ।
सो कशश से दामने नाजकी उसे भी ज़मीन् से मटा दीया ॥

५ तेरी नासिहों यह चुनां चुनीं कि है खुद पसन्दी के संबंकीन्
न दिखायी देगी तुझे कहीं कभी जो किसी ने सुझा दीया ॥

६ तुझे .इशक़े दिल से ही काम था न कि उस्तेंखानों का फूंकना।
ग़ज़ब एक शेर के वास्ते तू ने नैस्तों को जला दीया ॥

७ यह निहॉल शोऽलाये हुसन का तेरा बढ़ के सर बफ़लक हुवा।
मेरी कायेहस्ती ने मुर्तइल हो उसे यह नश्वो नंमा दीया॥

६ साथ बैठने वाला ७ हदूद, परिछिन्नता ८ शरीर
९ बड़ा नाज़ुक, या पतला पल्ला १० नसीहत करने वाले
११ क्यों जिस तरह १२ नजदीक समीप १३ हड्डीयाँ १४ अगल
१५ वृक्ष, बूटा, मुराद ताज़: १६ आकाश तक १७ शारीरक हस्ती
१८ जल कर या भड़क कर १९ पाला, भड़काया.

पंक्तिवार अर्थ.

१ जिस समय मेरे अन्दर अपने स्वरूप के इशक़ (प्रेम) के आने की खुशखबरी दिल में सुनाई तो उस समय .अक़्ल और

होश और सबर ने मेरे अन्दर से निकलने का नक्कारः बजा दीया (अर्थात अंदर से होश हवास निकलने लगे)

२ (प्रेम आने से पैहिले) जिसको देखना मुशकल था और जिस का नाम और नशान नजर नहीं आता था उसका हर एक अणु मात्र में भी इस .इश्क (प्रेम) ने मुझे दर्शन अब करा दीया.

३ ऐ प्यारे ! (साथी) मैं उस अपने स्वरूप की जगह के लुतफ अर्थात आनन्द के असर को [आत्मा के अनुभवको] क्या ज़िकर करू कि उस [अनुभव] ने मुझे सर्व बन्धनो की कैद से एक दम में छुड़ा दीया [सर्व बन्धनों सु मुक्त कर दीया].

४ जमीन पर पाओं (पाद) के नकश की तरह जो अपने शरीर की परतीती [दृश्य मात्र] थी सो उस स्वरुप [यार] के नाज़क पल्ले की कशश [अर्थात अनुभव के बढने] ने उस को भी पृथ्वि से मिटा दीया.

५ ऐ नसीहत करने वाले ! तेरी यह 'क्यों कद' खुदपसन्दी या अहकार के सबब से हैं अगर किसी ने तुम को सुझा दीया अर्थात अनुभव करा दीया तो यह क्यों किस तरह (अर्थात क्यों और कैसे होश उड़ जाते हैं इत्यादि) तुम को भी नहीं दखाई देंगे.

१ इस के दो मतलब हैं:—१ ऐ ब्रह्म साक्षातकार के जिज्ञासू !

तुझ को दिल में इश्क़ (प्रेम) भड़काना चाहिये था और न कि अज्ञानी तपस्वीयों की तरह हठ योग इत्यादि से तन बदन को सुखाना और अस्थियों को जलाना था। बड़े आश्चर्य की बात है कि तूने एक शेर (दिल) के काबू करने के वास्ते सारे (इस) जंगल (अर्थात इस शरीर को जिस मे यह दिल रूपी शेर रहता है) को मुफ़्त में आग लगादी, मुफ़्त मे शरीर को जर्जरी भूत कर दीया

दूसरा अर्थ (२) ऐ यार ! माशूक ! (प्रमात्मन्) ! तुझे हमारा दिली इश्क़ (प्रेम) लेना चाहिये था और न कि हड्डियों और शरीर को जलाना और बरबाद करना था ॥ बड़ा आश्चर्य है की तू ने हमारा दिल लेने के बजाये हमारे शरीर रूपी बन को मुफ़्त मे जला दीया (तबाह कर दीया)

७ यह तेरी खूबसूरती की अग्नि (दमक) की ताज़ी लाट आकाश तक उपर बड़ गयी (भड़क उठी) और मेरे शरीर रूपी तृण (घास) ने उस से जल कर उस आग को और ज्यादा बढ़ा दीया (अर्थात उस अग्नि को और ज्यादा भड़का दीया)

—

१०. सोहनी ताल तेवरा.

खबरे तहय्यरे .इशक़ सुन न जुनूं रहा न परी रही ।
न तो तू रहा न तो मैं रहा जो रही सो बेखबरी रही ॥
शाहे बेखुदीने .अता कीया मुझे जब लबासे ब्रैहनगी ।
न खिरॅद की बख्यागिरी रही न जुनूं की पर्दादॅरी रही ॥
वह जो होशो .अक़्लो हवास थे तेरी यूं निगह ने उड़ा दीये।
कि शराबे सॅद क़दहे आर्ज़ू खुमे दिल में थी सो भरी रही
चली सिमते गैब से इक हवा कि चमन ग़रूर का जल गया
बले शम्मे ए-खाना जला के सब गुले सुर्ख सा ही हरी रही॥
वह .अजब घड़ी थी कि जिस घड़ी लीया दॅर्स नुसॅखाए .इशक़ का ।

१ .इशक़ की हैरानी की खबर सुन कर २ बे खुदी के बादशाह ३ बख्शा ४ नंगे पन का लिबास ५ .अक़्ल ६ काट फाट ७ ढपे रहना ८ सौ १०० प्यालो की शराब की ख्वाहश ९ दिल का मटका १० लेकिन ११ घर का दीपक १२ लाल पुष्प की तरह १३ सबक़ १४ प्रेम के नुसखे का,

कि किताबे अक़्ल की ताक़ पे जो धरी थी यूंही धरी रही॥

८ तेरे जोशे हेरते हुस्न का हुवा इस क़दर से असर यहा।
न तो आईने में जेला रही न परी में जल्वा गरी रही॥

७ कीया ख़ाक आतशे इश्क़ ने दिले बेन्वाये सराज को।
न हज़ेर रहा न ख़तर रहा जो रही सो बेख़तरी रही॥

१५ सौन्दर्यता की हैरानी का जोश १६ साफ़ शफ़ाफ़ पना
१७ प्रेम अग्नि १८ डर १९ ख़ौफ झिजक ० बेख़ौफी निडरपना

पक्तिवार अर्थ

१ इश्क़ की अजीब ख़बर सुनने से न तो दुन्यावी पगला पन रहा न ससारक ख़ूबसूरती (परि) रही और इस इश्क़ के आन से न तो तू रहा और न मैं रही जो कुच्छ रहा वह बेख़बरी रही

२ अहकार रहत बादशाह (आत्मा) ने जब मुझ को नगाहि ख़ास बख़्शा (अर्थात जब मैं माया के पर्दों से रहित हुवा) तो अक़्ल का नंगेपन (काट फाट) और पगले पन का छुपे रहना न रहा

३ ऐ यार (स्वस्वरूप) ! यह जो होश भर अक़्ल भर इल्म

से तेरी नगाह से उड़ गये [अर्थात तेरे अनुभव से ,अकल इ-त्यादि भाग गयी] और सैकड़ों किस्म की ख्वाहश रूपी प्यालों की शराब जो दिल रूपी मटके में भरी हुई थीं वह यूं की त्यूं भरी रही [अर्थात ख्वाहशें पूरे होने बगैर, नष्ट होगई]

४ अदृश्य देश से ऐसी एक हवा चली कि अहंकार का तमाम बाग जल-गया बलकि घर [अन्त कर्ण] के दीपक [ज्ञान] ने सब जलाकर आप स्वयं लाल [अनार के] फूल की तरह हरा रहा [ताजा रहा]

५ वह अजीब घड़ी थी कि जिस घड़ी इश्क़ (प्रेम) का सबक़ पढा था कि जिस के आते मे अक़्ल की कताब तख्ते पर धरी की धरी रही

६ ऐ यार ! (स्वस्वरूप) ! तेरे सौन्दर्यता के जोश का असर इस कदर हुवा कि शीशे की सफाई अर [माया रूपी] परी की नुमाई (अर्थात दृश्य आना) सब जाती रही

७ इश्क़ की आग ने सराज (कवी का नाम है) को खाक कर दीया। फिर न कोई डर रहा न खतरा रहा। जो कुच्छ रहा वह बेखतरी (निर्भयता) रही.

———:०:———

११ राग माड ताल दादरा

.इशक़ आया तो हम ने क्या देखा
जलाये यार बरमला देखा।
आतशे शौक़ ने दीया है फूक
जौनो दिल और जिगर जला देखा ॥
अपनी मूरत का आप है .आशक़
आप पर आप मुबतला देखा ॥
होके ज़ाहिर ज़हूर में नद हुआ
हम ने उन का यह हौसला देखा ॥
जो गया कूए यार में न बचा
कूचाये यार करबला देखा ॥
जब ख़ुदी गयी तो सब दूई गयी

१ स्वरूप का दीदार (अनुभव) सन्मुख २ जिज्ञासा की भड़क (आग) ३ जान और दिल ४ फसा हुआ, .आशक़, ५ प्रत्यक्ष ६ यार की गली, स्वस्वरूप के रास्ते में ७ शहीद होने की जगह ८ अहंकार

बखुदी आप को ख़ुदा देखा ॥
मौजे दरिया की तरह उस को
नहरे वैहदत का आशना देखा ॥

९ मुझ भी हँस्स् १० दरिया की लैहर ११ एकता के समुद्र
१२ दोस्त, वाक़ूफ, ज्ञानवान.

कहा लड़ाते हो क्यों हम से ग़ैर को हरदम? ।
कहा कि तुम भी तो हम से निग़ाह लड़ाते हो ॥
कहा जो खोले दिल अपना, तो उस ने हंस हंस कर।
कहा ग़लत है यह बातें जो तुम बनाते हो ॥

१ दरवाजा २ शोर ३ दूसरा ४ दृष्टि, नज़र ५ अपने
दिल का हाल

कहा जताते हो क्यों हम को हर रोज़ नाज़ो अंदा ?।
कहा कि तुम भी तो चाहत हमें जताते हो ॥
कहा कि अर्ज़ करें, हम पै जो गुज़रता है ?।
कहा खबर है हमें! क्यों ज़बां पै,लाते हो ॥
कहा कि रूठे हो क्यों हम से, क्या सबब इस का ?।
कहा सबब है यही, तुम जो दिल छुपाते हो ॥
कहा कि हम नहीं आने के यहां; तो उस ने नैज़ीर।
कहा कि सोचो, तो क्या आप से तुम आते हो ॥

६ हर दिन ७ नखरे टखरे ८ ख्वाहश, इच्छा ९ गुस्से १० कवि का नाम.

---

१३ राग भैरवी ताल गज़ल.

तमाशाये जहान है और भरे हैं सब तमाशाई।
न सूरत अपने दिलबर सी, कहीं अब तक नज़र आई ॥
न उस का देखने वाला, न मेरा पूछने वाला।

इधर यह बेकसी अपनी, उधर उस की वह तनहाई ॥
मुझे यह धुन, कि उस के तालयों में नाम हो जावे।
उसे यह कैद, कि पहिले देख लो है यह भी सौदाई॥
मुझे मतलूब दीदार उस का, इक खिल्वत के आलम में।
उसे मंज़ूर, मेरी आज़मायश मेरी रुसवाई ॥
मुझे धड़का, कि आज़ुर्दाः न हो मुझ से तुच्छ दिल में।
उसे शिकवा, कि तूने क्यों तबीयत अपनी भटकाई ॥
मैं कहता हूं, कि तेरा हुस्न आलम सोज़ है जानां!।
वह कहता है, कि क्या हो गर करूं मैं जुल्फ़ आराई॥
मैं कहता हूं, कि तुझ पर इक ज़माना: जान देता है।

१ कमज़ोरी, बे बसी २ अकेला पन ३ लगन ४ जज्ञासु
५ ख्याल, तरंग ६ जरूरत, इच्छा ७ दर्शन ८ एकान्त, तनहाई
९ हालत, समय १० ख़ुआरी ११ नाराज़, खफा १२ शकायत
१३ सुंदरता १४ जगत, दुन्या को जलाने वाला १५ ऐ प्यारे !
१६ अपने नक्श को सजाना, अपने बालों को सजाना.

वह कहता है, कि हां वे इन्तहा हैं मेरे शैदाई ॥
मैं कहता हूं, कि दिल्बर! मैं नहीं हूं क्या तेरा आशक़?
वह कहता है, कि मैं तो रखता हूं ऐसी ही रानाई ॥
मैं कहता हूं, कि तूं नज़रों से मेरी क्यों हुवा ओझले (ग़ायेब)।
वह कहता है, यही अपनी अदा मुझ को पसिंद आई॥
मैं कहता हूं, तेरा यह हुसन और देखूं न मैं उस को।
वह कहता है, कि मैं खुद देखता हूं अपनी ज़ेबाई ॥
मैं कहता हूं, कि हद पर्दा की आखर ताबके परदाः।
वह कहता है, कि कोई जब तक नहो अपना शनासाई ॥
मैं कहता हूं, कि अब मुझ को नहीं है ताबे फ़ुर्कत की।
वह कहता है, कि .आशक़ हो के कैसी ना शकेबाई॥

१७ .आदाब भक्त १८ खुश रफ्तारी, आनन्द से मटकना, कृता चजा १९ छुपा २० हर्कत, नखरा टखरा २१ सज़ावट, खुबसूरती २२ कब तक २३ अपने आप को पैहचानने वाला, आत्मवित २४ जुदायगी के सहने की ताक़त २५ बे सबरी.

मैं कहता हूं, कि सूरत अपनी दखला दीजीये मुझ को।
वह कहता है, कि सूरत मेरी किस को देगी दिखलाई?॥
मैं कहता हूं, कि जाँनां! अब तो मेरी जान जाती है।
वह कहता है, कि दिल में याद कर क्योंकर थी वह आई॥
मैं कहता हूं, कि इक झलकी है काफी मेरी तसँकीं को।
वह कहता है, कि बामे तूर पर थी क्या नेदा आई?॥
मैं कहता हूं, कि मुझ बेखबर को किस तौर खबर आये।
वह कहता है, कि मेरी याद की लज़्ज़त नहीं पाई॥
मैं कहता हूं, यह दामे ईशक़ बेढब तू ने फैलाया।
वह कहता है, कि मेरी खुदँ पसंदी मेरी खुदराई॥

२६ ऐ प्यारे २७ तसल्ली २८ तूर के पहाड की चोटी पर [जहाँ मूसा को ज्ञान मिला था और जहां ईश्वर आग की लाट में मूसा के आगे प्रगट हुवा] अर्थात ज्ञान की शिखर पर २९ आवाज़ ३० स्वाद ३१ प्रेम का जाल, इशक़ का फन्द ३२ अपनी मर्ज़ी ३३ अपनी ही बनाई हुई, अथवा खुबसूरत की हुई, अपनी सजाई हुई

राग परज ताल धुमाली १४

हमेन हैं इशक़ के माते हमन को दौलतां क्या रे ।
नहीं कुच्छ माल की परवाह किसी की मिन्नतां क्या रे ॥१॥
हमन को खुशक रोटी बस कमर को यक लंगोटी बस ।
सिरे पे एक टोपी बस हमन को इज़्ज़तां क्या रे ॥२॥
क़बा शाला वज़ीरों को ज़री ज़रबफ़त अमीरों को ।
हमन जैसे फ़क़ीरों को जगत की नेऽमतां क्या रे ॥३॥
जिन्हों के सुख्ने स्याने हैं उन्हीं को ग़ल्के माने हैं ।
हमन .आशक़ दीवाने हैं. हमन को मजलसां क्या रे ॥४॥
कीया हम दर्द का खाना. लीया हम भस्म का बाना ।
बसी बस शौक़ मन भाना किसी की संसहल्तां क्या रे॥५॥

राग गारा ताल दादरा १५

हम कूचे दरे यार से क्या टल के जायेंगे? ।
हम न पथ्थर हैं फिसलने कि फिसल जायेंगे ॥ १ ॥
वसले सनम को छोड़ कर क्या काबे जायेंगे।
वहां भी वही सनम है तौ क्या मुंह दखायेंगे ॥२॥
हम अपने कूए यार को काबा बनायेंगे।
लैलीं बनेंगे हम उसे मजनूं बनायेंगे ॥ ३ ॥
गैरों से मत मिलो कि सितमगर बनायेंगे।
हम से मिला करो तुम्हें दिलबर बनायेंगे ॥ ४ ॥
आसन जमाये बैठे हैं दर से न जायेंगे।
हम कहकशां बनेंगे तुम्हे माहरू: बनायेंगे ॥ ५ ॥
बैठे हैं तेरे दर पै तो कुच्छ करके उठेंगे।

१ यार के कूचे के दरवाजे से २ यार (अपने स्वरूप) की मुलाक़ात ३ प्यारा यार (अपना स्वरूप) ४ कूचा, गली ५ नाम है ६ ज़ालम, .ज़ुलम करने वाला ७ दूधिया रास्ता जो रातको आकाश में नजर आता है (milky path) ७ चांद सूरत

या वस्ल ही हो जायेगी या मर के उठेंगे
८ मुलाक़ात.

राग गारा ताल धुमाली १६
(वर वज़न सब से जहां में अन्छा)

कुंदन के हम डले हैं, जब चाहे तू गला ले।
बावर न हो, तो हम को ले आज आज़माले॥
जैसे तेरी ख़ुशी हो, सब नाच तू नचाले।
सब छान बीन कर ले, हर तौर दिल जमाले॥
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा है। } टेक
य;; न. या ह वाह है और यूं भी वाह वाह है॥१॥ }
या दिल मे अब खुश होकर कर हमको प्यार प्यारे।
या तेग़ खैंच ज़ालिम टुकड़े उड़ा हमारे॥
जीता रखे तू हम को या तन से सिर उतारे।

१ यक़ीन, विश्वास, २ तरह, तरीक़ा ३ मर्ज़ी ४ तलवार ५ ज़ुल्म करने वाला, बेरहम सताने वाला

अब तो फ़क़ीर आशक़ कहते हैं यूं पुकारे—राज़ी है० २
अब दर[6] पे अपने हम को रहने दे या उठा[7] दे।
हम इस तरह भी खुश हैं रख या हवा बना दे।
आशक़ हैं पर क़लन्दर चाहे जहां बठा दे।
या अर्श[8] पर चढ़ा दे या खाक में रुला दे—राज़ी है० ३

६ दरवाज़ा, अर्थात निकट अपने ७ दूर फेंक दे, परे करदे ८ आकाश, आस्मान.

राग सधोरा ताल दीपचदी १७

(टेक) अरे लोगो! तुम्हें क्या है? या वह जाने या मैं जानूं
वह दिल मांगे तो हाज़र है, वह सिर मांगे तो बेसिर हूं।
जो मुख मोड़ूं तो काफ़र हूं, या वह जाने या मैं जानूं ॥ १ ॥
वह मेरी बग़ल[1] छुप रहता मैं उस के नाज़[2] सभी सहता।
वह दो बातें मुझे कहता, या वह जाने या मैं जानूं ॥२॥
वह मेरे खून का प्यासा, मैं उस के दर्द का मारा।

१ कक्षराल २ नखरे.

दोनोंका पन्थ है न्यारा, या वह जाने या मैं जानूं ॥३॥
मूआ आशक़ द्वारे पर, अगर वाक़फ नहीं दिलवर ।
अरे मुल्लाः सपारा पढ़, या वह जाने या मैं जानूं ॥४॥

३ रास्ता ४ कल्मा

राग मिश्रेरा ताल दीपचंदी १८

१ रहा है होश कुच्छ बाक़ी उसे भी अब नेबेड़े जा ।
यही आहंग ऐ मुतरबे पिसर टुक और छेड़े जा ॥
२ मुझे इस दर्द में लज़्ज़त है ऐ जोशे जुनूं अच्छा ।
मेरे ज़ख्मे जिगर के हर घड़ी टांके उधेड़े जा ॥
३ उखड़ना दम कलेजा मूंह को आना ज़ार बेताबी ।
यही साहल पै आना है लगे है पार बेड़े जा ॥
४ है नाल्हा ज़ार ने पाया सुराग़ नाक़ः-ए-लैली ।

१ खतम करते जा २ राग सुर ३ गवय्या, इस राग गाने वाला ४ निजानंद की मस्ती का जोश ५ दिलके घाव ६ बेताबी का दर्द, रोना ७ किनारा ८ रोने का शोर ९ लैली (माशूक़ा) के घर का पता.

मुबादा कैसे आ पहुंचे हुंदी को ज़ोर छेड़े जा ॥
५ कहां लज्ज़त कहां की दर्द वफ़ा कैसा ज़खमी कौन ।
८ हक़ीक़त पर पहुंचते ही मिटे क्या खूब झेड़े[१३] जा ॥
६ अरे हद नाखुदा पतवार मुड़ ! ले टूट पुर तूफ़ां ।
अड़ा ड़ा धम अड़ा ड़ा धम करारे को थपेरे जा ॥
७ हैं हम तुम दाखले दफ़तर खुंमे मै में है दफ़तर गुम ।
न मुजरम मुदये बाक़ी मिटे क्या खुश बखेड़े जा ॥

१० शायद ११ मजनूं १२ ऊंट की धकेलने, की आवाज अर्थात ऊंटको चलाये चल १३ सब झगड़े कजीये १४ बेड़ी का मल्लाह (मांझी) १५ बेड़ी को मोड़ने (घुमाने) की चर्खी १६ किनारे १७ आनन्द रूपी शरावका मटका.

पंक्तिवार अर्थ.

१ ए प्यारे ! (आत्मा) ! अगर कुच्छ दुन्या की होश बाक़ीरही है तो वह भी गुम करदे, ऐ राग़ी (गवय्ये) ! यही सुर छेड़े जा.

२ मुझे इस दर्द में लज्ज़त है क्योंके यह दर्द अपने स्वरूप को याद दिलाती है इस वास्ते ऐ प्यारे जोश (मस्ती) मेरे जिगर के टाके (मेरे अन्त करण के संशये) हर घड़ी उधेड़े (तोड़े) जा.

३ दम घुटता है तो उखड़ने दे, कलेजा मुंह को आता है तो आने दे, बेहूशी होती है तो हो, क्योंकि हम ने इसी (दर्द के) किनारे पर आना है.

४ क्योंकि मजनू के ज़ार ज़ार रोने ने ही लैली के घर का पता पाया, इसवास्ते ऐ ऊंट वाले ऊंट को बढ़ाये जा ताकि कहीं मजनू न पीछे से आजाये [क्योंकि जिस समय माशूक़ (मज़ा) ने लैली को मिल जाना है [illegible] माशूक़] दर ऐसा है तो फिर

५ कहां लज्जा, कहां दहा, कहां [illegible] [illegible] [illegible] क्योंकि अमल तत्व पर पहुंचते ही यह सब मिट जाते हैं.

६ अरे बेड़ी के मल्लाह [शरीर के अहंकार] परे हट, पतवार मुड़ता है तो मुड़ने दे, तूफ़ां टूट पड़ता है तो टूटने दे, और तूफ़ा के ज़ोर से अगर किनारे टूट कर पानी में धम अड़ाड़ा धम कर के गिरते हैं तो गिरने दे.

७ क्योंकि उस समय हम तुम दाखल दफ्तर हो जाते हैं और निजानन्द के मटके (अन्त कर्ण) गुम हो जाते हैं, उस समय न

मुदये मुलरम कोई (द्वैत) वाकी रहता है, बलकि खुशी ही खुशी प्रगट होती रहती है, वा आनन्द ही आनन्द चारों तरफ बिखर जाता है ॥

राग तिलंग ताल दादरा १९

इक ही दिल था सो भी दिलबर ले गया अब क्या करूं ।
दूसरा पाता नहीं । किस को कहूं अब क्या करूं ॥१॥
ले चुका था जानेजानां जां को पहिले हाथ से ।
फिर भी हल्के कर रहा । किस को कहूं अब क्या करूं ॥२॥
हम तो दर पर मुन्तज़र थे तिश्नगान-ए-दीदार के
पहुंचते बिस्मिल कीया । किस को कहूं अब क्या करूं ॥३॥
याददाशत के लीये रहता था फोटो जिस्मो जां ।
वह भी ज़ायल कर दीया । किस को कहूं अब क्या करूं ॥४
यार के मुंह पर झरोखे से नज़र इक जा पड़ी ।

१ जान की जो जान (जान से अति प्यारा] २ दरवाज़े पर ३ दर्शन के पियासे ४ [मिलते ही] मारदीया या घायल कीया ५ सूरत, तसवीर ६ शरीर [देह) अरु प्राण ७ नष्ट. ८ खिड़की.

देखते घायल हुवा। किस को कहूं अब क्या करूं॥५॥
आप को भी क़त्ल कर फिर आप ही इश्क़ रह गये।
वाह नज़ाकत आप की। किस को कहूं अब क्या करूं॥६॥

राग रामकली २०

सख्यो नी मैं प्रीतम पीआ को मनाऊंगी।
इक पल भी उसे न रुसाऊंगी॥ टेक
नैन हृदय का करूंगी विछोना।
प्रेम की कलियां विछाऊंगी॥ सइयो० १
तन मन धन की भेट धरूंगी।
हौमैं दूर मिटाऊंगी॥ सइयो० २
बिन पीआ दुःख बहुत होवत हैं।
बहूजूना भरमाऊंगी॥ सइयो० ३
भेद भेद को दूर छोड़ कर।

१ नाराज़ करूंगी २ अहंकार ३ बहुत जन्म.

आत्म भाव रिझाऊंगी ॥ सइयो० ४
जे कहा पीआ नहीं माने मेरा
मैं आप गले लग जाऊंगी ॥ सइयो० ५
पीआ गले लागी हूइ वडभागी
जनम मरण छुट जाऊंगी ॥ सइयो० ६
पीआ गल लागे सब दुःख भागे
मैं पीआ विच लै हो जाऊंगी ॥ सइयो० ७
राम पीआ मोरे पास वसत हैं
मैं आप पीआ हो जाऊंगी ॥ सइयो० ८

४ आत्म भाव में प्रसन्न होना या तृप्त रहना.

राग परज ताल रूपक २१

जिस को शोहरत भी तरसती हो वह रुस्वाई है और ।
होश भी जिस पर फड़क जायें वह सौदा और है ॥१॥

१ ख्वारी, बेनामी.

बन के पर्वाना तेरा आया हूं मैं ऐ शमा-ए-तूर ।
बात वह फिर छिड़ न जाये यह तक़ाज़ा और है ॥२॥
देखना ! जोके तकल्लुम ! यहां कोइ मूसा नहीं ।
जो मरी आंखों में फिरता है वह शीशा ओर है ॥३॥
यूं तो ऐ स्याद ! आज़ादी में हैं लाखों मज़े ।
दाम के नीचे फड़कने का तमाशा और है ॥४॥
जान देता हूं तड़प कर कूचा-ए-उल्फ़त में मैं ।
देख लो तुम भी कोइ दम का तमाशा ओर है ॥ ५ ॥
तेरे खंजर ने जिगर टुकड़े कीया अच्छा कीया ।
कुच्छ मिरे पैहलू में लेकिन चिलबला सा ओर है॥६॥
भेस बदले महफ़िले अगयार में बैठे हैं हम ।
वह समझते हैं यह कोइ ओपेरा मा ओर है ॥ ७ ॥

२ ए अग्निरूपी पहाड़ के शोले ३ झगड़ा ४ यानी के शौक़ अथवा आनंद ५ शिकारी ६ जाल ७ प्रेम की गली में ८ मेरे ९ कांटा चुबना १० स्वांग बदले ११ गैर, दूसरा पुरुष १२ न पेहचाना हुवा, नाम्रानूस, दूसरा.

राग विहाग ताल दादरा २२

१ इशक़[1] का तूफ़ान बपा है, हाजते[2] मैखानों[3] नेस्त[4]।
ख़ून शराब-ओ-दिल कबाब-ओ, फ़ुर्सते पैमांना[5] नेस्त॥
२ साग़त मस्तमूरी[6] है तांरी[7], रवाह कोइ क्या कुछ कहे।
पस्त[8] है .आलम[9] नज़र में, वहशते[10] दीवाना[11] नेस्त ॥
३ अलिवदा ऐ मर्जे दुन्या! अलिवदा ऐ जिस्म-ओ-जान।
ऐ .अतश[13] ! ऐ जूं[14] ! चलो, ईंजा[15] कबूतर खाना नेस्त॥
४ क्या तजल्ली[16] है यह नारे[17] हुस्न[18] शोऽलों खेज़ है।
मार ले पर ही यहां पर, ताकते परवाना नेस्त॥
५ मिहर[20] हो माह[21] हो दबिस्तान[22], हो गुलिस्तां[23] कोहसार[24]।

१ प्रेम २ ज़रूरत ३ शराब खाना ४ नहीं है ५ प्याला ६ अमल, नशा ७ छाया हुवा है ८ तुच्छ ९ जहान १० वहशीपना ११ पागलपुरुष १२ रवसत हो १३ प्यास १४ भूख, क्षुधा १५ इस जगह १६ चमक १७ आग, अग्नि १८ सौन्दर्यता १९ भड़की हुई २० सूरज २१ चांद २२ पाठशाला, मदरसा: २३ बाग २४ पहाड़

मौजज़न अपनी है खूबी, मूरते बेगाँना नेस्त ॥

६ लोग बोले ग्रहण ने, पकड़ा है सूरज को-गलत ।

खुद हैं तारीकी में वरमेन साया महजूबाँना नेस्त ॥

७ उड मेरी जान जिस्म से, हो गर्क जाँते राम में ।

जिस्म थ्रीश्वर की मूरत हरकते फरजाँना नेस्त ॥

२५ लैहरें मार रही है २६ अन्य पुरुष २७ अन्धकार में २८ मुख पर २९ परदे में छुपे हुवे की तरह ३० रामका आत्मा ३१ लड़कों की हर्कत.

पदवार अर्थ.

१ प्रेम की आन्धी आई हुई है अब शरावखाने जाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि अपना खून इस समय शराव हुवा २ है और दिल अपना कवाव बना हुवा है इस वास्ते (शराव के) प्याले की अब ज़रूरत नहीं.

२ सख्त नशा (प्रेम के मद का) चढ़ा हुवा है ख्वाह अब कोई कुच्छ भी कहे इस समय सारा जहान नज़र से तुच्छ नज़र आता है मगर पागल पुरुषों के बेहुदा पने से नहीं (सिर्फ प्रेम की मस्ती से) जगत तुच्छ नजर आरहा है.

३ ऐ दुन्या की मर्ज़ [बीमारी] तुम को अब इसमन है, ऐ

शरीर और प्राण तुम को भी अब रुखसत है, ऐ भूख और प्यास मेरे पास से चले जाओ यह जगह कोई कबूतर खाना [अर्थात तुम्हारे रहने सहने का घर] नहीं है.

४ आहा ! सौन्दर्यता की आगकी (इस प्रेम की) चमक क्या शोऽले मार रही (तेज़ भडक रही) है अब परवाने की क्या ताकत है जो इस आग में कहीं पर भी मार सके.

५ सूरज हो, ख्वाह चांद हो, ख्वाह सक्रूल हो, बाग़ हो और ख्वाह पहाड हो यह तमाम में अपनी ही खूबं सूरती (सुन्दरता) लैहरें मार रही है कोई अन्य सूरत (शकल और सुन्दरता) नहीं.

६ लोग बोलते हैं कि सूरज को ग्रहण ने पकड रखा है, यह बिलकुल ग़लत है, आप खुद अन्धेरे में है (और समझ बैठे हैं कि सूर्ज भी ग्रहण से पकड़ा गया और अन्धेरे में है) जैस यह ग़लत है, ओर सूरज ग्रहण के साये से नहीं पकडा गया एसे मुझ पर भी कोई ढकने वाला साया नहीं डला हुवा (मैं सदा जाहर हू.)

७ ऐ मेरी जां ! इस शरीराध्यास से उठ और अपने आधार (स्वरूप) में ग़ोते लगा [लीन हो] और शरीर को बदरी नारायण की मूरत जैसा बना दे कि जो हरकत कुच्छ भी नहीं करती है सिर्फ तस्वीर नज़र आती है.

राग भैरवी ताल दादरा (२३)

आशक़ जहां में दौलतो इक़बाल क्या करे।
मुलको मैकानो तेग़ो तेवर ढाल क्या करे॥
जिस का लगा हो दिल वह ज़रो माल क्या करे।
दीवानः जाहो हेशमतो अजलाल क्या करे॥
बेहाल हो रहा हो सो वह हाल क्या करे।
गाहक ही कुछ न लेवे तो दल्लाल क्या करे॥१॥टेक.
मरने का डर है उन को जो रखते है तन में जां।
और वह जो मर गये तो उन्हें मौत फिर कहां॥
मोहताज पत्थरों को तरसते हैं हर ज़मां।
और जिन के हाथ काने ज्वाहर लगे मीयां॥
वह फिर इधर उधर के दुरों लाल क्या करे।
गाहक ही कुछ न लेवे तो दल्लाल क्या करे॥२॥
पाला है जिन स्वारों ने यां खर को आशकार।

१ मुल्क और मकान २ तरवार और ढाल ३ धन दौलत ४ ईश्वर का पागल (खुद मस्त) ५ मर्तबा इज्जत शोहरत ६ हाजत मंद, ग़रीब ७ ज्वाहरात, मोतियों से मुराद है ८ हर समय ९ ज्वाहरात की खान १० मोती और लाल ११ गदहा, गर्दभ १२ ज़ाहराः

कुत्ते की पीठ पर नहीं चढ़ सकते ज़िनँहार[13] ॥
और जो फलांग मार कें हो चँर्ख[14] पर स्वार ।
वह फीलो[15] अँसपे ज़र्दो सीयाह[16] लाल क्या करे ॥
दीवानाः जाहो हशमतो अजलाल क्या करे ।
गाहक ही न कुछ लेवे तो दल्लाल क्या करे ॥ ३ ॥

१३ हरगिज़ कदापि १४ आकाश १५ हाथी १६ ज़र्द लाल और सीयाह घोड़ा.

राग देश ताल तीन   २४

गुम हुवा जो इश्क़ में फिर उस को नंगों नामे क्या ।
दैरें[1] कावा[2] मे गर्ज़ क्या कुफर क्या इसलाम क्या ॥
शेख जी जाते हे मै खाँना[3] से मुंहको फेर फेर ।
देखिये मसजद में जाकर पायेंगे इनाम क्या ॥
मौल्वी[4] साहब से पूछे तो कोई है जिस्म क्या ।
रूह क्या है दम है क्या आगाज़[5] क्या अंजाम[6] क्या ॥

१ धर्म, शा २ मन्दर ३ शराब खाना ४ गुरू, आदि ५ अन्त

दम को ले कर मुम्मो बुस्मम वेसबर सा बैठ रहे।
कूचाये दिलदार में वाइज़ से तुम को काम क्या ॥
यार मेरा मुझ मे है मै यार मे हु विलजम्ब्र ।
वेसल को यहां दखल क्या और हिजर नाफर्जाम क्या ॥
तुझ में मै और मुझ में तू आखें मिलाकर देख ले।
और गर देखे न तू तो मुझ पे है इल्ज़ाम क्या ॥
पुखेता मगज़ो के लीये है रहनुमा मेरा सखुन ।
हाफ़िज़ा हासल करेंगे इस से मर्दे खाम क्या ॥

६ चुप गूगा ७ यार की गली अर्थात् स्वरूप के अनुभव में ८ उपदेश ९ मुलाकात, दर्शन १० जुदायगी ११ बद असल १२ बडे उत्तम दमाग़ वाले (बहुत समझ वाले) १३ लीडर नायक १४ उपदेश १५ कवि का नाम १५ कम अक्ल, कम दिल

राग पीलू ताल चलत २५

आंखों में क्या खुदा की, छुरियां छुपी हुई हैं।

देखा जिद्धर को उस ने पलकें उठा के मारा ॥
गुंञ्चे मे आ के मैहको, बुलबुल मे जा के चैहका ।
उस को हसा के मारा, इस को रुला के मारा ॥

१ कली पुष्पकी २ खुशबूदार होना या खुशबू देना

राग पहाडा राग चलन्त २६

फनाह है सब के लीये मुझ कुछ नही मौक़ूफ ।
यही है फ़िकर अकेला रहेगा तू बाकी ॥
कूवें मे कैद हूए जबकि हज़रते यूसफ ।
रही न इशकें मजाजी की आबरू बाकी ॥
जिबहें करे है परो को तो खोल दे सय्याद।
कि रह न जाये तपडने की आर्ज़ू बाकी ॥
गले लिपट के जो सोया वह रात को गुलरू।
तो भीनी भीनी महीनों रही है बू बाकी ॥

१ मौत २ जुलेखा के आशक का नाम है ३ लौकक इश्क ४ गर्दन पर अब छुरी चलावे या गारदन पर छुरी चलाना ५ शिकारी ६ प्यारा (माशूक)

ख्गा न रहने दे झगड़े को यार तू बाक़ी ।
रुके न हाथ है जब तक रगे गुलूं बाक़ी ॥

७ गले की रग (नाड़ी)

राग भैरवी ताल रूपक २७

जो मस्त है अज़ल के उन को शराब क्या है ।
मक़बूले खातरों को बूए कबाब क्या है ॥
क्यों मुंह छुपाओ हम से तक़सीर क्या हमारी ।
हर दम की हमनशीनी फिर यह हजाब क्या है ॥
हो पास तुम हमारे हम ढूंडते है किस को ।
मुंह से उठा दिखाना ज़ेरे नक़ाब क्या है ॥

१ अनादि वस्तु स जो मस्त है (अपन स्वरूपकरके जो मस्त है) २ दिल क़बूल (मन्ज़ूर) करने वालों को, दिल देने वालों को ३ कबाब (लज़्ज़त) की बू ४ क़सूर गुनाह ५ साथ रहना ६ पर्दा ७ पर्दे के नीचे

गज़ल १८

जिन प्रेम रस चाख्या नहीं अमृत पिया तो क्या हुवा ।
जिन इश्क़ में सिर न दीया युग युग जिया तो क्या हुवा ॥टेक
मशहूर हुवा पंथ में सावत न कीया आप को ।
आलिम अरु फाज़िल होय के दाना हुवा तो क्या हुवा ।१।जि०
औरों नसीहत है करे और खुद अमल करता नहीं ।
दिल का कुफर टूटा नहीं हाजी[१] हुवा तो क्या हुवा ।२।जिन०
देखी गुलिस्तां बोस्तां मतलब न पाया शेख का ।
सारी किताबां याद कर हाफ़ज़ हुवा तो क्या हुवा ।३।जिन०
जब तक प्याला प्रेम का पी कर मगन होता नहीं ।
तार मंडल बाजते ज़ाहर सुना तो क्या हुवा ॥४॥ जिन०
जब प्रेम के दरियाँ में ग़रक़ाव[२] यह होता नहीं ।
गंगा यमुन गोदावरी न्हाता फिरा तो क्या हुवा॥५॥जिन०
प्रीतम से किंचित् प्रेम नहीं प्रीतम पुकारत दिन गया ।
मतलूब[३] हासल न हुवा रो रो मुआ तो क्या हुवा ।६। जिन०

१ हज (यात्रा) करने वाला २ डूबना ३ इच्छित वस्तु.

राग बरवा. २९

अब मैं अपने राम को रिझाऊं। वैहं भजन गुण गाऊं ॥ टेक
डाली छेडूं न पत्ता छेडूं, न कोई जीव सताऊं(१)
पात पान में प्रभु बसत है वाहि को सीस नवाऊं ॥ १ ॥ अब०
गंगा जाऊं न यमुना जाऊं ना कोई तीरथ न्हाऊं।
अठसठ तीरथ घट के भीतर तिनहिं में मल मल न्हाऊं। २। अ०
औषध खाऊं न बूटी लाऊं ना कोइ वैद्य बुलाऊं।
पूरण वैद्य मिले अविनाशी वाहि को नबज़ दिखाऊं। ३। अ०
ज्ञान कुठारा कस कर बांधूं सुरत कमान चढाऊं।
पांचो चोर बसें घट भीतर तिन को मार गिराऊं ॥ ४ ॥ अब०
योगी होऊं न जटा बढाऊं न अंग बभूति रमाऊं।
जो रंग रंगे आप विधाता और क्या रंग चढाऊं। ५। अब०
चंद सूरज दोऊ सम कर राखो निज मन सेज विछाऊं।
कहत कबीर सुनो भाई साधो आवागमन मिटाऊं ॥ अब०

१ वैठ २ सिर, मस्तक ३ आना जाना, मरना जीना.

राग विहाग ३०.

टुक बूझ कौन छिप आया है ॥ टेक
इक नुक़ते में जो फेर पड़ा तब ऐन गैन का नाम धरा।
जब नुक़ता दूर कीया तब फिर ऐनहीं ऐन कहाया है।१। टु०
तुसीं .इलम कतावां पढ़दे हो क्यों उलटे माने करदे हो।
वे मूजब ऐवें लड़दे हो केहा उलटा वेद पढ़ाया है॥ २॥ टुक०
दूई दूर करो कोई शोर नहीं हिंदू तुरक सभी कोई होर नहीं।
सब साध लखो कोई चोर नहीं घट घट में आप समाया है।टुक०
ना मैं मुल्लां ना मैं क़ाज़ी ना मैं शेख सय्यद न हाँजी।
बुल्हया शौह नाल लाई बाज़ी अनहँद शब्द कहाया है।टुक०

१ बिना कारण २ अन्य, दूसरा ३ जात्रू (यात्रा करने वाला) ४ प्रणव, ओं.

पंक्तियार अर्थ।

ऐ प्यारे! ज़रा सोच कि अन्दर अपने कौन छुपा हुवा बैठा है?
१ एक बिन्दू से ऐन हरफ़ ग़ैन हो जाता (या ख़ुदा से जुदा

हो जाता है) और जब बिन्दु हटा दें तो वही ऐन का ऐन ही रहता है । इससे तात्पर्य कवि का यह है कि ऐ प्यारे ! तू तो १ ईश्वर साफ शुद्ध अपने आप है, सिरफ जब अज्ञान या मोहकी बिन्दु (पर्दा) तू अपने पर लगा (डाल) लेता है तो ईश्वर से बन्दा (जीव) बन जाता है ॥

२ ऐ प्यारे ! तुम पुस्तक पोथ बहुत पढ़ते हो और मुफ्त में आपस में बहुत झगड़ते हो (क्योंकि जितना हम बहिर्मुख झगड़े लड़ाई अथवा अध्ययन में लगे हैं उतना ही हम अपने असली स्वरूप से बेमुख बैठे हुये हैं) इसवास्ते ऐसे उल्टे काम तू क्यों कर रहा है और ऐसी उल्टी पढ़ाई क्यों पढ़ रहा है ॥

३ यह द्वैत को दूर कर तुम से भिन्न कोई हिंदू तुर्क अन्य नहीं है, मुफ्त में शोर मत कर क्योंकि यह सब तू ही आप है, और सब को साध (उत्तम) देख क्योंकि तू ही इन तमाम के घटमें (अन्दर दिल के) बस रहा है ॥

महावाक्य (अनहद शब्द अहंब्रह्मास्मि) मुझ (वहेशाह) से कहा गया है ॥

राग बिहाग या असावरी ३१

हृदय विच रम रह्यो प्रीतम हमारो (टेक)

योग यतन का रोग न पालूं अंक में पायो प्यारो ॥१॥ हृदय०

जा के काज राज सुख त्यागत कर्ण मुद्रिका धारो ।

अलख निरंजन सोऽहं ख भंजन घट हि में प्रगट निहारो ॥२॥

मन दर्पण जब शुद्ध कीयो तब आंख में ज्ञान को अञ्जन डारो।

शील संतोष के पैहर कर भूषण कपट के घूंघट टारो ॥ ३ ॥ हृदय.

मन बृन्दावन वृत्ति गोपिका अरु चेतन मोहन प्यारो ।

राम रंग ऐसा खेलत विरले, मन्तन सार निहारो ॥ ४ ॥

१ समीप, नजदीक २ कान ३ देखो, जानो ४ पर्दा.

तर्ज़ ठुमरी राग कुमाच ताल तीन ३२

(टेक) जो तुम हो सो हम हैं प्यारे, जो तुम हो सो हम हैं ॥

पर्वत में तुम नदियन में तुम चहुं दिश तुम ही हो विस्तारे ॥

हस न्दता में तुमहि विराजो सूरज चंद्र तुम ही हो तारे ॥
देश भी तुम हो काल भी तुम हो तुम ही हो सब के आधारे ॥
अलख ब्रह्म है नाम तिहारो माया में तुम नित हो न्यारे ॥
रूप नहीं नहीं गुण है तुम में वस्तु कृपा में दूर सदा रे ॥
तीनों लोक में तुम ही व्यापो तदपि उन ते हो तुम न्यारे ॥
जो ध्यावे सो पे ही पावे हो तुम उन के चेतन प्यारे ॥
रामानन्द अब जान लेह यों आनन्द चेतन नहीं हो न्यारे॥

यहां तो सोये शौक़ से तुम बिस्तरे किमख्वाव पर ।
सफ़र भारी सिर पै है वहां भी बिछौना चाहे ॥ ४ ॥
है ग़नीमत उमर यारो जान को जानो अज़ीज़ ।
रायेगां और मुफ़्त में इस को न खोना चाहे ॥ ५ ॥
गरचि दिलवर साथ है बिन जुस्तजू मिलता नहीं ।
दूध से माखन जो चाहो तो बिलोना चाहे ॥ ६ ॥
यादे हक़ दिन रात रख, जंजाल दुन्या छोड़ दे ।
कुच्छ न कुच्छ तो लुतफ़े खालसं तुझ में होना चाहे ॥७॥

४ धन्य, उत्तम ५ बे फायदा ६ जिज्ञासा, ढूंडना ७ ईश्वर स्मरण
८ शुद्ध आनन्द या निजानन्द

गज़ल ३८.

मीत न की स्वरूप से तो क्या कीया कुच्छ भी नहीं (टेक)
जान दिलवर को न दी फिर क्या दीया कुच्छ भी नहीं ॥१॥ मी-
मुल्कगीरी में सिकन्दर से हज़ारों मर मिटे ।

१ देशों का जय (फतेह) करना

अपने पर क़बज़ाः न कीया, क्या लीया कुन्छ भी नहीं ॥२॥ मी
देवतों ने सोम रस पीया तो फिर भी क्या हुवा ।
प्रेम रस गर न पिया तो क्या पीया कुन्छ भी नही ॥३॥ मी.
हिज्रे मे दिलबर के हम जो .उमर पाई खिज़ेर की ।
यार अपना न मिला तो क्या जीया कुन्छ भी नहीं ॥४॥ मी.

२ जुदायगी ३ खिज़र एक मुसल्मानों के हज़रत का नाम है जिस की आयू अनन्त कही जाती है

---

३७ माज ताल चचल

आवूंगा न जाऊंगा मरूंगा न जीयूंगा।
हरि के भजन पियाला प्रेम रस पीयूंगा ॥ } टेक

कोई जावे मक्के कोई जावे काशी। देखो रे लोगो दोहों गल फांसी ॥ १ ॥ आऊंगा०

कोई फेरे माला कोई फेरे तसंबीह देखो रे साधो यह दोनों

१ जपनी (जो मुसल्मान भजन में वर्तते हैं)

हैं कसवी ॥ २ ॥ आ०
कोई पूजे मढ़ीयां कोई पूजे गोरां । देखो रे सन्तो ! मैं लुट
गयी जे चोरां ॥ ३ ॥ आ०
कहत कबीर सुनो मेरी लोई । हम नहीं मरना रोवे न
कोई ॥ ४ ॥ आ०

२ कबरों को कहते हैं ३ कवि का नाम है ४ कवि की स्त्री का नाम है.

---

३६ गजल

हर गुल में रंग हर का जल्वाः दिखा रहा है। (टेक)
तालिबँ को .इश्क़ का फ़ँन बुलबुल सिखा रहा है।१। हर गु०
सीमाँब बेक़रारी, बादल भी अशक़ बाँरी ।
परवाना जाँ निसारी, हर को जता रहा है ॥ २ ॥ हर गुल०

१ ईश्वर, निज स्वरूप से मुराद है २ दर्शन, परतीत होना ३ जिज्ञासु ४ पारा ५ हुनर ६ (आंसुओं की तरह) बादल का बरसना ७ प्राण .क़ुर्बान करना

नरगिस ने आंख वन कर देखा उसे नज़र भर ।
हर वर्ग बर्ग में जोहर हर का समा रहा है ॥ ३ ॥ हर गुल०
होवे जो इशक़ कामिल हर जाः वह तेरे शामिल ।
कामिल मे जल्द जा मिल क्यों दिल दुखा रहा है ॥४॥ हर०
दर अन्जुमन में तन में वन वन में अपने मन में ।
दिलवरही हर चमन में वंसी वजा रहा है ॥५॥ हर गुल०

८ पत्ता ९ फल १० भक्ति, प्रेम ११ पूरा पूरा १२ जगह, स्थान १३ अनुभवी महात्मा, ज्ञानी १४ महफ़िल, सभा, पंचायत १५ बाग़.

---

३७ राग आसा

खेडन दे दिन चार नी, वतन तुसाडे मुड़ नहीं ओ आना।टेक
चोला चुनडी सानुं मापियां दितड़ां ।
रूप दित्ता करतार नी ॥ वतन तुसाड़े० ॥ १
अम्वड़ भोली कत्तया लोड़े ।
भठ पइय्यां पूनीयां भठ पये गोड़े ।

तृक़ले दे वझ चार नी ॥ वतन तुसाड़े ॥ २
अंबड़ मारे बावल झिड़के ।
मर गया बावल सड गयी अम्बड़ ।
टल गया सिर तों भार नी ॥ वतन तुसाड़े ॥ ३
रल मिल सैय्यां खेडन चल्लीयां ।
खेड खिडन्दरी नूं कंडा पुरया ।
विसुर गया घर बार नी ॥ वतन तुसाडे० ॥ ४

पंक्तिवार अर्थ

टेक —मेरे ससार में रेहने के अब दो चार दिन है (क्योंकि मुझे ईश्वर का इशक (प्रेम) लग गया है ॥ इसवास्ते ऐ शारीरक मात पिता[1] तुम्हारे घर (ससार वाले) में मेरा अब आना वापस नहीं होगा ॥

१ शारीरक चोला (शरीर इत्यादि) तो माता पिता ने दीया, मगर असली रूप करतार ने दीया हुवा है (इसवास्ते मैं ईश्वर की हू तुम्हारी नहीं) इसलीये टेक०

२ शारीरक माता यह चाहती है कि दुन्या रूपी व्योहार में

लगू मगर मेरे दिल रूपी तकले (कला) के चार वल पड़गये हैं (क्योंकि ईश्वर के प्रेम में चित्त लग गया) इसवास्ते मैं कह रही हू कि रूई का कातना, व रूई की पूनीयां अर्थात् (व्योहार ससारक) तमाम भाड में पडें और मैं तुम्हारे घर में ही नहीं आने लगी ॥

३ माता मारती है और पिता झिड़कता है (कि कुछ ससारक काम करूं मगर मेरे वास्ते इस प्रेम के कारण तो) माता सड़गयी और वाप मर गया है और उन का दूर होना मैं सिर से भार टला समझती हूं इसवास्ते (टेक)

४ जब ससार के घर से वाहर निकल कर हम सब सहेलीयां (सखीया) खेलने को जाने लगीं तो रास्ते में (प्रेम का) कांटा मुझे खेलते २ एसा चुभा कि घर वार दुन्या का तमाम मुझे विसर (भूल) गया ॥ इसवास्ते (टेक)

---

३८ राग आसा.

करसां मैं सोई शृंगार नी, जिस विच पिया मेरे वश आवे। टेक

जिस भूषण विच होवे न दूखन, सोई मेरे दरकार नी।जि०।१

गजरयां वग्गां तों हुन संगां, कचा कच उतार नी ॥ जि०॥२

नामदा नामा प्रेम दा धागा, पावृं गल्ल विच हारनी॥जि०॥३
पावागी लळछे मै निर्लज्जे, शाजर पिया दा प्यार नी।जि०।४
सैह न सकदी मैं सौकन नैरण, शाजर दा छिकार नी।जि०।५

पक्तिवार अथ

टेक अब मैं ऐसा शृगार (अपने अन्दर को साफ) करूगी कि जिससे मरा (असली) पति (ईश्वर) मेरे काबू में आजावे ॥

१ जिस भूषण (अन्दरूनी सजावट) से कोई दु ख न उतपन्न हो वही जेवर म चाहती हू (और पैहनू गी) ताकि मेरा ईश्वर (पति) मेरें काबू म आवे ॥

२ दुन्यावी वगो (bracelets) काच की जो स्त्री लोग पैहन्ती हैं उन का पैहनते मुझ शरम आती है। इसलीये मैं इस कच्चे काच को उतार कर (ऐसा कोई असली और पुखत भूषण पैहन्ती हू) जिस से मेरा पति (ईश्वर) मरे वश होजावे

३ ईश्वर नाम का जो नामरूपी जेवर मैं पैहनू गी और उस [भूषण] में प्रेम रूपी धागा डालूगी। ऐसा सुन्दर हार बना कर मैं अपने गले में डालूगी ताकि मेरा प्यारा पति (ईश्वर) मेरे

काबू में आजावे ॥

४ पाओं में ऐसा लच्छे रूप जेवर जो मेरी शर्म उतार दे मैं पैहनूगी कि जिस में पिया (प्यारे) के प्यार रूपी झांजरे हों ताकि पति मेरा (ईश्वर) मेरे वश में हो जावे ॥

५ मैं ही १ अकेली स्त्री उस की होना चाहती हूं और उसकी दूसरी स्त्री (सौकन) देखना मैं गवारा नहीं करसकती और न किसी दूसरी स्त्री (सौकन के जेवर इत्यादि झाजरों की झिकार सुनना बरदाश्त कर सकती हू ॥ ताकि पिया का मेरे पर ही प्यार हो और मेरे वश मे ही आया हुवा हो

---

२९ राग पीलू ताल दीपचन्दी

ग़लत है कि दीदार की आर्ज़ू है ।
ग़लत है कि मुझ को तेरी जुस्तजू है ॥
तिरा जल्वः ऐ जल्वागर कू बकू है ॥
हज़ूरी है हर वक्त तू रू ब रू है ।

१ दर्शन २ इच्छा, जिज्ञासा ३ तालाश, जिज्ञासा, ढूंड ४ प्रकाश, तेज ५ प्रकाशमान ६ सर्व दिशा, गली

जिधर देखता हूं उधर तूं ही तू है ॥१॥ टेक
हर इक गुल में बू हो के तू ही बसा है ।
सदा हाये बुलबुल में तेरी नवा है ॥
चमन फ़ैज़े .कुद्रत से तेरे हरा है ।
बहारे गुलिस्तां मे जल्वः तेरा है ॥ २ ॥ जि०
नबातात मे तूं नेमू है शजर की ।
जमादात में आबू बैहरो बैर की ॥
तू हैवां[17] में ताक़त है सैरो सफ़र की ।
तू इन्सां में .कुव्वत है नुतको नज़र की॥३॥जि०
घटा तू ही उठता है घघोर हो कर ।
छुपा तू ही है बैहर में शोर हो कर

७ आवाज़ ८ गीत सुर, आवाज़ ९ माया की कृपा से १० बाग़ की बहार मे ११ बनस्पति, १२ परतीत, दृश्य, सुंदर्यता १३ वृक्ष झाड १४ पहाड, पत्थर, धातू १५ चमक दमक १६ पृथ्वि अर समुद्र १७ पशू १८ सैर अर टैहलना १९ बुद्धि अर ज्ञान चक्षू

निहां[20] तू हि तूफ़ां में है ज़ोर हो कर
.अयां[21] तू हि मौजों[22] मे झक झोर हो कर ॥४॥ जि०
तेरी है सदा[23] रॉद[24] में गर कड़क है ।
तेरी है ज़िया[25] बर्क़[26] में गर चमक है ॥
यह क़ौसे[27] क़ज़ह ही में तेरी झलक है ।
जवाहर के रंगों में तेरी डलक[28] है ॥ ५ ॥ जि०
ज़मीं आस्मां तुझ से मामूर[29] है सब ।
ज़मानो[30] मकां तुझ से भरपूर है सब ॥
तजल्ली[31] से कूनो मकां[32] नूर हैं सब ।
नगाहों में मेरी जहान् तूर[33] हैं सब ॥ ६ ॥ जि०
हसीनों[34] में तू हुसनो नाज़ो[35] अदा है ।

२० छुपा हुवा २१ ज़ाहर २२ लैहरें २३ आवाज़ २४ बिजली की गर्ज २५ रोशनी २६ बिजली २७ इन्द्र धनुष २८ तेज, चमक २९ भरपूर ३० देश, काल ३१ परकाश, तेज ३२ सर्व स्थान ३३ अग्नि के पर्वत से मुराद है ३४ सुन्दर पुरष ३५ सौन्दर्यता अर नखरा

तू .उश्शाक़[36] में .इशक़ो सदके[37] सफ़ा है ॥
मजाज़ो[38] हक़ीक़त में जल्वाः तेरा है ।
जहां जाईये एक तू रूनुमा[39] है ॥ ७ ॥ जि०
मकां तेरा हर एक ऐ लां[40] मकां है ।
नशां हर जगह तेरा ऐ वे निशां है ।
न खाली ज़िमीं है न खाली ज़मां[41] है ॥
कहीं तू निहां है कहीं तू .अयां है ॥ ८ ॥ जि०
तेरा ला मकान् नाम ज़ेबां[42] नहीं है ।
मकां कौन सा है तू जिस जाः[43] नहीं है ॥
कहीं मासिवा[44] मैं ने देखा नहीं है ।
मुझे ग़ैर[45] का वेहम होता नहीं है ॥ ९ ॥ जि०
ज़मीन्-ओ-ज़मां नूर से हैं मुनव्वर[46] ।

३६ भक्त जन ३७ कुरबान् होना, वारे जाना ३८ लौकक अरु परमार्थक प्रेम, स्नेह, संवन्ध ३९ साह्मने हाज़र ४० देश रहित ४१ काल ४२ लायक़, मुनासब ४३ जगह, स्थान ४४ सिवाये तेरे ४५ अन्य. ४६ प्रकाशमान

मकीन्-ओ-मकां ज़ात के तेरे मजहँर ॥
जहां में दिले रौस्ता है तिरा घर।
इधर और उधर से मैं इस घर मे आकर॥१०॥ जि०

४७ तुझे ज़ाहर करने वाले ४८ सत्य पुरषों का दिल

ऐ राम ? (राग पाल ताल दादरा) ४०

जो तू है सो मैं हूं जो मैं हूं सो तू है। } टेक
न कुछ ओर्ज़ है न कुछ ज़ुस्तजू है ॥ }

बसा राम मुझ में मैं अब राम में हूं।
न इक है न दो है सदा तू ही तू है ॥ १ ॥ जो०
खुली है यह ग्रन्थी मिटी है अविद्या।
सदा राम अब बस रहा चारँसू है ॥ २ ॥ जो०
उठा जब कि माया का पर्दा यह सारा।
कीया गम खुशी ने भी हम से किनारा ॥ ३ ॥ जो०

१ इच्छा, उमंद मात्र २ जिज्ञासा ३ गांठ ४ चारों तरफ,

ज़बान् को न ताक़त न मन को रसाई ।
मिली मुझ को अब अपनी बादशाही ॥४॥ जो०

काफी आहग. ४१.

हुस्ने गुल की नाओ अब बैहरे खिज़ां में बेह गयी ।
माल था सो विक चुका दुकान खाली रह गयी ॥१॥
बागबां रोता फिरे है सच बता बादे खिज़ां ।
गुलसेतां किस जा है बुलबुल की कहां चेहचैह गयी ॥२॥
कौन पूछे है तुझे माँह ! रोज़े रौशन हो गया ।
नूरे की तालेब जो थी वह शैब सियाह अब ढे गयी ॥३॥
फिर नहीं आने की वापस है यकीं मुझ को सनेम ! ।
अब तो तेरे .इशक़ै के सैदमे जवानी सैह गयी ॥ ४ ॥

१ पुष्प की सुन्दर्ता २ नाविका ३ समुद्र ४ पत झडी अर्थात पत्ते झडने का समय ५ बागीचाः ६ बुलबल की आवाज़ ७ चांद ८ दिन चढ गया ९ प्रकाश १० जिज्ञासु ११ रात १२ प्यारा १३ प्रेम, भक्ति १४ चोटें.

चाग़ आ वाज़ी से है यह इश्क़वाज़ी जां का खेल ।
जाते जाते भी मुझे इतनी नसीहत कह गयी ॥ ५ ॥

राग सोहनी ४२.

जो दिलको तुम पर मिटा चुकेहै,
मज़ाके उलफत उठा चुके है ।
वह अपनी हस्ती मिटा चुके हैं,
ख़ुदा को ख़ुद ही में पा चुके हैं ॥ १ ॥
न मूए काबाः झुकाते हैं सर,
न जाते हैं बुत्क़दाः के दर्रे पर ।
उन्हें है दैहेरो हर्म बराबर,
जो तुम को क़िबला बना चुके हैं ॥ २ ॥
न हम से प्यारे छुड़ाओ दामां,

१ प्रेमानन्द, या प्रेम का स्वाद २ मुसलमानों के तीर्थ काबा की तरफ ३ मंदर ४ दरवाज़ा ५ मन्दर ६ मसाद ७ पूजनीय ८ पल्ला.

न देखो बाग़ो बहारो रिज़वां।
कब उन को प्यारे हैं हूरो गिल्मां,
जो तुम को प्यारा बना चुके हैं ॥ ३ ॥
सुना रही है यह दिल की मस्ती,
मिटा के अपना वजूदे हस्ती।
मरेंगे यारो तलबे में हक़ की,
जो नाम तालिबे लिखा चुके हैं ॥ ४ ॥
न बोल सक्ते थे कुछ ज़ुबां से,
न याद उन को है जिस्मो [16] जां से।
गुज़र गये हैं वह हर मकां से,
जो उस के कूँचे में आ चुके हैं ॥ ५ ॥
गर और अपना भला जो चाहो,

९ स्वर्गभूमी १० स्वर्ग की सुन्दर स्त्री ११ स्वर्ग के नौकर १२ देह अध्यास से मुराद है १३ जिज्ञासा १४ सत स्वरूप १५ जिज्ञासू. ढूंढने वाला १६ शरीर, प्राण १७ कूंज गली, उसकी राह से मुराद है ॥

यह, राम अपने से कह सुनाओ।
भला रखो या बुरा बनाओ,
तुम्हारे अब हम कहा चुके हैं ॥ ६ ॥

आत्म ज्ञान

दोहरा

चक्षू जिन्हें देखें नहीं चक्षू की अख मान ।
सो परमात्म देव तुं कर निश्चय नही आन ॥ (टेक)
जाको वानी न जपे जो वानी की जान ॥ सो०
श्रोत्र जाको न सुनें जो श्रोत्र के कान ॥ सो०
प्राणो कर जीवत नहीं जो प्राणो के प्राण ॥ सो०
मन बुद्धि जाको न लखें परकाशक पेहचान ॥ सो०

१ आंख २ और, दूसरा ३ कान ४ प्रकाश करने वाला.

(नोट) यह कविता केनोपनिषद के पांच मन्त्रो के तात्पर्य से परोई हूई है.

---

२. परज ताल चलन्त.

दरया से हुबावें की है यह मदा ।

१ बुदबुदा २ आवाज़

तुम और नहीं हम और नहीं ॥
मुझ को न समझ अपने से जुदा ।
तुम और नही हम और नहीं ॥ १ ॥
आईना मुक़ाबिले रुख जो रखा ।
झट बोल उठा यूं अक्स उस का ॥
क्यों देख के हैरान् यार हुवा ।
तुम और नही हम और नहीं ॥ २ ॥
जब गुञ्चः चमन में सुबह को खिला ।
तब कान में गुल के यह कहने लगा ॥
हां आज यह उक़्दः है हम पै खुला ।

दर्पण या शीशा ४ मुह के साहने ५ प्रतिबिम्ब ६ कली पु
की ७ बाग़ ८ प्रात काल ९ फूल, पुष्प १० मुशकल बात
घुडी (अर्थतात जब प्रात काल बाग मे कली खिली और फू
बनगयी तो उसी फूल के कान में यह कहने लगी " कि " आ
यह हमारा भेद (खुल गया अर्थात) हल हो गया है कि तु
और नहीं और मै और नहीं मैं ही फूल थी) ·

तुम और नहीं हम और नहीं ॥ ३ ॥

दाने ने भला खिरमन[11] से कहा।

चुप रहो इस जा नहीं चूंन-[12]ओ-चरा ॥

वह्दत[13] की झलक कसरत[14] में दिखा।

तुम और नहीं हम और नहीं ॥ ४ ॥

नासूत[15] में आ के यही देखा।

है मेरी ही ज़ात[16] से नशव-[17]ओ नमा ॥

जैसे पंबा[18] से तार का हो रिश्ता[19]।

तुम और नहीं हम और नहीं ॥ ५ ॥

तू क्यों समझा मुझे ग़ैर[20] बता।

११ दानों के ढेर का नाम खिरमन होता है १२ क्यों और किसतरह १३ एकता १४ बहुत (दाना खिलवाड़े से कहने लगा कि इस जगह क्यों कय वाजब नहीं मैं एकेला ही यह बहुत बन कर खिलवाड़ा कहलाता हूं इसवास्ते तू और नहीं मै और नहीं) १५ जागृत १६ निज स्वरूप (आत्मा) १७ बढते फूलते हैं या बढ़ना फूलना. १८ रूई का गुफ्फा १९ सम्बन्ध २० दूसरा भिन्न

अपना रुख़े[21] जेबा न हम से छुपा ॥
चिक पर्दा उठा टुक साम्हने आ ।
तुम और नहीं हम और नहीं ॥ ६ ॥

२१ सुन्दर मुंह

---

३ भैरवी ताल तीन.

है दैरो .हरम[1] में वह जलवा[2] कुनां
पर अपना तो रखता वह घर ही नहीं ॥ १ ॥
है नूर[3] का उस के ज़हूर[4] सिवा
पर है वह कहां यह ख़बर ही नहीं ॥ २ ॥
कोई लाख तरह से भी मारे मुझे
पर मेरा तो कटता यह सर[5] ही नहीं ॥ ३ ॥
वह मकां है मेरा तनहाई में यां[6]

१ मन्दर और मसजिद (काबा) २ प्रगट हुवा हुवा ३ प्रकाश ४ प्रगट, व्यक्त, प्रकाशमान ५ सिर, ६ जिस जगह

शमसो क़ुमर[7] का गुज़र ही नहीं ॥ ४ ॥
न तो आबो हवा[8] न है आतश[9] यां
कोई मेरे सिवाय तो बशर[10] ही नहीं ॥ ५ ॥
दरे[11] दिल को हला कर दर्शन आ
कहीं करना तो पड़ता सफ़र ही नहीं ॥ ६ ॥

७ सूरज और चांद ८ पानी, और वायू ९ अग्नि १० जीव जन्तू ११ दिल के दर्वाज़े को खोल.

---

४ गज़ल राग जिला सधौडा.

अगर है शौक़ मिलने का अपस[1] की रमज़[2] पाता जा ।
जला कर खुद नमाई[3] को भसम तन पै लगाता जा ॥ टेक
पकड़ कर इशक़ का झाड़ू सफा कर दिल के हुजड़े[4] को ।
दूई[5] की धूल को ले के मुसल्ले[6] पर उड़ाता जा ॥ १ ॥ अ०

१ अपने आपकी २ भेद, घुंडी ३ अहकार, मग़रूरी ४ कोठड़ी ५ द्वैत ६ नमाज पढ़ने वक्त जो आगे कपड़ा बिछाया जाता है

मुमल्ला फाड़ तस्बीह तोड़ किताबां डाल पानी में।
पकड़ कर दस्त मस्तों का निजानन्द को तूं पाता जा॥ २ अ.
न जा मस्जद न कर सेजदा: न रख रोज़ा न मर भूखा।
वुज़ू का फोड़ दे कूज़ा शराबे शौक़ पीता जा॥ ३ ॥ अ.
हमेशां खा हमेशां पी न गफलत से रहो इक दम।
अपस तूं खुद खुदा होके खुदा खुद हो के रहता जा॥४॥ अ.
न हो मुल्ला न हो क़ाज़ी न खिल्का पैहन शेखों का।
नशे में सैर कर अपनी खुदी को तूं जलाता जा॥५॥ अ.
कहे मनसूर सुन क़ाज़ी नेवाला कुफर का मत पी।
अनलहक़ कहो मैं पूती से तू यही कलमा पकाता जा॥६॥ अ.

७ माला जाप करने की ८ हाथ ९ वन्दगी, पूजा १० पूजा या नमाज के समय मूह धोने का कूजा ११ ईश्वर के प्रेम की आनन्द दिलाने वाली शराब १२ चोगा, लम्बा कोट शेखोंवाला १३ दुट, ग्रास, १४ मैं खुदा हू, अह ब्रह्मास्मि १५ पक्के दिल से.

---

५ राग जिला पील्, ताल दीपचंदी.

क्या खुदा कुं ढूंडता है यह बड़ी कुछ बात है (टेक)
तू खुदा है तू खुदा है तू खुदा की ज़ात है ॥१॥ क्या.
क्या खुदा को ढूंडता है सदा तो तेरे पास है ।
पास है पाता नहीं ज्यों फूलन में वास है ॥ २ ॥ क्या.
फिरे भूला एक मृग औ कस्तूरी वाकी पास है ।
पास है पाता नहीं फिर फिर सूंघे घास है ॥ ३॥ क्या०
तुझ में है इक बोलता वह ही खुदा तूं आप रे ।
है नारायण हृदय भीतर तूं तेरो तपास रें ॥४॥ क्या०

१ वास्तव स्वरूप २ सुगन्ध ३ खोज, इमतिहान लेना, जांचना.

---

६ ठुमरी राग जिला झंझोटी.

जहां देखत वहां रूप हमारो (टेक)
जड चेतन को भेद न पेखत, आत्म एक अखंड निहारो । ज.
क्षिति जल तेज पवन आकाशे, कारण सूक्षम स्थूल विचारो ॥

१ देखो २ ज़मीन, पृथ्वि.

नर नारी पशु पंछी भीतर. मुझ बिन कोई न जागन हारो। ज.
कीट पतंग पिशाच पदारथ, सरुवर तरुवर जंगल पहाड़ो॥ ज.
मैं सब में सब ही मेरे मांहि, नाम रूप निरंजन धारो। ज.
नाथ कृपा नरसिंह भयो अब, व्यापि रह्यो हमसे जगसारो॥

७

आत्म चेतन चमक रह्यो, कर निधड़क दीदार[१]॥ टेक.
तूं परमानन्द आप है, झूटे है सुतदार[२]॥ १ ॥ आ०
चमड़ी में हितै[३] जो करें, वही पूरे चमार॥ २ ॥ आ०
नाश वान जग देख के, समझत नाहि गवार॥३॥ आ०
दुर्लभ नर तन पाय के, क्यों न करत विचार॥४॥ आ०
तन मंदर अदभुत बनयो, तूं ठाकर सरदार॥५॥ आ०
विषयों में फस फस मरे, जान खोय बेकार॥६॥ आ०
जो सुख चाहें तो त्याग दे, परधन अरु परनार॥७॥ आ०

१ दर्शन २ स्त्री पुत्र ३ प्यार.

धन जोबँन स्थिर है नही, लॅख संसार अँसार ॥८॥ आ०
चमँन खिलो दिन चार को, गरभ करो नही यार ॥९॥आ०
चौरासी के चक्कर से, कर ले अब निर्स्तार ॥ १०॥ आ०

४ जवानी, युवावस्था ५ समझ, निश्चय कर ६ सार रहित, बुन्याद रहित ७ याग ८ छुटकारा ॥

८

अब मोहे फिर फिर आवत हासी ॥ टेक
सुख स्वरूप होय सुख को ढूंडे, जल में मीनं प्यासी १ अ०
सभी तो है आत्म चेतन, अंज अखँडं अनिर्नाशी ॥२अ०
करत नही निश्चय स्वरूप का, भाजत मथरा कासी ॥३अ०
क्षन्भंगरता देख जगत की, फिर भी धारव् उदासी॥४अ०
निरंभय राम राम कृपा से, काटी लख चौरासी ॥५अ०

१ मछी का नाम २ जन्म रहित ३ टुकडों बगैर ४ नाश रहित ५ क्षन में नाश होने वाली वस्तू ६ भय रहित, अर कवि का नाम है ॥

९

तूं ही सच्चिदानन्द[1] प्यारे। तूं ही सच्चिनन्द ॥ टेक.
विषयों से मन रोक बाबा, आंख ज़रा कर बंद ॥१॥ तूं०
अचल हो[2] कर अपने अंदर, देख तूं बालमुकंद ॥२॥ तूं०
देख अपने आप को, हैं तूं ही आनन्द कैन्द ॥३॥ तूं०
है नहीं कोइ बन्ध तो में, रहो तूं निर[4]द्वन्द ॥४॥ तूं०
कृष्ण राधा. राम सीता, तूं ही बालमुकन्द ॥५॥ तूं०
यह रमंज़[5] समझ कर तूं, काट दे सब फंद ॥६॥ तूं०
समझ कर सब भरम को, करो दूर दुःख गंध ॥७॥ तूं०
वृत्ति ब्रह्माकार करके, भोग तूं परमानन्द[3] ॥८॥ तूं०

१ तू ही सत स्वरूप और तू ही आनन्द और चित् स्वरूप है २ स्थित बैठ कर ३ दुःख से रहित मीठा आनन्द ४ दुःख सुख, सर्दी, गर्मी से रहित ५ गुह्य भेद.

---

१० राग कालिंगड़ा ताल केरवा.

ठोकरें[1] खा खा ठाकर डिट्ठा[2] टाकर[3] ठीकरें माहिं ।

१ चोट २ देखा ३ मट्टी के टुकड़े,

ठीकर भजदा टुट्दा सड़दा ठाकर इकसे थाँहि ॥
ठौर ठौर विच ठैहरया ठाकर ठाकर बाहर नांहि ।
ठग ठीक ठाकर ही ठाकर ठाकर ही जहां तहां ॥
ठाकर राम नचावे नाचे वैह जांदा जां वांहि ॥

४ टूटता ५ जगह ६ जहां बठाना चाहो अथवा बैठना चाहे वहां ही बैठ जाता है ।

---

११ राग धनासरी ताल दादरा.

जिस को हैं कहते ख़ुदा हम हि तो हैं ।
मालके अर्ज़ ओ-समा हम ही तो हैं ॥
तालबाँने .हक़ जिसे हैं ढूंडते ।
अर्श पर वह दिलरुबा हम ही तो हैं ॥
.तूरं को सुरमा कीया इक आँन में ।

१ पृथ्वि और आकाश के मालक २ सचाई के जिज्ञासु (चाहने वाले ढूंडने वाले) ३ आकाश ४ माशूक़ प्यारा ५ पहाड का नाम है ६ घडी

नूँर मूसा को दीया हम ही तो हैं ॥
तिशनः-एँ-दीदारे लब के वास्ते ।
चशमः एं-आबे बक़ा हम ही तो है ॥
नेंार में मेंाह में कोंकेब में सदा ।
मिहेरें में जलेंवा नुमा हम ही तो है ॥
बोस्तेंाने नूर से बेहरे संलील ।
नार को गुलशेंन कीया हम ही तो हैं ॥
नूंह की कशती को .तूफ़ां से बचा ।
पार बेडा कर दीया हम ही तो है ॥

७ प्रकाश (अर्थात जिस ने यह हजरत मूसा को पहाड तूर पर दर्शन दीये वह हम ही तो है) ८ दर्शन के प्यासों की प्यास बुजाने के वास्ते ९ अमृत का जशमा हम ही तो है १० अग्नि ११ चांद १२ सतारे १३ सूरज १४ आसमान प्रकाशमान १५ प्रकाशस्वरूप के बागीचे से १६ सच्चे आशक के वास्ते १७ बाग अर्थात (जिस यार ने आग को बाग में बदल दीया वह हम तो हैं) १८ पैगम्बर का नाम.

मर्दों[19] ज़न पीरो[20] जवां वैहशो-त्यूर[21]।
औलियाँ ओ अंबियाँ[22] हम हि तो हैं ॥
खाको बादो आँबो आतश और खला[24]।
जुमलों मा दर जुमलों मा[25] हम ही तो हैं[26] ॥
उक़्दः-ओ वहदतें पसन्दो[27] के लीये।
नाखुने मुशकिल कुशा[28] हम ही तो है ॥
कौन किस को सिर झुकाता अपने आप।
जो झुका जिसको झुका हम ही तो है ॥

१९ स्त्री पुरुष २० बूढा जवान २१ हैवान और पक्षी २२अवतार २३ नबी २४ पृथ्वि, हवा, पानी, आग और आकाश २५ सब मुझ में (हम में) २६ और सब हम २७ अद्वैत के मसलों को पसन्द करने वालों के लीये २८ मुशकल हल करने वाले नाखुन (लीये)

---

१२ राग पर्ज ताल केरवा.

खुदाई कहता है जिस को आलम[1]।

१ जहान, दुन्या

सो यह भी है इक खयाल मेरा ॥
बदलना सूरत हर एक ढंग से ।
हर एक दम में है .हाल मेरा ॥
कहीं हूं जाहर कहीं हूं मर्गहर ।
कहीं हूं दीदे और कहीं हूं .हैरतं ॥
नजर है मेरी नसीब मुझ को ।
हुवा है मिलना मुहाल मेरा ॥
तलिस्मे इसरारे गजे मखफी ।
कहूं न सीने को अपने क्योंकर ॥
.अयां हुवा हाले हर दो .आलम ।
हुवा जो ज़ाहर कमाल मेरा ॥
अलस्तु कौलू बला की रमेज़ें ।

२ तरीका ३ हृदय की कान, विघ्न ४ दृष्टि ५ अश्चर्य ६ मुशकल ७ जादू ८ छुपे हुवे खजाने के भेद (गुह्म पदार्थ) ९ दिल १० ज़ाहर, खुला ११ दोनो जहानों का हाल १२ सुकरात (Socrates) अफलातू के नाम १३ गुह्म उपदेश, इशारे.

न पूच्छ मुझ मे वर्तन तू हरगिज़ ॥
हूं आप मशगूँल आप शाग़िल ।
जवाब ख़ुद है सवाल मेरा ॥

१४ कवि का खताबं (नाम) १५ मसरूफ़ १६ काम में लगाने वाला.

---

१३ राग झंझोटी ताल दादरा.

१. मैं न बन्दाः न ख़ुदा था मुझे म़ालूम न था.।
दोनों .इल्लत से जुदा था मुझे म़ालूम न था ॥१॥
२ शकले .हैरत हूई आयीना दिल में पैदा ।
मानीये शाने सफा था मुझे म़ालूम न था ॥ २ ॥
३ देखता था मैं जिसे हो के नदीदाः हर सू ।
मेरी आंखों में छुपा था मुझे म़ालूम न था ॥ ३ ॥

१ सबब (इस जगह नाम से मुराद है) २ दिल के शीशे ३ बिम्ब, असली स्वरूप ४ प्रतिबिम्ब ५ न ज़ाहर, छुपा हुवा.

४ आप ही आप हूं यहां तालिबो मतलूब है कौन ।
मैं जो आशक़ हूं कहा था मुझे मालूम न था ॥४॥

५ वजह मालूम हुई तुझ से न मिलने की सनम ।
मैं ही खुद पर्दा बना था मुझे मालूम न था ॥५॥

६ बाद मुद्दत जो हुवा वसेल खुला राज़े वतन ।
वासिले हक़ मैं सदा था मुझे मालूम न था ॥६॥

६ जिज्ञासू ७ इच्छित पदार्थ ८ ऐ प्यारे ! ९ कारण १० मेल, मुलाकात ११ भेद, घुंडी १२ सत् का पाने वाला (सत् को प्राप्त हुये)

पंक्तिवार अर्थ

१ यह मुझे मालूम नहीं था कि मैं न जीव हूं न खुदा हूं और न मुझे यह मालूम था कि मैं दोनों नामों से परे हूं

२ दिल में (शीशारूपी अन्त करण में) हैरानी की सूरत प्रगट हुई मगर यह मुझे मालूम न था कि साफ शकलों का कारण (बिम्ब) मैं हूं

३ जिस को मैं ज़ाहर न देखता था वह मेरी आंखों में छुपा

हुवा था यह मालूम न था.

४ सब कुच्छ में आप ही आप हूं, जिज्ञासू और चाहने वाला पदार्थ कोई नहीं, मैं ने जो कहा था कि मैं आशक हूं यह मुझे मालूम न था.

५ ऐ प्यारे ! तुझ से जब ना मिल्ने की वजह मालूम हुई (तो देखा) कि मैं ही खुद (इसमें) पर्दा बना हुवा था यह मुझे मालूम न था

६ कुच्छ काल पश्चात जब मुलाकात हुई (दर्शन हुवे) तो अपने घर का भेद खुल गया (वह यह) कि सतस्वरूप को मैं सदा प्राप्त हुवे २ था मुझे मालूम न था

---

१४ राग झंजोटी ताल दादरा

शमांरू जल्वाफ़ुना था मुझे मालूम न था
साफ़ पर्दे में अैयां था मुझे मालूम न था } टेक
गुल में बुलबुल में हर इक शाख में हर पत्ते में ।

१ दीपक की लाट (मुख) २ रौशन, प्रकाशमान ३ जाहर, स्पष्ट ४ पुष्प.

जावंजा उस का निशां था मुझे मालूम न था ॥ १-॥
एक मुद्दत देहरो हरमें में ढूंडा नाहक ।
वह देर कुलंब निहां था मुझे मालूम न था ॥ २ ॥
सच तो यह है कि सिवा यार के जो कुछ था हयातं ।
वैहम था शक था गुमां था मुझे मालूम न था ॥ ३ ॥
है ग़लत, हस्तिं-ए-मौहूम को जो समझे थे ।
हर वतंन अपना जहां था मुझे मालूम न था ॥ ४ ॥

५ हर स्थान ६ मंदर ७ मस्जद ८ निष्फल, बे फायदा ९ अन्दर १० हृदय दिल ११ छुपा हुवा १२ जिन्दा, प्राण रखता हुवा १३ भ्रम १४ कल्पित वस्तु, कल्पित अपने देह, प्राण १५ देश, घर, यहा कवि के नाम से भी मुराद है १६ मुल्क,

---

१५ राग काफी ताल गजल

मुझ को देखो ! मै क्या हूं तन तन्हा आया हूं ।
मतेला-ए नूरे खुदा हूं तन तन्हा आया हूं ॥ १ ॥

१ अकेला २ प्रगट होने की जगह ३ ईश्वर का प्रकाश (जगत्,

मुझ[४] को .आशक कहो माशूक़ कहो इशक़ कहो ।
जा बजा जल्वा नुमा हूं तन तन्हा आया हूं ॥२॥
मैं ही मसजूदो[५] मलायक हूं बशकले[६] आदम ।
मज़हरे[७] खास खुदा हू तन तन्हा आया हूं ॥ ३ ॥
लामकां अपना मकां है सो तमाशा के लीये ।
मैं तो पर्दे मे छुपा हू तन तन्हा आया हूं ॥ ४ ॥
हूं भी, हां भी अनेलहक़ है यह भी मञ्जल अपनी ।
शम्से[१०] इर्फा की ज़ियां हू तन तन्हा आया हूं ॥ ५ ॥
किस को ढूढू किसे पावू मैं— बताओ साहिब ।
आप ही आप में छुपा हूं तनतन्हा आया हूं ॥ ६ ॥

४ जाहर, प्रगट ५ मे देवताओं का पूजनीय हू अर्थात देवतागण मेरी उपासना करते है ६ पुरुप की सूरत में ७ स्वय ईश्वर के प्रगट करने वाला ८ देश रहत ९ अहम् ब्रह्मास्मि, " मैं ईश्वर (ब्रह्म) हू १० ज्ञान के सूरज का प्रकाश.

१६ राग तिलंग ताल केरवा.

कहां जाऊं ? किसे छोड़ूं ? किसे ले लूं ? करूं क्या मैं।
मैं इक तूफ़ां क़यामत का हूं पुर हैरत तमाशा मैं ॥
मैं बातिन मै .अयां ज़ेरो ज़वर चप रास्त पेशो पस ।
जहां मैं हर मकां मै हर ज़मा हूंगा सदा था मैं ॥
नहीं कुच्छ जो नहीं मैं हूं इधर मै हू उधर मै हूं ।
मै चाहूं क्या किसे ढूंडू सभों में ताना वाना मै ॥
वह वैहरे हुसनो खूबी हूं हुबाबे[13] हैं कोफ और कैलास ।
उड़ा इक मौज से कतरा बना तब मिहर[16] आसा मैं ॥
ज़रो-ओ-निमत मेरी किरणों में धोखा था सुराब ऐसा।
तजल्ली नूर है मेरा कि राम .अहमद हूं ईसा मै ॥

१ हैरानी से भरा हुवा २ अन्दर, ३ जाहर ४ नीचे ५ उपर ६ बायां ७ दायां ८ आगे ९ पीछे १० देश ११ काल १२ सुंदरता का समुद्र १३ बुलबुला १४ कोह काफ़ पर्वत १५ लैहर १६ सूरज जैसा १७ धन और दौलत १८ धूप में रेत का मैदान जो पानी मान हो १९ तेज़ प्रकाश.

१७ राग तिलंग केरवा ताल.

मैं हूं वह ज़ात नापैदा किनारो मुतलकों बेहद
कि जिस के समझने में .अक़्ले कुल भी तिफ़ले नांदां है ॥
कोई मुझ को खुदा माने कोई भगवान माने है
मेरी हर सिफत बन्ती है मेरा हर नाम शांयां है ॥
कोई बुत खाना में पूजे हैरम में कोई गिर्जा में
मुझे बुतखाना–ओ–मसजद कीसाँ तीनों यक्सां है ॥
कोई सूरत मुझे माने कोई मुतलक़ पिहचाने है
कोई खालक़ पुकारे है कोई कहता यह इन्सां है ॥
मेरी हस्ती में यकताई दूई हर्गज़ नहीं बनती
सिवा मेरे न था–होगा न है यह रंमंज़ इर्फां है ॥

१ न उत्पन्न होने वाली वस्तू २ बिलकुल अनंत ३ बुद्धि ४ नादान बच्चा ५ .आम. जाहर (छूपा हुवा) ६ काबा (मसजद) ७ गिर्जाघर ८ अद्वैत ९ मेरे बिग़ैर १० ज्ञानीयों की रमज़

१८ राग सिंधोरा ताल दीपचंदी.

न दुश्मन है कोई अपना न साजन ही हमारे हैं।
हमारी ज़ाते मुतलक़ से हुवे यह सब पसारे हैं॥ } टेक
न हम हैं देह मन बुद्धि नहीं हम जीव नै ईश्वर।
चले इक कुन हमारी से बने यह रूप सारे हैं॥
हमारी ज़ात नूरानी रहे इक हाल पर दायम।
कि जिस की चमक से चमकें यह मिहर-ओ-मांह सतारे हैं॥
हर इक हस्ती की है हस्ती हमारी ज़ात पर क़ायम।
हमारी नज़र पड़ने मे नज़र आते नज़ारे हैं॥
अंगे मुख्तलिफ नाम-ओ-शकल जो दमक मारे है।
हमारे .ूर के शोले से उठते यह शरारे हैं॥

१ मित्र, २ आत्मा, असल स्वरूप, ३ नहीं ४ आज्ञा, हुक्म, इशारह ५ स्वरूप असली, आत्मा ६ प्रकाश स्वरूप ७ नित, हमेशा ८ सूरज ९ और १० चंद्रमा ११ वस्तू १२ वस्तू पना, जान १३ नाना प्रकार के दृश्य पदार्थ १४ नाना प्रकार के नाम और रूप १५ चमके हैं. १६ अपने स्वरूप (आत्मा) के अग्नि रूपी पर्वत की १७ लाट १८ अंगारे.

१९ राग जंगला ताल धुमाली.

बाग़े[1] जहां के गुल[2] हैं या ख़ार[3] हैं तो हम हैं । } टेक
गर यार हैं तो हम हैं अग़यार[4] हैं तो हम हैं ॥

दरया-ऐ-मार्फ़त[5] के देखा तो हम हैं साहिल[6] ।
गर वार हैं तो हम हैं वर पार हैं तो हम हैं ॥

वाबस्तः[7] है हमीं से गर जब्र[8] है वगर क़द्र[9] ।
मजबूर हैं तो हम हैं मुख़तार हैं तो हम हैं ।

मेरा ही हुस्न[10] जग में हर चंद मौजज़न[11] है
तिस पर भी तेरे तिशनः-ऐं[12]-दीदार हैं तो हम हैं ॥

फैला के दामे उल्फ़त[13] घिरते घिराते[14] हम हैं ।
गर सैद[15] हैं तो हम हैं सय्याद[16] हैं तो हम हैं ॥

१ दुन्या के बाग़ के २ फूल ३ कांटा ४ दुशमन ५ आत्मज्ञान का दरया (समुद्र) ६ तट (किनारा) ७ बन्धा हुवा है, संबन्ध रखता है ८ ज़बरदस्ती ९ इख़त्यार, ताक़त १० सौन्दर्यता ११ लैहरें मार रहा है १२ देखने के प्यासे १३ मोह का जाल १४ फंसने फंसाते १५ शकार १६ शकारी.

अपना ही देखते हैं हम वन्दोवस्त यारो ।
गर दाँद हैं तो हम हैं फर्याद हैं तो हम है ॥

१७ इन्साफ अदालत

---

२० भैरवी ग़ज़ल

दिल को जब ग़ैरे से सफा देखा । } टेक
आप को अपना दिलरवाँ देखा ॥ }
पी लीया जामँ वादः-ऐं-वह्दत ।
ख्वेशँ-ओं-बेगानाँ आशना देखा ॥
जिस ने है ज़ात अपनी को जाना ।
आप को हक़ से कब जुदा देखा ॥
रमज़े रहबर को अपने जब समझा ।

१ दूसरे से २ माशूक (प्यारा) ३ प्याला ४ अद्वैत रूपी मद [शराब] का ५ अपना ६ और ७ बेगाना दूसरा ८ दोस्त मित्र ९ सत् स्वरूप १० गुरू के उपदेश.

न कोई गैरे ब-मासवा देखा ॥
करके बाज़ार गर्म कसरत का ।
आप को अपने में छुपा देखा ॥
ग़ैर का इस्म गरचि है मशहूर ।
न निशां उस का न पता देखा ॥
जब से दर्शन है राम का पाया ।
ऐ राम ! क्या कहूं कि क्या देखा ॥

११ अपने से अलग कोई न देखा १२ नानत्व १३ नाम,

---

२१ भैरवी ग़ज़ल.

यार को हम ने जा बजा देखा ।
कहीं बन्दाः कहीं खुदा देखा ॥
सूरते गुल में खिलखिला के हंसा ।
शकले बुलबुल में चैहचहा देखा ॥

१ जगह बजगह २ फूल की सूरत ३ बुलबुल की शक्ल में.

कहीं है बादशाहे तख्ते नशीं ।
कहीं कासा लीये गदा देखा ॥
कहीं आबिद बना कहीं ज़ाहिद ।
कहीं रिंदो का पेशवा देखा ॥
करके दावा कहीं अनलहक़ का ।
बर सरे दार वह खिचा देखा ॥
देखता आप है सुने है आप ।
न कोई उस के मासवा देखा ॥
बल्कि यह बोलना भी तकल्लुफ है ।
हम ने उस को सुना है या देखा ॥

४ तख्त पर बैठा हुवा ५ भिख्या का प्याला, खप्पर ६ फकीर ७ पूजा पाठी ८ पवित्रता शुद्धि बर्तने वाला ९ मस्त अलमस्त १० सरदार ११ मैं खुदा हूं (शिवोऽहं) १२ सूली के सिरे पर १३ अन्य दूसरा १४ ज्यादा, यूं ही

२२ झंजोटी ताल ठुमरी.

भाग तिन्हां दे अच्छे । जिन्हां नूं राम मिले (टेक)

जब 'मैं' सी तां दिलबर ना सी ।
'मैं' निकसी पिया घट घट वासी ॥
खसम मरे घर वस्से, भाग तिन्हां० ॥ १

जद 'मैं' मार पिछां वल सुट्टीयां ।
प्रेम नगर चढ़ सेज़े सुत्तीयां ॥
.इसक़ हुलारे दस्से, भाग तिन्हां० ॥ २

चादर फूक शरअ दी सेकां ।
अक्खीयां खोल दिलबर नूं वेखां ॥
भरम शुब्हे सब नस्से, भाग तिन्हां० ॥ ३

ढूंड ढूंड के .उमर गंवाई । जां घर अपने झांती पाई ॥
राम संज्जे राम खब्बे, भाग तिन्हां० ॥ ४

१ भागी, निकल गयी २ अहंकार ३ उनके ४ फैंका ५ ज़ोर दखलावे ६ कर्म कांड ७ तापां ८ भागे ९ झांकी ली १० दायें ११ बायें.

पक्तिवार अर्थ।

१ जब अहकार अन्दर था तब यार (स्वरूप का अनुभव) अन्दर न था, मगर जब अहकार निकल गया तो ईश्वर घट २ में बसा नजर आया, शरीर का खावन्द (पति रूपी) अहकार जब मर जाता है तब ही यह घर वस्ता है क्योंकि स्वरूप का अनुभव तबही होता है॥ वेशक उन के नसीब बड़े अच्छे हैं जिनको राम घट घट में नजर आता मिलता है॥

२ जब अहकार को मार कर अपने पीछे फैंक दीया तो प्रेम नगर (भक्ति) के बिस्तरे पर सोना नसीब हुवा उस समय यारका इशक (प्रेम) अपना जोर दखलाने लग पड़ा॥ वेशक वह उत्तम भार्गी हैं जिन को इस तरह राम मिलजावे

३ जब मैं कर्म कांड की चादर (पर्दे) को ज्ञान अग्नि से जलाकर उस की आग तापने लगा तो यार (अपना स्वरूप) उसी वक्त नजर आने लग पड़ा, जब मैं ने ज्ञान चक्षू खोलीं फिर सब शक शुभे नाश हो गये॥ वेशक उन के भाग्य बड़े अच्छे हैं जिनको राम इस तरह नजर आये।

४ पाहिले ढूंड ढूंड के मैं ने उमर गवाई। मगर जब मैंने अपने घर के अन्दर झाकी की तो राम (मेरा स्वरूप) दायें और बायें

नज़र पड़ा ॥ बेशक उन के नसीब अच्छे हैं जिनको राम इस तरह मिल गया ॥

---

२३ राग बिहाग ताल दादरा.

मिक़राज़े[1] मौज दामने[2] दरया कतर गयी । } टेक
वहदत का बुर्क़ा[3] फट गया सारी सतर[4] गयी ॥ }
दरयाए[5] बेखुदी पै जो बादे[6] खुदी चली।
कसरत[7] की मौज हो के वह सारे पसर[8] गयी ॥
इस्मो[9] सिफत के शौक़ ने ऐसा कीया रज़ील[10],।
गुमनामी[11] वे सिफाती[12] की सारी क़दर[13] गयी ॥
जामा[14] वजूद पैहन के बाज़ारे[15] दैहर में,।

१ लैहर की कैंची २ दरया के पल्ले (चादर) ३ एकता का पर्दा ४ भेद, परदा दूर हो गया ५ बेखुदी (अहङ्कार रहत) के समुद्र अथवा धारा पर ६ अहङ्कृत रूपी वायू ७ नानत्व की लैहर ८ सर्व ओर फैल गयी ९ नाम रूप १० कमीना, नीच ११ छुपी हुई १२ निर्गुणता १३ इज़्ज़त १४ शारीरक चोला (शरीर रूपी लिबास) १५ समय (ज़माने) के बाज़ार में.

ज़ातो सिफात अपनी की सारी खबर गयी ॥
फरज़ेन्दो ज़नो माल की महब्बत में होके गर्क ।
इन्सान के वेजूद की सारी वेकुर गयी ॥
शोहवत तमा-ओ-खशम-ओ-तकब्बर में आ फसे ।
यकताई ज़ात की जो शरम थी उतर गयी ॥
यह करलीया यह करता हूं यह कल करूंगा मैं ।
इस फिकरो इन्तज़ार में शामो सहर गयी ॥
वाक़ी रही को दिल की सफाई में सर्फ कर ।
आराइशे वजूद में सारी गुजर गयी ॥
भूले थे देख दुन्या की चीज़ों को हम यहां ।
हादी ने इक तमांचा दीया होश फिर गयी ॥

१६ असली स्वरूप और उसके गुण १७ पुत्र, स्त्री और धन १८ चोला (शरीर) १९ इज्जत २० विषय कामना २१ लालच २२ क्रोध २३ अहंकार २४ आत्मा की लासानी, अद्वतीयपन की २५ रात्री और दिन (सध्याकाल और प्रात काल) २६ शरीर के सजाने में २७ रास्ता बताने वाला, शिक्षा देनेवाला गुरू.

गफ़लत की नींद में जो तअय्युन[28] की ख्वाब थी।
बेदार[29] जब हुए तो न जाना किधर गयी ॥
माशूक़ की तलाश में फिरते थे दर बदर।
नज़र आया बे नक़ाब[30] दुई की नज़र गयी ॥
दिलदार का वसाल[31] हुवा दिल में जब हुसूल[32]।
दिलदार ही नज़र पड़ा दीदा[33] जिधर गयी ॥
साक़ी[34] ने भर के जाम[35] दीया मार्फ़त[36] का जब।
दस्तार[37] भूली होश गया यादे[38] सर गयी ॥

२८ बध, क़ैद कर देने वाला स्वप्ना २९ जाग्रत हुई ३० जब द्वैत दृष्टि दूर हो गयी तो अपना असली स्वरूप बिना परदे के नज़र आ गया ३१ मेल मुलाकात अर्थात अनुभव ३२ प्राप्त ३३ दृष्टि ३४ (प्रेम रूपी) शराब पलाने वाला ३५ (प्रेम) पियाला ३६ आत्मक ज्ञान ३७ पगड़ी (दुन्या की इज़्ज़त की) ३८ सिर की याददाश्त, अर्थात अपने शरीर की खबर भी गुम हो गयी.

२४ गजल भैरवी.

१ है लैहर एक .आलम[1] बैहरे[2] सरूर में।
है वूदो[3] बाश सारी उस के ज़हूर में ॥
२ मिटती है लैहर जिस दम वोही तो बैहर है।
हर चार सू[4] है शोला मत देख .तूर[5] में ॥

१ जहान २ आनन्द का समुद्र ३ रहायश ४ तर्फ ५ आग का पहाड

१ दुन्या आनन्द के समुद्र में एक लैहर है और उस आनन्दघन समुद्र के जहूर में इस जहान की रहायश है।

२ जिस समय यह लैहर मिट जाती है उसी समय वही लैहर समुद्र हो जाती है। चारो तर्फ लाट है पहाड में ही मत देख अर्थात चारों ओर प्रकाश है सिर्फ तूर के पहाड पर (जहा मूसा नें आग की लाट देखी थी) सिर्फ वहा पर ही मत देख

२५ प्रश्न.

मेरा राम आराम है किस जा[1]? देख कर उस को मैं करूं ठंडा।
क्या वह इस इक शिला पै बैठा है? क्या वह महदूद[3] और यकजा[4] है

१ जगह २ दिल. ३ परिछिन्न ४ एक जगह.

आत्म ज्ञान.

सुमला मौतजा

चाह क्या चान्दनी में गंगा है दूध हीरों के रंग रंगा
साफ़ बातन से आवे सीमी वर मीठी २ सुरों से गा
लुत्फ़ रावी का आज लाती है यू पता राम का सुन

१ अन्दर २ चान्दी की शकलवाला जल ३ दरया का जो लाहौर में बेहता है

२६ जवाब

देखो मौजूद सब जगह है राम मोह बादल हुआ है उस
चलकि है ठीक ठीक बात तो यह उस में है बूदो बाशे
यह अमूरत है मूरती उस की किस तरह होसके ? कह
कुछे शैऽनं मुहीत है आकाश मूर्ती में न आ सके
जो है उस एक ही की मूरत है जिस तरफ झांकें उस

१ चान्द २ तीनों लोकों की उस में स्थिति भी र
३ कुल दुन्या को घेरे हुवे अर्थात सर्व व्यापक.

२७ राग कानड़ा ताल मुगलै

खिला समझ कर फूल बुल्बुल चली।
चली थी न दम भर कि ठोकर लगी॥
जिसे फूल समझी थी साया ही था।
यह झपटी तो तड़ शीशा सिर पर लगा॥
जो दायें को झांका वुही गुल खिला।
जो बायें को दौड़ी यही हाल था॥
मुक़ाबिल उड़ी मुह की खाई वहां।
जो नीचे गिरी चोट आयी वहां॥
क़फ़स के था हर सिंमत शीशा लगा।
खिला फूल मर्कज़ में था वाह वा॥
उठा सिर को जिस आन पीछे मुड़ी।
तो ख़ंदः था गुल आंख उस से लड़ी॥
चली, लैक दिल में कि धोखा न हो।

१ साह्मने २ मुह को चोट आई ३ पिन्जरा ४ तर्फ ५ दरमियान् ६ खिला हुवा ७ लेकिन, किन्तु.

थी पहिले जहाँ रुख कीया उधर को॥
मिला गुल हुई मस्त-ओ-दिलशाद थी।
क़फ़स था न शीशे वह आजाद थी॥
यही हाल इनसान तेरा हुवा।
क़फ़स मे है दुन्या के घेरा हुवा॥
भटकता है जिस के लीये दर बदर।
वह आराम है कलंबं में जेलवः गर॥

८ खुश ९ पुरुप १० अन्दर दिल ११ स्थित॥ यह एक बुलबुल की हालत से पुरुप की हालत बताई है॥ यह पक्षी पिन्जरे में कैद था, उस के चारों तरफ शीशा लगा हुवा था और पिन्जरे के बीच में फूल लटका हुवा था जिस पर यह बुलबुल आप बैठी थी मगर उसको भूलकर चारों तरफ जो फूल का प्रतिबिम्ब पड़ता था उसको फूल समझ दौड़ी और चोट खाई

---

२८ गजल राग पील्

पड़ी जो रही एक मुद्दत ज़मीं में।

छुरी तेज आहन[1] की मिट्टी ने खाई ॥
करे काटना फांसना किसतरह अब।
ज़मीं से थी निकली, ज़मीं ने मिलाई ॥
हूवा जब ज़मीं खुद यह लोहा तो बस फिर।
न आतश सही सिर पै नै चोट आई ॥
छुरी है यह दिल, इस को रहने दो बेखुद।
यहां तक कि मिट जाये नामे जुदाई ॥
पड़ा ही रहे ज़ाते मुतलक़[2] में बेखुद।
खबर तक न लो, है इसी में भलाई ॥
"मेरा तेरा" का चीरना फाड़ना सब।
उड़े। हो दूई की न मुतलक़ समाई ॥
न गुस्सा जलाये मुसीबत की नै[3] चोट।
मिटे सब तअ़ल्लुक़[4]। खुदाई खुदाई ॥
जिसे मान बैठे थे घर यार भाई।

१ लोहा २ स्वस्वरूप ३ नहीं ४ सम्बन्ध.

वह घर से भुलाने की थी एक फांई ॥
भुला घर को मंज़ल में घर कर लीया जर।
तो निज बादशाही की करदी सफाई ॥
हवा के बगोलो से जब दिल को बांधा।
छुटी ना उमेदी की मुंह पर हवाई ॥
कबल मर्दमे चशमं । सूरज। बते आब।
तऽल्लक़ की आलूदगी थी न राई ॥
जो सच पूछो सैरो तमांशा भी कब था।
न थी दूसरी शै न देखी दिखाई ॥
थी दौलत की दुन्या में जिस की दुहाई।
जो खोला ग्रंह को तो पाई न पाई ॥
कीये हेर सेह हालत के गराचिः नज़ारे।
चले राम तन्हा था मुतलक अंकाई ॥

५ कैद, फांसा ६ आंख की पुतली ७ पानी की बतालू ८ लेप, लिबरला ९ जरा सी १० सैर अह खेल ११ वस्तू १२ शोर १३ गांठ १४ एक पैसे का तीसरा भाग १५ तीनों दशा १६ एक अद्वतीय.

२९ शकराभरण ताल कैरवा.

जां तूं दिल दीयां चशमां खोलें हू अल्लाह हू अल्लाह बोलें।
मैं मौला कि मारें चीक्ष, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक॥ १ टेक

जाम शरावे वहदत वाला पी पी हर दम रहो मतवाला।
पी मैं वारी ला के डीक, अल्लाह शाह रग थीं नजदीक ॥ २
गिरजा तसवीह जंजू तोड़ें, दीन दुनी वल्लों मुंह मोड़ें।
ज़ात पाक नूं ला न लीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक॥ ३
जे तैनूं राम मिलन दा चा, ला लै छाती लग्गा दा।
नाम लोहा दा धरया पीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक॥ ४
सुन सुन सुन लै राम दुहाई, वे अन्तः क्यों अन्त है चाई।
मालिके कुल,तू मंग न भीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक॥ ५
न दुन्या दी खे उड़ा हा हा कार न शोर मचा।
छड रोना हस गाओ ते गीत, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक॥ ६
चुक सुट पर्दा दूई वाला, अप्यां विचों कढ छड जाला।
तूं ही तू नहीं होर शरीक, अल्लाह शाह रग थीं नज़दीक ॥ ७

पंक्तिवार अर्थ.

१ जब तूं अपने दिल की आंख खोलने लगे तो मैं अल्लाह हूं मैं अल्लाह हूं बोलने लग पडे ! और चीखें मारे कि मैं ब्रह्म हूं और तुमें यह स्पष्ट अनुभव होने लगपडे कि ब्रह्म गले की नाडी से भी अधिक नजदीक है। अर्थात् घट के अन्दर है या तू खुद है ॥ १

२ ऐ प्यारे ! एकता की खुशी रूपी शराब का प्याला हर दम पी पी कर मतवाला हो, और डीक लगा कर (एक घूट से) पी क्योंकि अल्लाह (अपना स्वरूप) गले कीरग से भी अधिक नज़दीक है अर्थात ईश्वर तेरे घट अन्दर है २

३ मन्दर, माला और जंजू तो तूं तोड़ रहा है और धर्म अर्थ इत्यादि से तूं मुंह मोड रहा है, ऐ प्यारे ! अपने शुद्ध स्वरूप को इसतरह धब्बा मत लगा क्योंकि वह (स्वरूप) तेरे समीप है ॥

४ अगर तुम को ईश्वर के पाने (मिलने) की इच्छा है (तो जितना जोर लगता है लगाले, वह बाहर नहीं मिलेगा क्योंकि जैसे लोहा लोहे के बर्तन (पीक) से कुछ अलग नहीं है बल्कि लोहे का ही नाम पीक धरा हुवा है (एसे ईश्वर ही तू है) वह तेरे से भिन्न नहीं है) बल्कि तेरी शांह रग सेभी अधिक समीप है॥

५ खूब राम की दुहाई सुन ले, ऐ प्यारे ! अनन्त हो कर तू

अन्त में (परिच्छिन्न) क्यों होता है ? और कुल्का मालक हो कर तू भिक्षारी क्यों बनता है, ईश्वर तो तेरे अधिक समीप है

६ न तो दुन्या की तू धूल उड़ा और ना ही तूं हा हा करके शोर मचा, रोना छोड बलकि हम और गा क्योंकि ईश्वर तो तेरे गले की नाड़ी से भी अधिक समीप है ॥

५ द्वैत का पर्दा तूं दूर करदे और आंखों से अज्ञानरूपी जाला (पर्दा) बाहर फैंक क्योंकि तूं ही तू (एक) ? सिर्फ सिफ है और तेर कोइ भी तेरे बराबर नहीं (बलकि ईश्वर भी तू ही है) तेरे गले की नाड़ी सेभी अधिक समीप है ॥ ७

---

३० राग शङ्कराभरण ताल दादरा

की करदा नी की करदा तुसी पुछोरसां दिलबर की करदा । (टेक)

इकसे घर विच वसदयां रसदयां नहीं हुंदा विच परदा की करदा० १

विच मसीत नमाज़ गुज़ारे बुतखाने जा वरदा की करदा० २

आप इक्को कोइ लाख घर अन्दर मालक हर घर घर दा की करदा० ३

मैं जितवल देखां उतवल ओही हर इक दी संगतकरदां
की करदा० ४

मूसा ते फरऔन बना के दो होके क्यों लड़दा ॥
की करदा० ५

---

१ मतलब एक ही घर मे रहते हुये पर्दा नहीं हुवा करता (मगर मेरा स्वरूप मेरे दिल रूपी घर में रहते हुवे पर्दे में छुपा हुवा है) इसलीये ए लोगो! तुम इस दिल्बर (प्यारे आत्मा) को पुछो कि यह क्या (लुकन छिपन, खेल) कर रहा है

२ कहीं तो मसजद मे छुप कर बैठा रहता है और उस के आगे नमाज होती है और कहीं मदरों में दाखल हुवा है जहां उस की पूजा हो रही है इस लीयें ऐ लोगो! दिल्बर को पूछो कि क्या कर रहा है ॥

३ आप खुद तो ऐक (अद्वतीय) है मगर लाखों घरों (दिलो) के अन्दर दाखल हुवा २ हर एक घर का मालक हुवा २ है, इस लीयें ऐ लोगो तुम दरयाफत करो कि यह दिल्बर (प्यारा) क्या कर रहा है

४ जिधर मैं देखता हूं उधर दिल्बर ही नजर आता है और हर एक के साथ हुवा ? वुही (मिला बैठा) नजर आता है। इस लीये ऐ लोगो! आप दर्याफ्त करो दिल्बर (ईश्वर) यह क्या कर रहा है

५ मुसल्मानों में हजरत मुसा और हजरत फरौन (जिन में खूब झगडा इत्यादि हुवा था) इन दोनों को बनाकर और इसतरह से आप दो होकर यह (दिल्बर) क्यों लडता है और लडाता है इस लीये ऐ लोगो! आप दरयाफ्त करो कि यह दिल्बर क्या करता है

३१

विना ज्ञान जीव कोइ मुक्त नहीं पावे ॥ (टेक)
चाहे धार माला चाहे बान्ध मृग छाला।
चाहे तिलक छाप चाहे भसम तू रमावे ॥ १ ॥ विना०
चाहे रचके मन्दर मठ पत्थरों के लावे ठठ।
चाहे जड इदारथों को सीस नित निवावे ॥ २ ॥ विना०
चाहे बजा गाल चाहे शंख और बजा घडयाल।
चाहे ढप चाहे ढोल झांझ तू बजावे ॥ ३ ॥ विना ज्ञान०

चाहे फिर तू गया प्रयाग काशी में जा प्राणा त्याग।
चाहे गंगा यमुना चाहे सागर में नहावे ॥ ४ ॥ विना ज्ञान०
द्वारका अरु रामेश्वर बद्रीनाथ परवत पर।
चाहे जगन नाथ में तूं झूठो भात खावे ॥५॥ विना ज्ञान०
चाहे जटा सीस बढा जोगी हो चाहे कान फड़ा।
चाहे यह पाखंड रूप लाख तूं बना वे ॥ ६ ॥ विना ज्ञान०
ज्ञानियों का कर ले संग मूर्खों की तज दे भंग।
र्फिर तुझे मुक्ति का साधन ठीक आवे ॥ विना ज्ञान०

१ तीर्थों के नाम हैं २ गंगा सागर से मुराद है

३७

मक्के गया गल्ल मुकदी नाही जे[१] न मनो मुकांईये।
गंगा गयां कुच्छ ज्ञान न आवे भावें सौ सौ टुव्वे लाईये।
गैया[३] गयां कुच्छ गति न होवे भावें लख लख पिंड वट पाईये

१ बात, धंधा २ अगर ३ खतम करें ४ तीर्थ का नाम है

प्रयाग गयां शान्ति न आवे भावें वैह वैह मूंड मुंडाईये।
दयाल दास जेड़ी वस्त अन्दर होवे ओहनूं बाहर क्यों-
कर पाईये ॥ १ ॥

५ दस के.

ज्ञानी की अवस्था.

राग भैरवी ताल रूपक

नसीमे वहारी चमन सब खिला, अभी छींटे दे दे के
बादल चला

सुलो ! वोसा लो ! चान्दनी का मिला, जवां नाज़नी इक
सरापा वला

हुई खुश ! मिला तखलिया क्या भला, क़रीब आई पूरी
हंसी खिलखिला

न जादू से लेकिन ज़रा वह हिला, निगह से दीया
कांप को झट जला

१ बसन्त ऋतु की ठण्डी वायु २ बाग़. ३ पुष्प ४ जवान
नाज़ुक स्त्री ५ अति सुन्दर ६ एकान्त ७ काम देव, वीर्य

सकी जब न सूरज में दीवा जला, परी बन गयी खुद मुजस्सम हिया

कि सब हुस्न की जान मैं ही तो हूं।
मेहरो मांह के प्राण मैं ही तो हूं॥ १॥

हज़ारों जमा पूजा सेवा को थे, थे राजे चवर मोर छल कर रहे

थे दीवान धोते क़दम शौक़ से, थे खिदमत में हाज़र मेदह खां खड़े

ऋषि तुम हो अवतार सब से बड़े, यह सब देख बोला लगा केहक़हे

८ हया सेमर गयी (अर्थात जब ज्ञान वान रूपी सूरज में अपनी कामना, बदमाशी का दीपक न जला सकी अथवा ज्ञान वान उसके सौन्दर्य पेन से फन्दे में न आसका तो खुद शर्मिंदा होगयी) ९ मुदत्ता १० सूरज और चांद ११ तारीफ करने वाले. १२ हंस कर बोला.

~ १

बड़ा ही नहीं बलकि छोटा भी हूं।
न महेदूद[13] कीजीयेगा सब मैं ही हूं ॥ २ ॥

बुरे तौर थे लोग सब छेड़ते, ठठोली से थे फबतीयां
घड़ रहें

तड़ा तड़ तड़ा तड़ वह पत्थर जड़े, लहू के नशां सिर
पे रुखें[14] पे पड़े

प्यांपे[15] थे जख़म और सदमें कड़े, थे [16]दीदे अजब
मुसकाँहट भरे

कि इस खेल की जान मैं ही तो हूं।
यह लीला के भी प्राण मैं ही तो हूं ॥ ३ ॥

समा नीम[18] शब माह था जनवरी, हिमालय की बर्फें
स्याह रात थी

१३ कैद (परिछिन) न कीजीयेगा १४ चेहरे पर १५ लगातार १६ आँखें १७ हंसी से भरे हुवे १८ आधी रात का समय.

बरफ़ की लगी उस घड़ी इक झड़ी, थमी बैर्फ़ बारी तो आन्धी चली
बदन की तो गत बेदमजंनू सी थी, पै दिल में थी ताकत लेबों पर हंसी

कि सर्दी की भी जान मैं ही तो हूं।
अनासिर के भी प्राण मैं ही तो हूं॥ ४॥

समाँ दोपैहर माहे था जून का, जगह की जो पूछो। खते उस्तवा
तमाज़त ने लू की दीया सब जला, हरारत से था रेगभी भूनता

१९ बरफ का बरसना बन्द हुवा. २० हालत २१ सूखे हुवे पतले बेंत के दरख़्त का नाम है २२ हॉट-शुल २३ चारों तत्व (पृथ्वि जल वायु आकाश) २४ समय, काल २५ मास, महीना २६ दुन्या के दरमियान (बराबरी हम्वारी) लकीर अर्थात पृथ्वि का मध्य हिस्सा जहां बड़ी गर्मी होती है

बदन मोम सां था पिघलता पड़ा, पै लब से था खन्दाः[27] परोया हुवा

कि गर्मी की भी जान मैं ही तो हूं।
अनासर के भी प्राण मैं ही तो हूं ॥८॥

बीयाबां[28] तनहा लेको[29] दक् गजब, इधर मेदां[30] खाली उधर खुश्क लब
उठाई नगह सामने। ऐ अजब ! लड़ी आंख इक शेरे[31] गुर्रां से तब
वह तेज़ी से घूरा ! गया शेर दब, जलाले[32] जुमाली था चितवन[33] में अब

कि शेरों की भी जान मैं ही तो हूं।
सभी खल्क[34] के प्राण मैं ही तो हूं ॥९॥

२७ हंसी मुसकरहट वाला २८ जंगल. २९ बड़ा भारी गुमान. ३० पेट ३१ तुंद भ्यानक शेर ३२ निज मस्ती का जलाल (तेज़) ३३ निगाह, दृष्टि ३४ खलक़त, लोग

चला मंझधारा में किश्ती घिरी, यह कहता था तूफां
कि हूं आखरी
थपेड़ों से झट पट चटां वह चिरी, उधर बिजली भी वह
गिरी वह गिरी
था थामे हूये वांसैं ज्यूं वांसरी, तबस्सुमैं में जुरअँत भरी
थी निरी

कि तूफां की भी जान मैं ही तो हूं ।
अनासर के भी प्राण मैं ही तो हूं ॥७॥

बदन दर्दो पेचश से सीमैंव था, तपे सख्तो रेज़श से बेताव था
नशा ज्ञान का ज्यूं मैये नाव था, वह गाता था । गोया
मर्ज़ ख्वाब था
मिटा जिस्म जो नक्शे चर आव था, न विगड़ा मेरा
कुच्छ कि खुद आव था

३५ चप्पा बेड़ी के चलाने वाला ३६ मुसक्राहट-हंसी ३७ दलेरी ३८ पारा हूवा २ था ३९ अंगूर की शराब की तरह ४० बीमारी स्वप्नमात्र थी ४१ पानी के ऊपर नक़्श की तरह

जहां भर के अर्धदाने खुवां मैं हूं।
मै हू राम हर एक की जां में हूं ॥८॥

४२ सुदर पुरुषों के शरीर

ज्ञानी की दृष्टि

२ राग कालिंगडा ताल वरवा.

जो खुदा को देखना हो, तो मै देखता हूं तुम को }
मैं तो देखता हूं तुम को, जो खुदा को देखना हो } टेक
यह ईजाबे साज़ो सामां, यह नेकावे यासो हिरॅमां
यह ग़लाफे नगो नॅामूम, वह दमाग़ो दिल का फानूस
वह मनो शुमा का पर्दा, यह लवासे चुस्त कर्दा
यह हा की सब्ज़ काई, वह फना स्याह रज़ाई
यह लफाफा जामा वुँर्क़ा, यह उतार सिंतर तुम को
जो अॅइना कर के भांका, तो तुम ही सफा खुदा हो
॥ जो खुदा को० १

१ शर्म, आड़ २ पर्दा ३ मायूसी, ४ ना उमेदी ५ पर्दा, चादर ६ पर्दा ७ नगा

ऐ नसीमे शौक़! जा के, वह उड़ा दे ज़ुल्फ रुख से
ऐ सबाये इल्म! जा कर, दे हटा वह ख्वाब चादर
अरे बादे तुन्द मस्ती! दे मिटा अंबर की हस्ती
ऐ नज़रके ज्ञान गोले! यह फसील झट गिरा दे
कि हो जेहल भसम इक दम, जले वहम हो यह आलम
जो हो चार सू तरन्नम, कि हैं हम खुदा, खुदा हम
॥ जो खुदा को० २

न यह तेग़ में है ताक़त, न यह तोप में लियाक़त
न है बर्क़ में यह यारा, न है ज़हर ही का चारा
न यह कारे तुन्द तूफ़ां, न है ज़ोर शेरे ग़ुर्रा
कोई जज़्बः है न शहवत, कोई ताना [१५]नै शरारत
जो तुझे हलाने आयें

८ शौक़ (जिज्ञासा) की पवन ९ ज्ञान की जिज्ञासा रूपी वायु
१० बादल ११ धीमी धीमी पगं, मंद मंद स्वर से राग गाना
१२ बिजली १३ ताक़त बहादुरी १४ तुंद शेर १५ नहीं

जो तुझे हलाने आयें तो हो राख भसम हो जायें
वह खुदाई [16]दीदे खोलो कि हों दूर सब बलायें
॥ जो खुदा को० ३

वह पहाड़ी नाले चम चम, वह बहारी अबर छम छम
वह चमकते चान्द तारे, हैं तेरे ही रूप प्यारे!
दिले अँन्दलीय में खून्, रुखे गुल का रंगे गुँलगूं
वह शँफक़ के सुर्ख इंशवे, हैं ते रेही लाल पछे
है तुम्हारा धाम तो राम, जरा घर को मुंह तो मोडो
कि रहीम राम हो तुम, तुम ही तो खुद खुदा हो
॥ जो खुदा को० ४

१६ ब्रह्म दृष्टि १७ बुलबुल का दिल १८ सुरख रंग १९ बादल में गुलाली उदय अस्त के समय जो होती है २० नखरे, इशारे

गजल:—

यह साज और सामान का पर्दा. (यह सर्व असवाब जिस में कि तुम छुपे हुवे हो), और यह ना उमेदी और मायूसी की चादर (जो न मिलने सबब जिस में तुम ढके हुवे हो), और यह इज्जत अरु बेशरमी का पोश, और दिल व दमाग रूपी फानूस (जिस के अन्दर आप कैद हुवे छुपे हो) और 'मैं' अर(और) 'तुम' की भेद दृष्टि (जिससे असली अपना आप गुम हुवा है) और जो परिछिन्न करने वाली पोशाक है, और वह हया या दारगीलिपनकी चादर (जो घासकी तरह अपने उपर छाई हुई है), और वह शुन्य अन्धकार (अज्ञान जिस से स्वस्वरूप ढका हुवा है), (इन तमाम पर्दों का बना हुवा) जो लफाफा, उसको अरु सर्व लिबास (तमाम पर्दे) उतार कर मैं ने जब॰ तुमको नगा (नगन) कर के देखा तो मालूम हुवा कि तुम ही साफ ईश्वर हो (पस इसी लीये मैं कहता हूं कि —अगर खुदा को देखना हो तो मैं देखता हू तुम को)

२ ऐ अपने स्वरूप (प्यारे) को मिलने की शौक (जिज्ञासा) रूपी वायू! इन पर्दों को (कि जिन में मेरा स्वरूप ढका हुवा है) जा कर उड़ा दे॥ ऐ हानसे सुगन्धित पवन! वह चादर

रूपी स्वप्न (कि जिस में लेटे हुवे मैं अपने स्वरूपको भूले हुवे हूं) जा कर हटा दे ॥ ऐ आनन्द से भरी हुई (निजानन्द रूपी) तेज वायु ! उस बादल की मौजूदगी को (कि जिसके होने से मेरा प्रकाश स्वरूप आत्मा ढका रहता है) दूर या नाश कर दे ॥ ऐ (आत्म) दृष्टिके ज्ञान गोले (उस अज्ञानकी) फसील (चार दीवारी) को (कि जिसने मेरे निज स्वरूप को छुपा रखा है) जा कर झट गिरा दे । ताकि अज्ञान झट भस्म (राख) हो जावे और संसार रूपी वैहम अर्थात भेद दृष्टि झट जल जावे और चारों तरफ आनन्दकी वर्षा हो, या यह कि आनन्द ध्वनी का आलाप होता रहे कि "खुदा हम हैं", 'हम खुदा हैं' (इस लीये मैं कहता हूं कि अगर खुदा को देखना हो तो मैं तुम को देखता हूं)

३ तल्वार में भी यह ताकत नहीं (कि तुझ को अपने स्थान से हला सके) और न ही तोप में ऐसी ल्याकत (क़ाबलीयत) है ॥ और न बिजली में यह शक्ती है (कि तुझको अपनी जगहसे हटा सके) और न जैहर ही इस का इलाज है ॥ और न ही यह तेज़ सख्त तूफान का काम है (कि तुझे परे कर सके) और न बड़े तुन्द मज़ाज़ वाले शेर का बल यह काम कर सकता है ॥ और न

कोई ऐसा विषयानन्द या विषय व्यसन ऐसा है (कि तुझको अपने मुकाम से हला सके) और न कोई बोली ठ्ठोली या चालाकी यह काम कर सकती है॥ क्योंकि अगर वह तुझ को कदापि हलाने के लिये आयें, तो वह खुद भस्म हो जायेंगे॥ इस लीये ऐ प्यारे! वह ईश्वर चक्षू खोलो कि सब तरहकी बलायें दूर हो जायें (इस लीये मैं कहता हू कि अगर खुदाको देखना हो तो मैं तुम को (वही) देखता हू)

४ वह चम चम करते वैहने वाले पर्वत के नदी नाले, और छम छम बरसने वाली श्रावणकी वर्षा, वह चमकते हुवे चांद और तारे, ऐ प्यारे! यह सब तेरे ही प्रेम रूप है॥ बुलबुल के दिल के अन्दर (प्रेम भरा) ग्लून (इशक) और पुष्पके मुखका उत्तम रंग (जिस के वास्ते बुलबुल तरसती है) ॥ और वह साय प्रात. काल (समय) की लाली (Twilight) के इशारे (नखरे), ऐ प्यारे (लाल पद्दे)! यह सब तेरे ही कृशमे (खेल) है॥. तुम्हारा असली घर तो राम है, जरा कृपा करके अपने असली घर की तरफ मुंह तो मोड़ो॥ क्योंकि रहीम (कृपालु) राम तुम ही तो खुद हो और तुम ही स्वयं ईश्वर हो (इस लीये मैं कहता हूं कि अगर मैं ने ईश्वर को देखना हो तो मैं तुमको (वही) देखता हू)

रौशनी की घातें.

३ राग देश ताल धमार

(जनूने नूर)

मैं पड़ा था पैहलू[1] में राम के । दोनों एक नींद में लेटे थे
मेरा सीना सीने[2] पे उस के था । मेरा सांस उस का तो सांस था
आये चुपके चुपके से रौशनी । दीये बोसे[3] दीदों[4] पे नाज़ से
लम्बी पतली लाल सी उंगलीयों से । खुशी से गुदगुदा दीया
कुच्छ तुम को आज दखाऊंगी, में दखाऊंगी । एसा कह के हाथ मुला दीया !

१ तरफ. २ छाती. ३ चुम्मी (यहां छूने से मुराद है). ४ आंखे.

यह जगा दीया कि सुला दीया। जाने किस बला में
फंसा दीया
ऐलो! क्या ही नक़्शा जमा दीया। कैसा रंग जादू
रचा दीया।
चली निखर कर हमें साथ ले। करी सैर हाथों में हाथ ले
मची खेल आंखों में आंख दे। गुल बलवैला सा
बपा दीया
इक शोर गौगा उठा दीया। निज धाम को तो भुला दीया!
मुंह राम से तो मुडा दीया। आरामे जान को मिटा दीया
थक हार कर झख मार कर। हर मूँ से बोला पुकार कर
अरी नावर्कारह रौशनी। अरी चकमा तू ने भुला दीया।
खेंदी किरणें (बाल) तेरी सफेद हैं। बालो में रंग
भरे है तू

५ शोर. ६ जान के आराम. ७ बाल ८ बेहुदाः ९ ताने से पुकारना.

गुलगूंना[10] मुंह पै मले है तू । नटनी ने रूप घटा दीया ।

रुख़[11] देखीये तो है फ़क़[12] तेरा । दिल गर्दिशों[13] से है शक़[14] तेरा

तू उडती पपैया से धूल है । रथ राम[15] ने जो चला दीया

कहो ! किस जवानी के ज़ोर हर । तू ने हम को आके उठा दीया

यूं कह के क़िस्सा[16] समेट कर । दिल जानू मे यार लपेट कर

फिर लम्बी ताने में पड़ गया । गोया गैरे[17] राम जला दीया

अभी रात भर भी न बीती थी । कि लौ रौशनी को हवा लगी

१० उबटना, अर्थात सुर्ख़ी इत्यादि जो औरतें अपने मुंह पर मला करती हैं ११ चेहरा, मुह १२ पीला, मुरझाया हुवा. १३ ज़मान के चक्कर १४ टूटा हुवा, फटा हुवा. १५ कवि का नाम है १६ कथा कहानी १७ राम से भिन्न या अन्य.

नये नखरे टखरे से प्यार से । मेरे चशमर्सीना को
　　　　　　　　　　　　　　　यों कीया

कुछ आज तुम को दखाऊंगी । मैं दखाऊंगी, ऐसा कह
　　　　　　　　　　　　के हाथ नचा दीया

कहूं क्या? जी! भंरे में आ गये । कैसा सब्ज़ बाग़
　　　　　　　　　　　　　　　दिखा दीया

लड़ भिड़ के आख़र शाम को । कैह अल्वदाः सब
　　　　　　　　　　　　　　　　　　काम को

आग़ोशे में ले राम को । तंन उस के मन में छुपा दीया

लेकिन फिर आई रौशनी । लो! दम दलासा चल गया

और फिर वोही शैतानीयां । वैसी ही कारस्तांनीयां

हंसने में और रूंमने में फिर । दिन भर को यूंही
　　　　　　　　　　　　　　　　बता दीया

येहूदाः टाल मटोलैं, जी । यारों का फिर उकैंना गया

१८ चक्षु के गाने को. १९ गोंग. २० पेच, दाओ. २१ बग़ल.
२२ शरीर. २३ चालाकिया. २४ दिल. २५ तंग आगया.

हम सो गये जाग उट्ठे फिर । यूं ही अलौहाज़ल क्यास
वाँहः न अपना रौशनी ने एक दिन ईफ़ी कीया
थकने न पाई रौशनी । मामूल पर हाज़र थी यह
घूरों में उर्रे होगयीं । इस का त्वातंर दौर था
किस धुन में सब इक़रार थे । क्यों दिन बदिन यह
गर्दीर थे ?
किस बात के दरपै थी यह ? । मस्तो खराबे मैं[3] थी यह
यह तो गुईया न खुला । सदीयों का अर्सा हो गया
हर बात जो समझी अजब । पास जा देखा तो सब
ख़ाली सुहाना ढोल था । धोका था फ़िंतना गौर्ल था

सब यार दिल पर धीर थे । और बेठकाना कार था
अपना तो हर शैव रूठ जाना । रौशनी का फिर मनाना
आज और कल और रोजो शब की । कैद ही में तलमलाना

सब मेहनतें तो थीं फज़ूल । और कार नाहमवार था
वह रौशनी का साथ चलना । अपना न हरगज़ उस को तकना
वह रौशनी के जी[४४] की हसरत । हम को न परवाह बलकि नफरत

सूदो[४६]ज़ियां, बीमो रजा । की रगड़ कारेज़ार था
यूंही रफता रफता पड़े कभी । कभी उठ खड़े थे मरे कभी

४२ योग. ४३ रात. ४४ दिल. ४५ अफसोस ४६ नफा, नुकसान् ४७ डर भए उमेद, या उर, भय. ४८ लड़ाइ.

कभी शिकमे मादॅर घर हुवा। कभी जॅन से बोसों
किनार था

बढ़ना कभी घटना कभी। मद्दो जज़ॅर दुशावर था
ग़र्ज़ इन्तज़ारो कशॉकशी। दिन रात सीना फगॅार था
क्या ज़िन्दगी यह है। चॅगोले की तरह पेचाँ रहें ?
और कोरॅ सग बन कर। शिकॅारे बाद में हॅरां रहें ?
लो आखरश आया वह दिन। इक़रार पूरा होगया
सदियों की मंजल कट गयी। सब कार पूरा होगया
हां! रौशनी है सुरखरू। तेरा वाद आज वॅफा हुवा
तेरे सदक़े सदक़े मैं नाज़ॅनीं। कुल भेद आज फॅदा हुवा

४९ मां का पेट (गर्भ) ५० बीवी, स्त्री ५१ चूमना इत्यादि.
५१ बढना घटना, या ऊचे नीचे, तरक्की तनज्जल. ५२ खैंचा तानी.
५३ दिल का (छाती) फाडना. ५४ हवा का गोला. ५५ पेच खाते हुवे ५६ अन्धा कुत्ता. ५७ हवा के शिकारमें. ५८ पूरा.
५९ ऐ प्यारी. ६० क़ुर्बान.

उ़मरों का उ़क़्दा[61] हल हूवा । कुफ़्लो[62] गिरह सब
खुल गये
सब क़बज़ो तंगी उड़ गयी । पाप और शुभे सब
डुल गये
सब ऐबावे[63] दूई मिट गया । दीदे[64] अ़जब यह खुल गये !
ऐ रौशनी ! ऐ रोशनी ! खुश हो । मैं तेरा यार हूं
खावन्द घर वाला हू मैं । ऊ़र्शतो[65] पनाह सर्कार हूं
वह राम जो म़र्मूद[66] था । साया था मेरे नूँर[67] का
क्या रौशनी क्या राम इक । शोर्ला[68] है मेरे तूर[69] का
इन आंसूवों के तार के । सिहरे से चिहरा खिल गया.
क्या लुत़्फ शादी मर्ग है । हर शै[70] से शादी वाह ! वाह !

६१ भेद, मसला, मुशकल. ६२ ताला और कुञ्जी (या गांठ). ६३ द्वैत रूप रचना. ६४ चक्षु. ६५ पीठ, आधार. ६६ पूजा कीया गया, पूजनीय. ६७ प्रकाश. ६८ लाट अग्नीकी ६९ अग्नी का पहाड. ७० वस्तू.

हां ! मुँर्दः वाद ऐ सांप सँग ! ऐ ज़ाँग मौंही चील गिद !
इस जिस्म से करलो ज़ियाफत, पेट भर भर वाह वाह !
आनन्द के चशमे के नाँके पर, यह जिस्म इक वंद था
वह वैह गया वंदेखुँदी, दरया वहा है वाह वाह !
सव फर्ज़ कर्ज़ और गर्ज़ के, इमराँज़ यक दम उड़ गये
हल फिर गया ज़ेरो ज़बँर पर, और सुहागा वाह वाह !
दुन्या के दल वादल उठे थे, नज़र ग़लत अँन्दाज़ से
लो इक नगाह से चुक गया, सारा सियापा वाह वाह !
तन नूर से भरपूर हो, मामूँर हो मसँरूर हो
वह उड गया जाता रहा, पुर नूँर हो काँफ़ूर हो
अब शव कहां ? और दिन कहां ?, फँर्दा है नै इँमरोज़ है

७१ खुशखसरी ७२ कुत्ता. ७३ कौवा, काग ७४ मच्छी. ७५ मूंह. ७६ अहकार का वन्द ७७ मर्ज़ वीमारीयें. ७८ नीचे ऊचे. ७९ गुल्त ढंग से. ८० भरा हुवा. ८१ खुश. ८२ प्रकाश से भरपूर. ८३ उड़ जाये. ८४ कल. ८५ आज.

है इक सरूरे लातगय्यर, ऐशं है नै सोज़ै है
उठना कहां ? सोना कहां ?, आना कहां ? जाना कहां ?
मुझ वैहरे नूरो सरूर में, खोना कहां ? पाना कहां ?
मै नूर हू मै नूर हूं, मैं नूर का भी नूर हूं
तारों मे हूं सूरज में हू, नजदिक से नजदिक हू और
दूर से भी दूर हू
मै मांदनो मखजन हू मै, मंबों हू चैशमा–ए नूर का
आराम गाँह आरॅाम देह हू, रौशनी का नूर का
मेरी तॅजली है यह नूरे, अकलो नूरे अर्नसरी

८६ न बदलने वाला आनन्द, विकार रहित आनन्द ८७ विषय आराम, आराम विषय से. ८८ जलन दु ख. ८९ आनन्द और प्रकाश का समुद्र ९० कान और खनोनकी जगह. ९१ चशमा, सूत, आगाज़, निकास, जहा से कुच्छ वस्तू निकले ९२ प्रकाश का चशमा (निकास). ९३ आराम की जगह ९४ आराम देनेवाला ९५ तेज ९६ पच भौतक प्रकाश अर्थात सूरज अह जोद भर भमि का तेज

मुझ से द्रख़्शां हैं यह कुल, अजराम चर्खे चम्बरी
हां ? ए मुबारक रौशनी ! ऐ नूरे जां ! ऐ प्यारी "मैं"
तू, राम और मैं एक हैं, हां एक हैं। हां एक हैं !
हर चश्म हर शै हर बशर, हर फ़ैहम हर मफ़हूम मैं
नाज़िरे नज़र मंज़ूर मैं, आलिम हूं मैं मालूम मैं
हर आंख मेरी आंख है, हर एक दिल है दिल मेरा
हां ! बुलबुलो गुल मिहरो माह, की आंख में है तिल मेरा
वहशत भरे आहू का दिल, शेरे बबर का कहर का
दिल आशके बेदिलका प्यारे, यार का और दहर का

:

९७ चमकते है. ९८ आकाश के तारे सूरज इत्यादि, वृत वाले आ-शमें सूरज चान्द इत्यादि. ९९ प्राण के प्रकाशक. १०० चक्षु १०१ जीवजन्तु १०२ बुद्धि समझ. १०३ समझाई गयी वस्तु. १०४ देखने वाला. १०५ दृश्य. १०६ बुलबुल पक्षी और फूल. १०७ सूरज और चान्द. १०८ भैय (नफरत, डर). १०९ मृग ११० बड़ा ज़बरदस्त, ताकतवाला. १११ ज़माना

अमृत भरे स्वामी का दिल, और मारे पुर[112] अज़
जैहर का
यह सब तेजली[113] है मेरी, या लेहर मेरे वेहर[114] का
इक बुलबुला है मुझ मे सब, ईजादे[115] नौ, ईजादे[116] नौ
है इक भंवर मुझ में यह मर्ग[117] नागहां और ज़ादे[118] नौ
सोये पडे बच्चे को वह, जाली उठा कर घूरना
आहिस्ता से मक्खी उड़ाना, तिफ्ले[119] का वह बसूरना
वह दो बजे शब[120] को शफाखाना में तिशना[121] मरीज़ को
उठ कर पिलाना सोडावाटर, काट अपनी नींद को
वह मस्त हो नंगे नहाना, कूद पडना गंग में
छींटे उड़ाना, गुल मचाना, गोते खाना रंग में

अर्थात जमाना साज का ११२ जैहर से भरे हुवे सांप का ११३ तेज ११४ समुद्र ११५ नयी बनाई हुई ११६ नयी तरक्की. ११७ इतफाकिया मौत ११८ नयी पैदायश. ११९ लडका. १२० रात १२१ पियासा बीमार.

वह मां से लड़ना, ज़िद में अड़ना, मचलना, एड़ी रगड़ना
वॉलेद[122] से पिटना और चलाते हुए आंखों को मलना
कालज के साइंस रूम[123] में, गैसों से शीशे फोड़ना
बारूद और गोलों से सफ दर[124] सफ सपाहें तोड़ना
इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं यह हम ही हैं ॥ टेक
गर्मी का मौसम, सुबह दम बदम, सांअत[125] है दो या तीन का
खिड़की में दीवा देखते हो, टमटमाता टीन का
दीवे पै परवाने गिरते हैं, बेखुदी में बार बार
बेचाराह लड़का कर रहा है, .इल्म पर जां को निसार[126]
बेचारे तालब .इल्म के, चेहरे की ज़र्दी है मेरी

१२२ पिता १२३ सायंस विद्याका कमरा १२४ कितार पीछे कितार १२५ घड़ी १२६ कुर्बान

बे नीद लम्बे सांस और आहों की सरदी है मेरी
इन सब चालौं में हम ही हैं, यह मैं ही हूं। यह हम ही हैं
है लैहलहाता खेत, [127]पुर्वा चलरही है ठुम ठुमक
गाढे की धोती लाल चीरा, चौधरी की लट लटक!
जोशे जवानी! मस्त [128]अलगोजा बजाना उछलना!
मुगदर घुमाना, कुशती लड़ना, बिछडना और कुचलना!
छकड़ा लदा है बोझ से, हिचकोले खाता बार बार
वह टांग पर धर टांग पड़ना, बोझ ऊपर हो सवार
शिंद्दते[129] की गर्मी, चील[130] अंडे के समय, सिर दुपैहर
जा खेत में हल का चलाना, [131]अर्क हो तर बतर
और सिर पै लोटा छाछ का, कुच्छ रोटियां कुछ साग धर
भत्ता उठा कुत्ते को ले, औरत का आना ऐंठ कर

१२७ पूरब दिशा से चलती हुई वायू १२८ बांसरी की एक किस्म है १२९ अत्यन्त १३० बडी तेज धूप जिस समय चील अंडे दीया करती है १३१ पसीना से मुराद है

इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं यह हम ही हैं

दुलहन का दिल से पास आना, ऊपर से रुकना झिजक जाना

शर्मो हया का .इश्क़ के, चंगोल[132] में रह रह के जाना

वह माहे गुलैंग[133] के गले में, डाल बाँह प्यार से

ठण्डे चशमों के किनारे, बोसों[134] बाज़ी यार से

हां ! और वह चुपके से छिप कर, आड़ में अश्जार[135] में

बेदाम खुफिया पुलिस बनना, राम की सर्कार के

इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हू यह हम ही हैं

यह सब तमाशे हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है ॥

वह इस तरफ़ खा खा के मरना, उस तरफ़ फ़ाक़ों से गुम !

वह बिलबलाना जेल में, जंगल में फिरना सुम बुकुम[136]

१३२ पंजा १३३ पुष्प जैसा सुंदर माशूक़ (दोस्त) १३४ चुमा लेना (चूमना) १३५ दरख़्त १३६ बौला गूंगा

और वह गद्दे‌ले कुर्सियां, तकिये बिछौने, बग्गीयां
सब मादरे सुं[१३७]संती बवासीर, अरु ज़ुकाम और हिचकियां
यह सब तमाशें हैं मेरे, यह सब मेरी करतूत है ॥
वह रेल में या तार घर में, महल कुवारिन टीन में
रूम अफ्रीका ईरान् में, जापान में या चीन में
सिसकना दुःखड़े सुनाना, खून् बहाना जार जार
वह खिलखिलाना क़हक़हों, और चैहचहों में बार बार
वह वकत पर बारश न लाना, हिंद में या सिंध में
फिर राम को गाली सुनाना, तंग हो कर हिंद में
वह धूप से सबको ममाले [१३८]मुर्ग बिरयां भूनना
बादल की [१३९]सौंढी को कि[१४०]नांरी चांदनी से गृदना
(चुप हो के खानी गालियां सालेसे इस शशुपाल से)[१४१]
खुश हो सलीबो दौ[१४२]र पर, चढना मुबारक हाल से

१३७ सुस्ती की माता १३८ भुने हुवे पक्षी की तरह १३९ चादर
१४० झालर १४१ इस फिकरे से मतलब कृष्ण का है
१४२ सूली और फासी (इस में मंसूर से मुराद है जो सूली

यह कुल तमाशे हैं मेरे यह सब मेरी करतूत है
*इन सब चालों में हम ही हैं, यह मैं ही हूं यह हम ही हैं॥

दीया गया था)

*इस से आगे अलैहदा हिस्सा कर के दूसर सफे पर जुदा लिख दीया गया है

ज्ञानी का वसले आम अर्थात सर्व से अभेदता.

४ राग सारग ताल धमार

मोहताज के बीमार के पापी के और नादार के
हम लैब-ओ-हम बेगल हूं मैं, हमराज हूं बेयार का
सुंसान शब दरया किनारे हैं खड़े डट करतो हम

१ गरीब २ मुफलस. ३ बिल्कुल नजदीक ४ साथ साथ (एक कप में). ५ भेद जानने वाला. ६ ना वाकफ.

मुझ में मुतँसव्वर हैं दोज़ख , मैकँदाः , मसजद वहिश्तं
मार देना झूट वकना, चोर यारी और सितम
कुल जहां के ऐव रिंदाना पड़े करते हैं हम
ऐ ज़मीं के वादशाहो ! पंडितो महेजँगारो !
ऐ पुलीस ! ऐ मुद्दे ! वकील ! हाकम ! ऐ मेरे यारो !
लो वता देते है तुम को राज़ खुफँया आज हम
अपने मुंह से आप ही इक़रार खुद करते हैं हम
"ख्वाह चोरी से कि यारी से खपा लेता हूं मैं
सव की मलकीयत को मक़वूज़ात को और शान को"
यह सितम यारो ! कि हरगज़ भी तो सेह सकता नहीं
ग़ैर खुद के ज़िकर को, या नाम को कि नशान को

१७ वेहम कीये गये, आरोपत कीये गये. १८ शराव खाना. १९ स्वर्ग. २० मस्ताना हो कर. २१ शुद्ध साफ रहने वाली कर्म काण्डी. २२ छुपा हुवा (गुह्यतम) भेद. २३ सर्व भूमी इत्यादि के क़वज़े (पृथ्वी सवन्धी मलकीयत.)

खुद कुशी करते है सब कानून तनकीहो जरह
दूर ही से देख पाते है जो मुझ तूफान को
कुल जहा बस एक खर्राटा है मस्ती में मेरा
ऐ गज़ब! सच कर दखाता हू मै इस वहोतान को
क्या मज़ा हो, लो भला दौड़ो "मुझे पकडो" ३ कोई
रिंद मस्तों का शहशाह हू, मुझे पकड़ो मुझे पकड़ो मुझे
पकड़ो कोई

सीनां ज़ोरी और चोरी, छेड छाड अटखेलीयां
चुटकीया सीनामें भरता हू, मुझे पकड़ो कोई ॥३॥
खा के माखन दिल चुरा कर, बह गया, मै बह गया
मार कर मै हाथ हाथों पर यह जाता हू! मुझे
पकडो कोई ॥३॥

२४ आत्महत्या (अपने आप को मारना) २५ कानुन को साफ करना, फैसला, ऐब से खाली करना २६ झूट, मिथ्या २७ मुझे पकडो ३ इस इबारत को तीन दफा सारी की सारी पढो २८ सारा जोर लगा कर

रात दिन छुप कर तुम्हारे बाग़ में बैठा हूं मैं
बांसरी में गा बुलाता हूं, मुझे पकड़ो कोई ३॥
आईयेगा, लो उड़ा दीजीयेगा मेरे जिस्म को
नाम मिट जाने से मिलता हूं, मुझे पकड़ो कोई ३॥
दस्तो[29] पा गोशो[30] दीदाः, मिसल दस्ताना उतार
हुलिया सूरत को मटाता हूं, लो! मुझे पकड़ो कोई ३॥
सांप जैसे कैंचली को, फेंक नामो नग को
बे सिलैह[31] के बस में आता हूं, लो! मुझे पकड़ो कोई ३॥
नठ गया! वह नठ गया! नठ कर भला जाये कहां
मुंह तो फेरो! यह खड़ा हूं! लो! मुझे पकड़ो कोई ३॥
आते आते मुझ तलक, मैं ही तो तुम हो जावोगे
आप को जकड़ो! अगर चाहो, मुझे पकड़ो कोई ॥

२९ हाथ और पाऊ. ३० कान और आंख ३१ हत्थ्यार रहित, बगर किसी सामान और हत्थ्यार के.

आँतशे सोज़ां हूं मुझ में पुन्य क्या और पाप क्या
कौन पकड़ेगा मुझे ? और हां ! मेरा पकड़ेगा क्या

३१ जलाने वाली आग.

ज्ञानीका भ्रण जो सर्व से अभेद होनेके सबब स्वभावक हो जाता है.

५ राग जंगला ताल चलत

हम नंगे उमर बतायेंगे, भारत पर वारे जायेंगे
सूखे चने चबायेंगे, भाईयों को पार लवायेंगे
रूखी रोटी खायेंगे, गरीबों के दुःख मिटायेंगे
गाली ताना१ खायेंगे, आनन्द की झलक दिखायेंगे
सूलों पर नंगे जायेंगे, पर ब्रह्म विद्या फैलायेंगे

१ बोली ठठोली २ समझायेंगे, उपदेश करेंगे

ज्ञानी का निश्चय-व-हिम्मत.

६ राग परज ताल गजल.

गरचि कुतब जगह से टले तो टल जाये
गरचि बैहर भी जुगनू की दुम से जल जाये
हमालय बाद की ठोकर मे गो फिसिल जाये
और आफताब भी कबले अम्दज ढल जाये
मगर न साहबे हिम्मत का हौंसला टूटे
कभी न भोले से अपनी जेवीं पर वल आये

१ ध्रुव तारा २ समुद्र ३ रातको चमकने वाल कीडा जो उडता भी है ४ वायू ५ सूरज ६ निकलने (चढ़ने) से पैहिले ७.नाश हो जाने से मुराद है ८ हिम्मत वाला पुरुष ९ पेशानी, मस्तक

ज्ञानी का घर (महल)

७ राग पहाडी ताल धुमाली

सिर परआकाश का मंडल है, धरती पर सुहानी मखमल है

१ दिल को भाने वाली.

दिन को सूरज की महफल है, शब को तारों की सभा बाबा
जब झूम के यहां घैन आते हैं, मस्ती का रंग जमाते हैं
चशमे तंबूर बजाते हैं, गाती है मैलहार हवा बाबा
यां पछी मिल कर गाते हैं, पीतँम के संदेस सुनाते हैं
यां रूप अनूप दखाते हैं, फल फूल और बँर्ग ग्रैं बाबा
धन दौलन आनी जानी है, यह दुन्या राम कहानी है
यह आलम आलम फानी है, बाक़ी है जाते ख़ुदा बाबा

२ रात ३ बादलों के समूह ४ राग जिस के गाने से वर्षा हो
५ प्यारे ६ पत्ता पत्ती ७ घास ८ सत स्वरूप

ज्ञानी को स्वप्न.

८ राग करयाण ताल तीन

घर में घर कर

कल ख्वाब एक देखा, मैं काम कर रहा था
बैलों को हांकता था, और हल चला रहा था

मेहनत से सेर होकर वर्ज़श से शेर होकर
यह जी में अपने आई "वस यार अब चलो घर"
घर के लीये थी मेहनत, घर के लीये थे बाहर
झट पट सनान करके, पोशाक कर के दर पर
घर की तरफ मैं लपका, पाँ शौक से उठा कर
तेज़ी से डँग बढ़ाकर, जलदी में गड़ बडा कर
कि लो धौड़ धूप ही ने यह मचा दीया तँहय्यर
वह ख्वाब झट उडाया, यह पाओं घर में आया
बेदार खुद को पाया, ले यार घर में घर कर
सुपने के घर को दौड़ा, घर जागने में आया
.क्या ख़ूब था तमाशा, यह ख्वाब कैसा आया
बन बन में राम ढूंडा, मैं राम खुद बन आया
मैं घर जो खोजता था, मेरा ही था वह साया
अब सब घरों का हूं घर, ऐ राम! घर में घर कर

१ रज कर, तृप्त. २ दिल ३ पाओं ४ कदम ५ हैरानगी, परेशानगी, अश्चर्यता ६ स्वप्न ७ जागना

ज्ञानी की सैर.

९ राग बिहाग ताल तीन

मैं सैर करने निकला ओढे अंबर की चादर
पर्वत में चल रहा था हवा के बाज़ुओं पर
मतवाला झूमता था हर तरफ घूमता था
झरने नदी-ओ-नाले पैहचान कर पुकारे
नेचर से गूंज उट्ठी उस वेद की ध्वनी की
' तत्त्वमसि त्वमसि " तू ही है जान सब की
यह नज़ारा प्यारा प्यारा तेरा ही है पसारा
जो कुछ भी हम बने है यह रूप बस तो तू है
मीनों में फिर हमारे है मुनअकस तो तू है
जो कुछ भी हम बने है यह रूप बस तो तू है

१ बादल २ पर ३ मस्त ४ प्रकृति, कुदरत ५ वह (ब्रह्म मारक) तू है, तू है ६ फैलाओ, तेरी ही है यह सृष्टि ७ शिम्बत, अक्स हुवा

यह सुन जो मैं ने झांका, नीचे को सीधा तांका
हर आबशारो चशमाः गुलो बर्ग का कृशमाः
अलवाने नौ दर नौ, अशकाल जिन्स हर नौ
हर रंग में तो मैं था, हर संग में तो मैं था
मां मोमता की मारी जाती है वारी न्यारी
शौहर को पाके दुलहन सौंपे है अपना तन मन
मुद्दत का बिछड़ा बचा रोता है मां को मिलना
बे इखत्यार मेरा दिलो जां वह ही निकला
वह गुदाज़ फरहत आमेज, वह दर्दे दिल दिलावेज़
पुर सोज़ राहते जां, लज़्ज़त भरे वह अरमां

८ झरना. ९ फूल और पत्ते का जादू १० किस्म २ से किस्म किस्म के रंग. १२ पुरुष १३ हर तरह के १४ पत्थर अथवा मेल. १५ मोह १६ पति १७ स्त्री १८ दिल का पिघलना. १९ आराम या ठंडक से भरा हुवा २० दिलपसन्द दर्द, अर्थात् वह दुःख जो दिल को भाता है २१ तासीर वाली. २२ जिन्दगी का आराम. २३ अफसोस आर्ज़ू, पछतावा.

वेह निकले जेबे[२४] दिल से, वसले[२५] रवां में बदले
मेंह बरसा मोतीयों का, तूफ़ान आंसूंवो का, झिम !
झिम ! झिम !

२४ दिल की जेब अथवा दिल के खाने या कोठडी से २५ यह तमाम (दर्द इत्यादि) से निजानन्द का अनुभव देह निकला अर्थात यह तमात दु ख दर्द आत्मा साक्षातकार में बदल गये ॥

ज्ञानी की सैर.

१० राग कल्याण ताल तीन

यह सैर क्या है अजब अनोखा, कि राम मुझमें मै राम में हूं
बग़ैर सूरत अजब है जेलवा, कि राम मुझ में मै राम में हूं
मरक़ाय हुसना ,इशक हू मै, मुझी में राजो न्याज़ सब हैं
हूं अपनी सूरत पै आप शैदा, कि राम मुझ में मै राम में हूं

१ जाहर प्रकाश, दर्शन २ सुन्दरता और प्रेम की पोथी (जखीरा) ३ गुप्त और ख़ाहश, ज़रूरत ४ आशक़

जमाना आयीना राम का है, हर एक सूरतसे वह पैदा है
जो चशमे इकवीं खुली तो देखा, कि राम मुझ में मैं राम में हूं
वह मुझ से हर रंग में मिला है, कि गुल से बू भी कभी जुदा है?
हबाबो दर्या का है तमाशा, कि राम मुझ में मैं राम में हूं
सबब बताऊं मैं वर्जद का क्या? है क्या जो दरपर्दा देखता हूं
सदा यह हर साज़ से है पैदा, कि राम मुझ में मैं राम में
बसा है दिल में मेरे वह दिल्बर, है आयीना में खुद आयीनां गर
अजब तहय्युर हुवा यह कैसा? कि यार मुझ में मैं यार में हूं

५ शीशा. ६. आत्म दृष्टि. ७ बुलबुला और दरया. ८ मस्त्यानन्द, हैरानी, निजानन्द. ९. पर्दे के पीछे. १०. आवाज. ११. शीशा बनानेवाला, सकन्दर से मुराद भी है. १२ आश्चर्य.

मकान पूछो तो लौमकां था, न रामही था न मैं वहां था
लीया जो करवट तो होश आया, कि राम मुझ में मैं
राम में हूं
अलर्लेंस्तातर है पाक जल्वा, कि दिल बना तूरे 'बर्के सीना
तडप के दिल यू पुकार उट्ठा, कि राम मुझ में मै राम में हू
जहाज़ दरयामें और दरया जहाजमें भी तो देखिये आज
यह जिस्म कैंशती है राम दरया, है राम मुझ में मैं
राम में हूं

१३ देश रहित १४ लगातार १५ बिजली के पहाड की छाती की तरह १६ शरीर १७ नाआ

बाह्य वर्षा से अन्तरीय आनन्द की वर्षा का मुकाबला.

११ राग विहाग ताल दादरा

"चार तरफ से अब्र की वाह! उठी थी क्या घटा!

१ बादल

बिजली की जगमगाहटें, रांद रहा था गड़गड़ा
बरसे था मेंह भी झूम झूम, छाजो उमंड उमंड पड़ा
झोंके हवा के ले गये होशे बदन को वह उड़ा
हर रगे जाँ में नूर था, नग़मा था ज़ोर शोर का
अब्र बरों से था सिवाय दिल में सरूर बरसता
आबे हयात की झड़ी ज़ोर जो रोज़ो शब पड़ी
फ़िकरो ख्याल बैह गये, टूटी दूई की झोंपड़ी

२ बिजलीकी कड़क ३ मतलब इस मुहावरे का यह है कि बड़े ज़ोर से वर्षा हूई ४ शरीर के होश ५ प्राण के हर हिस्से मे ६ अवाज़ ७ आनन्द ८ अमृत ९ दिन रात जो ज़ोर से पड़ी तो १० द्वैत की झोंपड़ी जो दिल में क़ायम थी सब बैह गयी

ज्ञानी की उदारता औ बेपरवाही[12]

१२ राग पीलू ताल दीपचंदी

न है कुच्छ तमन्ना न कुच्छ जुस्तजू है
कि वैहदत में साकी न सागर न बू है
मिली दिल को आखें जभी मार्फत की
जिधर देखता हू सनम रूब्रू है
गुलिस्तान में जा कर हर इक गुल को देखा
तो मेरी ही रंगत–ओ–मेरी ही बू है
मेरा तेरा उड्डा हूये एक ही सब
रही कुच्छ न हसरत न कुच्छ आर्जू है

१ ख़ाहश (इच्छा) २ तलाश, ढूंड ३ एकता ४ आनन्द रूपी शराब पलाने वाला ५ पियाला ६ आत्म ज्ञान की ७ प्यारा (अपना स्वरूप) ८ सन्मुख ९ बाग १० पुष्प ११ अफसोस १२ उमेद, ख़ाहश

ज्ञानी की ताऽल्लुकी

१३ राग यमन कल्यान ताल चलन्त.

न कोई तालेब[1] हुवा हमारा, न हम ने दिल से किसी को चाहा
न हम ने देखीं खुशी की लैहरें, न दर्दो गम से कभी कराह
न हम ने बोया न हम ने काटा, न हम ने जोता न हम ने गाहा
ऊठा जो दिल से भरम का पर्दा, तो उस के उठते ही फिर अहाहा
न बाप बेटा न दोस्त दुशमन[2], न आशक और सैनम[3] किसी के
अजब तरह की हुई फरागत न कोई हमारा न हम किसी के

१ चाहने वाला, ढूण्डने वाला. २ नफरत. ३ दोस्त, (माशूक.)

अभी हमारी बड़ी दुकां थी, अभी हमारा बड़ा कँसब था
कहीं खुशामद कहीं ग्रामद, कहीं तैनाज़ो कहीं अदब था
बड़ी थी ज़ात और बड़ी सफ़ात और बड़ा हसब और
बड़ा नसब था
खुदी के मिटने ही फीर जो देखा, न कुच्छ हसब था
न कुच्छ नसब था
अजब कँशमे ही हो रहे हैं, मज़े की रद-ओ बदल है
हर दम
यह क्या तमाशा है यार हर सूं, यह भेद क्या है अहा
अहाहां

४ पेशा. ५ खातर. ६ उत्तम कुल. ७ तमाशे (नाज़ो अदा.)
८ विकार, तबदीलीयें. ९ तरफ़.

ज्ञानी को मुबारकबादी.

१४ राग भैरवी ताल चलन्त.

नज़र आया है हर सू मेह जमाल अपना मुबारक हो
"यह मैं हूं" इस खुशी में दिल का भर आना
मुबारक हो
यह उरयानी रुखे खुरशीद की खुद पर्दा हायल थी
हुवा अब फाहश पर्दा सितर उड़ जाना मुबारक हो
यह जिस्मो इस्म का कांटा जो थे दव सा खटकता था
खल्श सब मिट गयी कांटा निकल जाना मुबारक हो
सेमसखर से हूये थे कैद साढे तीन हाथों में

१ हर तरफ २ चांद की सुन्दरता वाला (अपना प्रकाश) ३ स्वस्ति हो ४ प्रकटताई, जाहर होना, निकलना ५ सूरज का मुख (अर्थात अपना आत्मा) ६ ढके हूये थी ७ पर्दा ८ नाम रूप ९ झगड़ा, चोट १० ठट्ठे से, हसी से

बैले[11] अब वुसते[12] फिकरो तखय्युल[13] से भी बढ़ जाना
मुबारक हो

अजब तसखीर[14] आलम गीर[15] लाई सल्तनत आली[16]
मेह–ओ–माही[17] का फ़रमां[18] को बजा लाना मुबारक हो
न ख़दशाः[19] हर्ज का मुतलिक़[20] न अंदेशा ख़लल[21] बाक़ी
फुरेरे[22] का बलंदी पर यह लैहराना मुबारक हो
तअल्लुक़ से बरी[23] होना हर्फ़े[24] राम की मानन्द
हर इक पैहलू[25] से नुक़्ता[26] दाग़ मिट जाना मुबारक हो

११ किन्तु १२ सीमा १३ फिकरो ख्याल १४ फतह, विजय १५ जहान का काबू करना १६ बड़ी भारी १७ सूरज और चांद १८ हुक्म का मानना १९ डर २० बिलकुल २१ फसाद तबाही २२ झंडा २३ आजाद २४ राम के हरफ़ (बरण र आ म्) २५ तरफ़ २६ बिन्दु

•

१५ राग भैरवी ताल दादरा

ईशावास्योपनिषद के आठवें मन्त्र का भावार्थ कविता में परोया हुवा है

है मुहीतो मनज़्ज़ा-ओ- बे अबदान्, रंगो पै है कहां
हमाः वीं हमाः दान्
वह बरी है गुनाहों से रिंदे ज़मान्, बदो नेक का उस में
नहीं है निशां
वह ब.ज़ुर्गे ब.ज़ुर्गां है राहते जां, वह है वाला से वाला
व नूरे जहां
वही खुद है जिनीं व बेरूं ज़ बियां, दीये उस ने
अज़ल में हैं रंगो शां

१ सर्व व्यापक. २ पाक, शुद्ध ३ बदन से (शरीरसे) रहित ४ नाड़ी हड्डी पावों रहत. ५ सब दर्शी. ६ सर्वज्ञ ७ आज़ाद ८ ज़माने का रिंद मस्त ९ बुरे और नेक. १० महां से महान्. ११ प्राणों का आराम. १२ ऊंच से ऊंचे. १३ दुन्या का नूर- प्रकाश) १४ स्वर्ग. १५ वर्णन रहत. १६ अनादि काल से १७ नाना प्रकार के रंग रूप.

यही राम है दीदों[१८] में सब के निंहां, यही राम है बैहर[२०] में बर[२१] में अंयां[२२]

१८ आखोंमें १९ छुपा हुवा २० समुद्र २१ पृथ्वी २२ जाहर

बीमारी में ज्ञानी की अवस्था

१५ राग भैरव ताल शूळ

वाह वा[१] ऐ तप व रेजश ! वाह वा
हंब्राजा ऐ दर्दो पेचश ! वाह वा
ऐ बलाये नागहानी[२] ! वाह वा
वैल्कम, ऐ मर्गे जवानी[३] ! वाह वा
यह भवर यह कैहर[४] चर्पा ? वाह वा
बैहरे मिहरे[५] राम में क्या राह वा

१ बहुत अच्छा, बहुत खूब २ अचानक आने वाली आफत ३ युवा में मृत्यु ४ ईश्वरीय कोप, गजब ५ सूरज रूपी राम के समुद्र में, अर्थात राम के प्रकाश स्वरूप में यह सब लैहरें मारते है

खांड का कुत्ता गधा चूहा विल्ला
मुंह में डालो जायकाः है खांड का
पगड़ी पाजामा दुपट्टा अंग्रखा
गौर से देखा तो सब कुछ सूत था
दामनी तोड़ी व माला को घड़ा
पर निगाहे हक़ में है वही तिला
मोतिाविन्द दिल की आंखों से हटा
मर्जो सिहतं ऐन रांहत राम था

६ बिल्ली का पुरुष ७ ज्ञान दृष्टि, आत्मिक दृष्टि ८ सुवर्ण, सोना
९ तन्दुरुस्ती १० आराम

ज्ञानी का नाच

१७ राग नट नारायण ताल दीपचंदी.

नाचूं मैं नटराज रे, नाचूं मैं महाराज. (टेक)
सूरज नाचूं तारे नाचूं, नाचूं बन महताब रे ॥१॥ नाचूं०

१ चांद.

तन तेरे में मन हो नाचू, नाचू नाड़ी नाड़ रे ॥नाचूं० २
बादर नाचूं वायू नाचूं, नाचूं नदी अरु नाव रे ॥नाचू० ३
जरह नाचू समुद्र नाचूं, नाचू मोघेरा काज रे ॥ नाचू०४
घर लागो रग, रग घर लागो, नाचूं पाया दाज रे ॥नाचूं०५
राग गीत मद होवत हर दम, नाचू पूरा साज रे ॥नाचू०६
राम ही नाचन राम ही बाजत, नाचूं हो निर्लाज रे॥नाचूं०७

२ बादल ३ जहाज, बेड़ो ४ निकम्मा काम

त्याग (फ़क़ीरी.)

राग शंकराचरण ताल धुमाली

घर मिले उसे जो अपना घर खोवे है
जो घर रखे सो घर घर में रोवे है ॥ टेक
जो राज तजे वह महाराज करे है
धन तजे तो फिर दौलत से घर भरे है
सुख तजे तो फिर औरों का दुःख हरे हैं
जो जान तजे वह कभी नहीं मरे है
जो पलग तजे वह फूलों पै सोवे है
जो घर रखे वह घर घर में रोवे है ॥ १ ॥
जो पैर दारा को तजे, वह पावे रानी
अरु झूट वचन दे त्याग, सिद्ध हो वानी

१ दूर करना २ दूसरे पुरुष की स्त्री

जो दुखबुद्धि को तजे, वही है ज्ञानी
मन से त्यागी हो, रिद्धि मिले मन मानी
जो सर्व तजे उसी का सब कुछ होवे है
जो घर रखे सो घर घर में रोवे है ॥ २ ॥
जो इच्छा नहीं करे वह इच्छा पावे
अरु स्वाद तजे फिर अमृत भोजन खावे
नहीं मागे तो फल पावे जो मन भावे
है त्याग में तीनों लोक, वेद यही गावे
जो मैला होकर रहे, वह दिल धोवे है
जो घर रखे वह घर घर में रोवे है ॥ ३ ॥

सुत दारा या कुटंब सागे, या अपना घर वार तजे
नहीं मिले है प्रभु कदापि, जग का सब व्यवहार तजे
कंद मूल फल खाय रहे, और अन्न का भी आहार तजे
वस्त्र सागे नग्न हो रहे, और पराई नार तजे
तो भी हर नहीं मिले यह सागे, चाहे अपने प्राण तजे ॥
नारायण तो० १

तजे पलंग फूलों का और हीरे मोती लाल तजे
जात की इज्जत, नाम और तेज और कुलकी सारी चाल तजे
वुन में निशिदिन विचरे और दुन्या का जंजाल तजे
देह को अपनी चोह जलावे, शरीर की भी खाल तजे
ब्रह्मज्ञान नहीं हो तौभी, चाहे वह अपनी शान तजे ॥
नारायण तो० २

रहे मौन बोले नहीं मुखसे, अपनी सारी बात तजे

१ बेटा स्त्री २ दिन रात, हमेशा.

बालपन से योग ले चाहे तात तजे या मात तजे
शिखा सूत्र त्याग जो करदे और अपनी उत्तम जात तजे
कभी जीव को न मारे और घात तजे अपघात तजे
इतना तजे तो क्या होवे जो देह का नहीं गुमान तजे ॥

नारायण तो० ३

रहे रात दिन खड़ा न सोवे, पृथ्वी का भी शैन तजे
कष्ट उठावे रहे बेचैनी, सुख और सारी चैन तजे
मौन हो कर बोले सर से, कड़वे अपने बैन तजे
इतना त्यागे और देह अभिमान नहीं दिन रैन तजे
बनारसी उसे मिलें नहीं इर, चाहे सकल जहान तजे ॥

नारायण तो०

३ पिता ४ रक्षा करना, बचाना ५ सोना, बिछा ६ शब्द, बानी, वाक्य ७ रात

---

३ राग सोहनी ताल गजल

फकीरी खुदा को प्यारी है, अमीरी कौन विचारी है (टेक)
वदन पर खाक सो है अंकसीर[1], फकीरों की है यही जागीर
हाथ बांधे हैं खड़े अमीर, बादशाह हो या हो वजीर
सदा[2] यह सच हमारी है, गदा[3] की खुदा से यारी है ॥१
फकीरी खुदा०

है उन का नाम सुनो दरवेश[4], कोई नहीं पाये उन से पेश
खुदा से मिले रहें हमेश, कोई नहीं जाने उन का भेष
कभी तो गिरयाँ[5] ओ-जारी[6] है, कभी चश्मों में खुमारी[7] है ॥
फकीरी० २

है उन का रुतबा बहुत बलन्द, खुदा के तेयीं हुवा यह पसन्द
बादशाह से भी है दो चन्द, उन्हें मत बुरा कहो हर चंद
उन की दिल पर स्वारी है, ऐसी कहीं नहीं तय्यारी है
फकीरी० ३

१ रसायन, सब से बढ़ कर दारू २ आवाज़ ३ फकीर ४ फकीर ५ रोना पीटना ६ आंस ७ मस्ती

चीथड़े शाल से हैं आ़ला, चशम हरताल से हैं आ़ला
चने भी दाल से हैं आ़ला, चलन हर चाल से आ़ला
ज़ख़म जो दिल पर कारी है, वहीं ख़ुद.मरहम विचारी है
फ़क़ीरी० ४

पाओं में पड़ा जो है छाला, वह है मोतयों से भी आ़ला
हाथ में फूटा सा प्याला, जामे जेमशेद से भी आ़ला
अगर कोई ईफ़त हज़ारी है, वह भी उन का भिखारी है
फ़क़ीरी० ५

मकां लॅामकॉ फ़क़ीरों का, निशॉ बे निशां फ़क़ीरों का
फ़क़र है निहॉ फ़क़ीरों का, ख़ुदा है ईमान फ़क़ीरों का
त़ाक़त सबर वह भारी है, मौत भी उन से हारी है
फ़क़ीरी० ६

८ बसम ९ सलत १० जमशेद बादशाह का प्याला ११ लकब, खताब होता है जिस से सात हजार सपाहीयों का अफसर मुरादं होती है १२ देश रहित १३ छुपा हुवा, गुप्त

चढ़ गये बाल तो क्या परवाह, उतर गयी खाल तो क्या परवाह
आ गया माल तो क्या परवाह, हूये कङ्गाल तो क्या परवाह
खुदा ही जैनाव वारी है, फक़र की यही कैरारी है

१४ महान १५ स्थिति

४ काफी दीपचंदी

मेरा मन लगा फकीरीमें (टेक)
डंडा कूंडा लीया बगलमें, चारों चक जगीरी में ॥ मे० १
मग तग के टुकड़ा खांदे, चाल चलें अमीरी में ॥ मे० २
जो सुख देखियो राम सगतमें, नहीं है वज़ीरीमें ॥ मे० ३

५ आनन्द भैरवी ताल गज़ल

न ग़म दुन्या का है मुझ को न दुन्या से कनारा है
न लेना है न देना है न हीला है न चारा है

१ अलैहदगी २ बहाना

न अपने से महब्बत है, न नफरत ग़ैर से मुझ को
सबों को ज़ाते हक़ देखुं, यही मेरा नज़ारा[३] है
न शाही में मैं शैदा[४] हूं, गदाई[५] में न ग़म मुझ को
जो मिल जावे सोई अच्छा, यही मेरा गुज़ारा है
न कुफ़र इस्लाम से फारग, न मिल्लत[६] से गरज मुझ को
न हिन्दु गिब्रो[७] मुसल्म हूं, सबों से पथ न्यारा है ॥

३ असल स्वरूप ४ आशक, लौलीन ५ फक़ीरी ६ मत, मतान्तर
७ आग के पूजने वाला पार्सी लोग

जोगी (साधू) का सच्चा रूप (चरित्र)

७ ग़ज़ल

प्यारों! क्या कहूं अहवाल[१] की अपने परेशानी?
लगा ढलने मेरी आंखों से इक दिन खुद बखुद पानी
यकायक आ पड़ी उस दम, मेरे दिल पर यह हैरानी
कि जिस की हो रही है यह जो हर इक जा[२] सैनाखानी[३]

१ सारे हाल (अवस्था सारी) २ जगह (देश) ३ स्तुति

किसी सूरत से उस को देखीये "कैसा है वह जानी" ॥ १ ॥

चढा इस फिकर का दरया, भरा इस जोश में आकर
कि इक इक लैहर उस की ने, ले उड़ाया हवा ऊपर
कैरार-ओ-होश-ओ-अक़्ल-ओ-सबर-ओ-दानश बैह गये यक्सर
अकेला रह गया आजिज़, ग्रीबो बेकस-ओ-बेपर
लगा रोने कि इस मुशकल की हो अब कैसे आसानी? ॥२॥

यह सूरत थी, कि जी में इशक़ ने यह बात ला डाली
मंगा थोड़ा सा गेरू और वहीं कफनी रंगा डाली
बिना मुंदरे गले के बीच सेली बरमला डाली
लगा मुह पर भबूत और शक्ल जोगी की बना डाली
हुवा अवधूत जोगी, जोगीयों में आप गुर ज्ञानी ॥ ३ ॥

४ प्यारा दिल्बर. ५ ठैहराओ, धीर्यता (शान्ति, चैन) ६ ओ से मुराद हर जगह "और" से है ७ अकल, समझ ८ अकट्ठे ९ जिस का कोइ न हो, लाचार १० दिल ११ फ़क़ीरी पुशाक

उठाई चाँह की झोली, पियाला चश्म का खप्पर
बना कर इश्क़ का कंठा, तलब का सिर रख चक्कर
मुँडोसा गेरुवा बान्धा, रखा त्रिशूल कान्धे पर
लगा जोगी हो फिरने ढूंडता उस यार को घर घर
दुकां बाजार ओ कूचा ढूडने की दिल में फिर ठानी ॥४॥
लगी थी दिल में इक आँतश, धूवां उठता था आहों का
तमाशे के लीये हल्काः, बन्धा था साथ लोगों का
तलब थी यार की और गरम था बाज़ार बातों का
न कुछ सिर की खबर थी और न था कुछ होश
पाओं का
न कुछ भोजन का अन्देशाः, न कुछ फिकरे अमल
पानी ॥ ५ ॥
फिर इस जोग का ठेहरा अजब कुछ आन कर नकशा

१२ इच्छा १३ चक्षु १४ ढूंढना १५ सिर पर फकीरी पगड़ी १६ आग १७ घेरा (पुरुषों का समूह) १८ ख्याल, फिक्र १९ भांग गांजे को फकीर अमल पानी कहते है.

जो आया सामने मेरे, तो कहता उस से "सुनता जा
कहो प्यारे! हमारे यार को तुम ने कहीं देखा ?"
जो कुछ मतलब की वह बोला, तो उस से और कुछ पूछा
बेगैर यूही लगा कहने, तो फिर देना अनाकानी ॥६॥
कभी माला से कहता था, लगा कर जप से "ऐ माला!
हुवा हू जब से मै जोगी, तू ही उस यार को बतला"
कभी घबरा के हसता था, कभी ले स्वांस रोता था
लबों से आह, आंखो से बहा पडता था दरया सा
अजब जजाल में चक्कर के डाले है परेशानी ॥ ७ ॥
कोई कहता था " बाबा जी! इधर आओ, इधर बैठो,
पड़े फिरते हो ऐसे रात दिन, टुक बैठो सस्ताओ,
जो कुछ दरकार हो 'मेवा मठाई' हुक्म फरमाओ"
न कहना उस से "ले आओ" न कहना उस से
"मत लाओ"
खबर हरगिज़ न थी कुछ उस घड़ी अपनी, न बेगानी ॥८॥

२० और अगर २१ ताल मटोल देना.

वही दुब्धा में था उस दम, कहां जाऊं? कहां देखूं?
किसे देखूं? किसे पूछूं? किधर जाऊं? कहां ढूंढूं?
करूं तदबीर क्या? जिस से मैं उस दिलदार को पाऊं
निशां हरगिज़ न मिलता था, पड़ा फिरता था [२२]ज्ञूं मजनूं
अजब दरया-ए-हैरत की हुई थी आ के तुग़यानी [२३] ॥९॥
उसी को ढूंडता फिरता हुवा, मसजद में जा पहुंचा
जो देखा [२४]वाँ भी है रोज़ो नमाज़ों का ही इक चर्चा
कोई [२५]जुब्बे में अटका है कोई डाढ़ी में है उलझा
तसल्ली कुछ न पाई जब, तो आखर वां से घबराया
चला रोता हुवा बाहर ब अहवाले [२६]परेशानी ॥१०॥
यही दिल में कहा " टुक मदरसे को झांकीये चल कर
भला शायद उसी में हो, नज़र आजाये वह दिलबर "
गया जब वहां तो देखी, वाह वा! कुछ और भी [२७]बदतर

२२ तरह, मानन्द २३ तूफ़ान २४ वहां से मुराद है २५ चोगा, लबादाः फकीरों का लबास २६ परेशानी की हालत (अवस्था) में २७ अधिक बुरी अवस्था

कतावें खुल रहीं हैं, मच रही है शोरो गुल यक्सर
हरइक मसलेपै फाज़ल कर रहे हैं वैहसे नफसानी ॥११॥
चला जब वहां से घबरा कर, तो फिर यह आगयी जी में
कि यह जॉगह तो देखी, अब चलो टुक दैरं भी देखें
गया जब वां तो देखा मूर्त और घटों की झिङ्कारें
पुकारा तब तो रो कर "आह! किस पत्थर से सिर मारें?"
कहीं मिलता नहीं वह शोख काफर दुशमने जानी ॥१२॥
कहा दिल ने कि ". अब टुक तीरथों की सैर भी कीजे
भला वह दिलरुबा शायद इसी जागह पै मिलजावे"
बहुत तीरथ मनाये और कीये दर्शन भी बहुतेरे
तसल्ली कुछ न पाई तब तो हो लाचार फिर वां से
महब्बत छोड कर वस्ती की, ली राहे वियावानी ॥१३॥
गया जब दैशत-ओ सैहरा में तो रोया "आह ! क्या
करीये ?

२८ अपने अपने ख्याल पर झगड़ा २९ स्थान, जागह से मुराद है ३० मदर ३१ प्यारा माशूक ३२ जंगल ३३ बन, वियाबान्

कहां तक हिज्र में उस शोख के रो रो के दिन भरीये?
किधर जाईये और किस के ऊपर ओश्रा धरीये ?
यही बेहतर है अब तो डूबीये या ज़ैहर खा मरीये
भला जी जान के जाने में शायद आ मिले जानी "१४
रहा कितने दिनों रोता फिरा हर दशत में नैला
ग़रीबो बेकसो तन्हा मुसाफर बेवतन हैरान्
पहाड़ों मे भी सिर पटका, फिरा शैहरों में हो गिर्रयां
फिरा भूखा प्यासा ढूंडता दिलबर को सैरगर्दान्
न खाने को मिला दाना, न पीने को मिला पानी १५
पड़ा था रेत में और धूप में सूरज से जलता था
लगी थीं दिल की आंखें यार से, और जी निकलता था
उसी के देखने के ध्यान में हर दम निकलता था
वले मैहबूब से कुछ हाय! मेरा बस न चलता था
पड़े बहते थे आंसू लौलाए लाले बैदरखशानी ॥१६॥

३४ जुदायगी ३५ राते हुवे ३६ रोता हुवा, रुदन करता हुवा ३७ परेशान् ३८ प्यारा माशूक (स्वस्वरूप) ३९ लाल (सुर्ख) पुष्प की तरह ४० बदख्शा देश का ज्वाहर, हीरा

जब इस अहवाल को पहुंचा, तो वह महबूब वेपरवाह
वहीं सो बेक़रारी से मेरी बालीन[41] पै आ पहुंचा
उठा कर सिर मेरा ज़ानू[42] पै अपने रख के फरमाया
कहा "ले देख ले जो देखना है अब मुझे इस जा[43]"
अयां[44] हैं इस घड़ी करते तेरे पै भेद पिन्हानी[45] ॥१७॥
यह सुन रख "पैहले हम आशक़ को अपने आज़माते हैं
'जलाते हैं' 'सताते हैं' 'रुलाते हैं' 'बुलाते हैं'
हर इक अहवाल में जब खूब साबित[46] उस को पाते हैं
उसी से आ के मिलते हैं, उसी को मुंह दिखाते हैं ॥
उसे पूरा समझते हैं हम अपने ध्यान का ध्यानी" ॥१८॥
सदा[47] महबूब की आई जुंहीं कानों में वां[48] मेरे
बदन में आ गया जी, और वही दुःख दर्द सब भूले
फिर आंखें खोल कर दिलबर के मुंह पर टुक नजर कर के

४१ सरहाना, तकिया ४२ घुटने ४३ जगह ४४ जाहर करना, खोल देना ४५ गुह्य, छुपा हुवा ४६ पक्का, पुख़्ता ४७ आवाज़ ४८ वहां, उस स्थान पर

ज़मीन-ओ-आसमान, चौदेह तबक़ के खुल गये पर्दे
मिटी इक आन में सब कुछ सराबी और परेशानी ॥१९॥
हुई जब आ के यकताई, दुई का उठ गया पर्दा
जो कुछ वेह्म-ओ-दग़ा थे, उड़ गये इक दम में हो पांरा
नज़ीर उस दिन से हम ने फिर जो देखा ख़ूब हर इक जा
वुही देखा, वुही समझा, वुही जाना, वुही पाया,
बराबर हो गये हिन्दू मुसलमान, गिबर नसरानी ॥२०॥

४९ १४ लोक ५० अभेदता ५१ टुकडे ५२ पारसी लोग ५३ इसाइ लोग

जंगल का जोगी

७ राग भैरव ताल तीन.

जंगल में जोगी बसता है, गाह रोता है गाह हसता है
दिल उस का कहीं न फसता है तन मन में चैन बरसता है
(हर हर हर ओम । हर हर हर ओम) टेक १

कभी

खुश फिरता नग मनंगा है, नैनो में वैहती गंगा है
जो आजाये सो चंगा है, मुख रंग भरा मन रंगा हे ॥ हर० २
गाता मौला मैतवाला है, जब देखो भोला भाला है
मन मनका उस की माला है, तन उस का एक शिवाला
है ॥ हर० ३
नही परवाह मरनें जीने की, है याद न खाने पीने की
कुछ दिन की सुद्धि न महीने की, हे पवन रुमाल पसीने
की ॥ हर० ४
पास इस के पंछी आते है, और दरया गीत सुनाते हैं
वादल अशनान कराते हैं, वृछ उस के रिशते नाते हैं
हर० ५
गुलनार शफक वह रंग भरी, जोगी के आगे है जो खड़ी
जोगी की निगाह हैरान गैहरी, को तकती रह रह कर
है परी ॥ हर० ६

१ २ ब्रह्मज्ञानी, ईश्वर ३ मस्त ४ पक्षी ५ वृक्ष, दरखत ६ अनार के रंग वाली लाली आकाश में सूरज के उदय अस्त समय जो होती है

वह चाद चटकता गुंल जो खिला, इस मिंहर की जोत
से फूल झडा
फव्वारए फंरहत का उछला, पुंहार का जग पर नूर
पडा ॥ हर० ७

७ फूल ८ सूरज ९ खुशी, आनन्द १० बुछाड, वाछड

---

८ राग पन ताउ धुमाली

हमन से मत मिलो लोगो, हमन खफती दिंवाने है
खुशी का राह सामा है, कठिन में जा समाने है ॥ टेक
तजी खिदमत वजीरी की, पाई लज्जत फकीरी की
चढे किशती सैंबूरी की, फकर के यह मैंकाने है ॥ हमन० १
हमन दिन रैंन सोते है, वैंसल में जान खोते है
कभी मूलों पै सोते है, विरंहों के यह निशाने है ॥ हमन० २

१ पागल (मस्त) २ सबर सतोष ३ हालत, दशा ४ रात
५ मेल, स्वरूप का अनुभव ७ जुदाइ अलैहदगी

---

९ सोहनी ताल दीपचंदी.

हर आन हंसी हर आन खुशी, हर वक्त अमीरी है बाबा।
जब आशिक मस्त फकीर हुवे, फिर क्या दिलगीरी है बाबा॥ टेक.

हैं आशक और माशूक जहां, वहां शाह वज़ीरी है बाबा।
न रोना है न धोना है, न दर्दे असीरी है बाबा॥
दिन रात बहारें चोहलें हैं, अरु इशक सफीरी है बाबा।
जो आशक होंग सो जानें है, यह भेद फकीरी है बाबा॥ १. टेक

है चाह फकत इक दिलबर की, फिर और किसी की चाह नहीं।
इक राह उसी से रखतें हैं, फिर और किसी से राह नहीं॥
यां जितना रंज-तर्रदद है, हम एक से भी आगाह नहीं।

१ समय २ प्रेमी ३ उदासी ४ प्यारा दिलबर ५ कैद होने की दर्द ६ जैसे बुलबुल पक्षी पुष्प का (प्रेमी) आशक है और प्रेम में बोलता रहता है ऐसे ही (अपने दिलबर के) नाम पुकारते रहने वाला इशक (प्रेम) ७ इस दुन्या में ८ फिकर ९ वारफ़

कुछ मरने का संदेहे नहीं, कुछ जीने की परवाह नहीं ॥ २ ॥ हर०

कुछ ज़ुल्म नहीं, कुछ ज़ोर नहीं, कुछ दाद नहीं, फर्याद नहीं
कुछ कैद नहीं, कुछ बन्द नहीं, कुछ जेबर नहीं, आज़ाद नहीं ॥
शागिर्द नहीं, उस्ताद नहीं, वीरान नहीं, आबाद नहीं।
हैं जितनी बातें दुन्या की, सब भूल गये कुछ याद नहीं ॥ ३ ॥ हर०

जिस सिम्त नज़र भर देखे हैं, उस दिल्बर की फुलवारी है।
कहीं सबज़ी की हरयाली है, कहीं फूलों की गुलकारी है ॥
दिन रात मग्न ख़ुश बैठे हैं, अरु आस उसी की भारी है।
बस आप ही वह दातारी है, अरु आप ही वह भंडारी है ॥ ४ ॥ हर०

१० दर ११ इन्साफ़ १२ सख्ती, मजबूरी १३ तरफ़ १४ बेल बूटों को लगाना १५ सब कुछ देने वाला, सब का दाता.

नित .ईशरत[16] है नित फ़रहत[17] है, नित राहत[18] है नित शादी[19] है।
नित मेहरोकरम[20] है दिलबर[21] का, नित खूबी खूब मुरादी[22] है।
जब उमडा दरया उलफ़त[23] का, हर चार तरफ आबादी है।
हर रात नयी इक शादी है, हर रोज़ मुबारक बादी है ॥ ५ ॥ हर०

है तन तो गुल के रंग बना, अरु मुंह पर हर दम लाली है।
जुज़[24] ऐशो तरब[25] कुछ और नहीं, जिस दिन से सुर्त[26] संभाली है॥
होंटों में राग तमाशे का, अरु गत, पर बजती ता थी है।
हर रोज़ बसन्त अरु होली है, और हर इक रात दिवाली है ॥ ६ ॥ हर०

१६ खुश दिली, खुश हालत १७ खुशी, आनन्द १८ आराम, शान्ति १९ आनन्द, खुशी २० सर्वदा, हमेशा २१ प्रेम (महब्बत) और कृपा २२ प्यारा २३ मनशा के मुताबक़ २४ प्रेम २५ बिना, सिवाये २६ खुश दिली, आनन्द, राग रंग २७ होश.

इस आशिक़ जिस सनम के हैं, वह दिलबर सब से आला है।
उस ने ही हम को जी बख्शा, उस ने ही हमको
पाला है ॥
दिल अपना भोला भाला है, और इश्क़ बड़ा मतवाला है॥
क्या कहिये और नज़ीर आगे? अब कौन समझने
वाला है ॥ ७ ॥

२८ प्यारा २९ उत्तम ३० प्राण, जिन्दगी ३१ दृष्टान्त, मिसाल, शुगाद कवि के नाम से भी है

अलविदा

(नोट) जब स्वामी राम तीरथजीने गृहस्थ छोड़ा था उसी दिन यह कविता राम महाराज से लिखी गयी थी, और लाहौर के बाज़ार २ में घूमते समय और रेल पर स्वार होते समय गाई गयी थी ॥ जिस से सब सम्बन्धियोंको आखरी समय की (रुखसत) अलविदा की गयी

१० राग पीलू ताल दीपचंदी

अलविदा मेरी रंबाज़ी! अलविदा

१ रुख़सत हो २ गणित

अल्वदा ए प्यारी रावी ! अल्वदा
अल्वदा ऐ ऐहले खाना ! अल्वदा
अल्वदा मासूमे नादां ! अल्वदा
अल्वदा ऐ दोस्तो दुशमन ! अल्वदा
अल्वदा ऐ शीतो-औशन ! अल्वदा
अल्वदा ऐ कुतबो तँद्रीस ! अल्वदा
अल्वदा ऐ खुबसो तँकदीस ! अल्वदा
अल्वदा ऐ दिल ! खुदा ! ले अल्वदा
अल्वदा राम ! अल्वदा, ऐ अल्वदा !

३ रावी दरया का नाम है जो लाहौर में बहता है ४ घर के लोगो ५ नादान बच्चे ६ सर्दी अरु गर्मी ७ किताब (पुस्तक) और पाठशाला (मदरस्सा) ८ अच्छा, बुरा ९ ऐदिल तुझ को भी रुखसत हो, ऐ खुदा (ईश्वर) तुझ को भी रुखसत हो १० ऐ रुखसत के शब्द तुझ को भी रुखसत हो

---

११ राग यमन कल्यान, ताल चलन्त -

न बाप बेटा न दोस्त दुशमन, न आशक और सनम किसी के।

१ प्यारा, माशूक

अजब तरह की हुई फ़रागत, न कोई हमारा न हम किसी के॥
टेक

न कोई तालब हुवा हमारा न हम ने दिल से किसी को चाहा।
न हम ने देखीं खुशी की लैहरें न दर्दों ग़म से कभी कराहा।
न हम ने बोया न हम ने काटा न हम ने जोता न हम ने गाहा।
उठा जो दिल से भरम का पर्दा, तो उस के उठते ही
फिर अहाहा ॥ १ ॥ टेक

यह बात कल की है जो हमारा कोई था अपना कोई बेगाना।
कहें थे नाते, कहें थे पोते, कहें थे दादा, कहें थे नाना।
किसी पै फटका, किसी पै कूटा, किसी पै पीसा, किसी पै छाना।
उठा जो दिल से भरम का थाना, तो फिर जभी से यह
हम ने जाना ॥ २ ॥ टेक

अभी हमारी बड़ी दुकान थी, अभी हमारा बड़ा कसब था।
कहीं खुशामद कहीं दरामद कहीं त्वाज़ोः कहीं अदब था।

२ फ़ुरसत ३ चाहने वाला ४ नफ़रत ५ मुक़ाम, घर ६ आने का सतकार ७ खातर दारी

बड़ी थी ज़ात और बड़ी सफात और बड़ा हसब और बड़ा नसब था।
खुदी के मिटते ही फिर जो देखा, न कुछ हसब था न कुछ नसब था ॥ ३ ॥ टेक

अभी यह ढब था किसी से लड़िये, किसी के पाओं पै जा के पड़िये।
किसी से हक़ पर फसाद करिये, किसी से नाहक लड़ाई लड़िये।
अभी यह धुन थी दिल अपने में, "कहीं बिगाड़िये कहीं झगड़िये"
दूई के उठते ही फिर यह देखा, कि अब जो लड़िये तो किस से लड़िये ॥ ४ ॥ टेक

८ बर्ज़ुगी मर्तबा से मुराद है ९ खान्दान, नसल १० अहंकार ११ सचाई १२ ख्याल

---

१२ राग जगला ताल धुमाली, या राग बिहाग ताल चलत

त्याग का फल

अपने मज़े की ख़ातर गुल छोड़ ही दीये जब।
रूये ज़मी के गुलशन मेरे ही बन गये सब॥
जितने ज़रा के रस थे कुल तर्क कर दीये जब।
बस जायके जहां के मेरे ही बन गये सब॥
ख़ुद के लीये जो मुझ से दीदों की दीद छूटी।
ख़ुद हुस्न के तमाशे मेरे ही बन गये सब॥
अपने लीये जो छोडी ख़ाहश हवाख़ोरी की।
बादे सबा के झोंके मेरे ही बन गये सब॥
निज की गरज से छोडा सुनने की आर्ज़ू को।
अब राग और बाजे मेरे ही बन गये सब॥
जब बेहतरी के अपनी फ़िक्रो ख़याल छूटे।

१ फूल २ तमाम पृथ्वि भर के ३ बाग़ ४ दुन्या के ५ आँखें की दृष्टि ६ पवां, हवा ७ अपनी

फक़ीरी खयाले रंगीं मेरे ही वन गये सब ॥
आहा! खेल तमाशा, मेरा नहीं है कुछ भी।
दावा नहीं ज़रा भी इस जिस्मो ईस्म पर ही ॥
यह दस्तो पा हैं सब के, आंखे यह हैं तो सब की।
दुन्या के जिस्म लेकिन मेरे ही वन गये सब ॥

८ आनन्द दायक, सुन्दर, विचित्र ख्याल ९ शरीर और नाम १० हाथ, पाओं

---

१३ राग धनासरी ताल धुमाली.

वाह वाह रे मौज फकीरां की (टेक)
कभी चबावें चना चबीना, कभी लपट लें सीरां की
वाह वाह रे० १
कभी तो ओढें शाल दुशाला, कभी गुदड़ियां लीरां की
वाह वाह रे० २
कभी तो सोवें रंग महल में, कभी गली अहीरां की
वाह वाह रे० ३

१ पैहनें. २ नीच जाति के लोग.

मंग तंग के टुकड़े खान्दे, चाल चलें अमीरा का

३ तरग लैहर.

१४ कुंडलियां

एक फ़क़ीरी ला मेज़हब, दूसरो ज्ञान अथाह
उभय रतन ढग जिन्हों के, तिन को क्या परवाह
तिन को क्या परवाह, वस्तु जिस पाई अमोलक
कौन तिन्हों को कमी, अटोट धन जिन घर गोलक
कह गिरिधर कवि राय, भ्रान्त जिन दीनी छेक
सो क्यों होवे दीन, ब्रह्म वत जिन के एक ॥१॥

१ पन्थ रहित २ अनन्त ३ न खतम होने वाला

जंगल में मंगल तुझे, जे तूं होवें फक़र
खिदमत तेरी सब करें, जे छोड़े दिल के मकर
दिल के छोड़ें मकर, फ़क़ीरी का रंग लागे

१ अगर

मूल सहित संसार, रोग सगरो भ्रम भागे
कह गिरिधर कविराय, कुफ़र के तोड़ो संगल
जहां इच्छा तहां रहो, नगर हो अथवा जंगल ॥२॥

२ अज्ञान रूपी जड़ समेत

---

१५ राग पहाड़ी ताल दादरा

पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं (टेक)
जो फ़ैक़र मे पूरे हैं, वह हर हाल में खुश हैं।
हर काम में हर दाम में हर चाल में खुश हैं।
गर माल दीया यार ने, तो माल में खुश हैं।
बेज़र जो कीया, तो उसी अहवाल में खुश हैं।
इफ़लास में इदबार में इक़बाल में खुश हैं
पूरे हैं वही मर्द जो हर हाल में खुश हैं ॥ १ ॥

१ त्याग २ कीमत, अथवा जाल ३ निर्धन, गरीब ४ अवस्था, हालत ५ गरीबी ६ बोझ किसी तरह का, कमनसीब, बुरे भाग्य वाला ७ बड़भागी, अच्छी किस्मत वाला

चेहरे पै है मलाल न जिगरमें असरे गम।
माथे पे कहीं चीनं न अब्रू में कहीं खम।
शिकवाः न जुबान पर, न कभी चशम हुई नम।
गम में भी वही ऐश, अलम मे भी वही दम।
हर बात, हर औकात, हर अफ़ाल में खुश हैं ॥२॥ पूरे०
गर यार की मर्ज़ी हुई, सिर जोड़ के बैठे।
घर बार छुडाया, तो वही छोड़ के बैठे।
मोड़ा उन्हे जिधर, वही मुह मोड के बैठ।
गुदडी जो सिलाई, तो वुही ओढ़ के बैठे।
और शाल उढाई, तो उसी शाल में खुश है ॥३॥ पूरे०
गर उस ने दीया गम, तो उसी गम में रहे खुश।
मातम जो दीया, तो उसी मातम मे रहे खुश।

८ रञ्ज, उदासी ९ फिकर गम का असर १० बल, वट, त्योरी ११ टेढापन, तिर्छापन १२ उलाहना, शकायत १३ आसू भरना, अश्रुपात १४ खुशी, खुशदिली १५ रञ्ज, दुःखावस्था १६ समय, काल १७ काम १८ रोना पीटना

खाने को मिला कम, तो उसी कम में रहे खुश ।
जिस तरह रखा उस ने, उस आलम में रहे खुश ।
दुःख दर्द में आफात में जंजाल में खुश हैं ॥४॥ पूरे०
जीने का न अन्दोह[19] है न मरने का ज़रा गम[20] ।
यक्सां है उन्हें जिन्दगी और मौत का आलम[21] ।
वाकफ न वरस से न महीने से वह इक दम ।
शब[22] की न मुसीबत न कभी रोज़[24] का मातम ।
दिन रात घडी पैहर मह[25]-ओ-साल में खुश हैं ॥५॥ पूरे०
गर उस ने उढाया तो लीया ओढ़ दोशाला ।
कम्बल जो दीया तो वुही कांधे पै संभाला ।
चादर जो उढ़ाई तो वुही हो गयी वाला[26] ।
बंधवाई लंगोटी तो वुही हंस के कहा, "ला" ।
पोशाक में, दस्तार[27] में, रोमाल में खुश हैं ॥६॥ पूरे०

१९ अवस्था, हालत २० मुसीबत २१ गम २२ हालत २३ रात २४ दिन २५ मास, महीना २६ सुंदर, जेवर २७ पगडी

गर खाट बछाने को मिली, खाट में सोये ।
दुकां में सुलाया, तो जा हाट में सोये ।
रस्ते में कहा "सो", तो जा बाट में सोये ।
गर टाट बछाने को दीया, टाट में सोये ।
और खाल बछा दी, तो उसी खाल में खुश हैं॥७॥ पूरे०
पानी जो मिला, पी लीया जिस तौर का पाया ।
रोटी जो मिली, तो कीया रोटी में गुज़ारा ।
दी भूख, गर यार ने, तो भूख को मारा ।
दिल शाद रहे, कर के कड़ाके पै कड़ाका ।
और छाल चबाई, तो उसी छाल में खुश हैं ॥८॥ पूरे
गर उस ने कहा "सैर करो जा के जहां की"
तो फिरने लगे जंगलों वेरं, मार के झांकी ।
कुछ दैंशतो बियावां में खबर तन की न जॉ की ।
और फिर जो कहा "सैर करो हुसनेबुँतां की"

२८ निराहार २९ देश पृथ्वि, वन से भी मुराद है ३० जगल ३१ प्यारों (पुरुषों) की सुंदरता

तो चेशम-ओ-रुख़-ओ-ज़ुल्फ-ओ-ख़त्त-ओ-ख़ाल में खुश
हैं ॥९॥ पूरे०

कुछ उन को तलॅब घर की न बाहर से उन्हें काम।
तक्या की न ख्वाहश, न बिस्तर से उन्हें काम।
अस्थल की हवस दिल में न मदर से उन्हें काम।
मुफलस से न मतलब न तवङ्गर से उन्हें काम।
मैदान में बाजार में चौपाल में खुश हैं ॥१०॥ पूरे०

३२ आंख ३३ बाल ३४ बजा बता ३५ जरूरत ३६ फकीरों के रहने की जगह, (खानक़ाह) ३७ शौक, लालच, इच्छा ३८ मीच, तगदस्त ३९ अमीर ४० मदर

---

१६ राग विलावल ताल रूपक.

गर है फ़क़ीर तो तू न रख यहां किसी से मेल।
न तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिर पै खेल॥ (टेक)
जितने तू देखता है यह फल फूल पात बेल

१ फक़ीर के पात्रों के नाम है

सब अपने अपने काम की हैं कर रहे झमेल
नाता है यां सो नाथ, जो रिश्ता है सो नकेल
जो गम पड़े तो उसको तू अपने ही तन पर झेल ॥ १ गर है०
जब तू हुआ फकीर तो नाता किसी से क्या
छोडा कुटम्ब तो फिर रहा रिश्ता किसी से क्या
मतलब भला फकीर को वाबा किसी से क्या
दिलवर को अपने छोड के मिलना किसी से क्या ॥ २ गर है०
तेरी न यह जमीन है न तेरा यह आस्मान
तेरा न घर न बार न तेरा यह जिस्मों जां
उस के सवाय कि जिस पै हूवा तू फकीर यां
कोई तेरा रफीक न साथी न मिहरवान् ॥ ३ गर है०
यह उलफतें कि साथ तेरे आठ पैहर हैं
यह उलफतें नहीं हैं मेरी जां! यह कैहर हैं
जितने यह शैहर देखे हैं, जादू के शैहर हैं

२ सम्बन्ध ३ शरीर और प्राण ४ मित्र, दोस्त ५ मोह ६ गुस्सा, क्रोध

जितनी मिठाईयां हैं मेरी जां! वह ज़ैहर हैं॥ ४ गर है०
खूबां के यह जो चांद से मुंह पर खिले हैं वाल
मारा है तेरे वास्ते सय्याद ने यह जाल
यह वाल वाल अब है तेरी जान का वबाल
फंसियो खुदा के वास्ते इस में न देख भाल॥ ५ गर है०
जिस का तू है फकीर उसी को समझ तू यार
मांगे तो मांग उस से क्या नक़द क्या उधार
देवे तो ले वही जो न देवे तो दम न मार
इस के सिवाय किसि से न रख अपना कारो वार॥ गर है० ६
क्या फायदाः अगर तू हूवा नाम का फक़ीर
हो कर फक़ीर तो भी रहा चाल में असीर
ऐसा ही था तो फक़र को नाहक़ कीया असीर
हम तो इसी सखुन के हैं क़ायल मीयां नज़ीर

७ सुन्दर पुरुष अथवा स्त्री ८ शिकारी ९ दुःख, बोझ १० कैद
११ कौल, इक़रार, वादाः १२ कवि का नाम है

गर है फ़क़ीर तो तू न रख यहां किसी से मेल।
न तूंबड़ी न बेल पड़ा अपने सिर पै खेल ॥

१७ राग जंगला.

लाज मूल न आइया, नाम धराया फ़क़ीर ॥ टेक
रातीं रातीं वदियां करेंदा, दिन नूं सदावें पीर॥१॥ला०
अपना भारा चाय न सकदा, लोकां वधावें धीर॥२॥ला०
कुड़म कुटुंब दी फाही फस्या, गल विच पा लिया लीर ॥ ३ ॥ ला०
आख़िर नतीजाः मिलेगा पियारे, रोवेंगा नीरो नीर४ला०

मतलब

टेक! फ़कीर नाम धरा कर तुझे (इन कामों से) शर्म नहीं आती.

(१) रात के समय छुप कर तूं बुराइयां करता है और दिन को महात्मा या गुरु कहलाता है, इस से तुझे शर्म नहीं आती.

(२) अपने अन्दर तो गम फिकर का इतना बोझ धरा पड़ा है कि उस को तूं उठा ही नहीं सकता और लोगों को धीरज

दला रहा है। इस बात से तुझे शर्म नहीं आती.

(३) कैई तरह से चेलों का कुटुंब (परीवार) बनाकर आप तो तू उस मे फसा हुवा है और अपने गले मे भगवे रंग के कपड़े पाकर सन्यासी (बे सबन्धी) बता रहा है॥

(४) खैर, इन तमाम करतूतों का तुझ को अन्त में खूब नतीजा मिलेगा और जार जार तुम को रोना पडेगा॥

---

१८ राग शंकराभरण ताल केरवा

फ़क़ीरा। आपे अल्लाह हो, आपे अल्लाह हो, मेरे प्यारे!
आपे अल्लाह हो (टेक)
आपे लाढ़ा आपे लाढ़ी आपे मापे हो। आपे मापे हो॥
फ़क़ीरा। १
आप वधायां आप स्यापे, आप अलापे हो २॥ फ० २
रांझा तूं हीं, तूं हीं रांझा, भुल्ल हीर न वेले रो २॥ फ० ३
तेरे जेहा सानू एथे ओथे, कोई न जापे हो २॥ फ० ४
घुंड कड वयों चन्न मुंह उत्ते, ओहले रहों खलो॥ २
मेरे प्यारे। आपे ५

तूं ही सब दी जान प्यारी, तैनूं तानाः लगे न कोय २
मेरे प्यारे। आपे० ६

बोली तानाः यारी सेवा, जो देखें तूं सो २ मेरे प्यारे!
आपे० ७

सूली सलीब ज़ैहर दे मुके, कदे न मुकदा जो २॥फ०८
बुक्कल विच वड़ यार जो सुत्ते, ओथे तेरी लो २॥फ०९
तूं ही मस्ती विच शरावां, हर गुल दी खुशबो २॥
फ़कीरा आपे० १०

राग रंग दी मिट्ठी सुर तूं, लैं कलेजा टो २॥ फ० ११
लाह लीड़े यूसफ़ युद्ध मिल लै, दूई दे पट ढो २॥फ०१२
आठों अर्श तेरा नूर चमकदा, होर भी उच्चा हो२॥फ०१३
यह दुन्या तेरे नौंहां दे विच, हथ गल ते रस न रो २
फ़कीरा० १४

जे रब भालें बाहर फिरें, ऐस गल्लों मुंह धो॥२फ०१५
तूं मौला नहीं बन्दा चंदा, झूठ दी छड दे खो २॥फ०१६

पवन इन्द्र तेरी पंडां ढोंदे, क्यों तैनूं किते न ढो२॥फ०१७
काहनूं पया खेड़दा हैं भौं भौं विल्लीयां, वैठ नचल्ला हो॥
• फ़कीरा० १८
तेरे तारे सूरज थैं थैं नचदे, तूं वेह जाकर चो २॥फ०१९
पचे न तैनूं सुख वेओड़क, इहो गिरानी खो २॥फ०२०
दुःख हरता ते सुख करता, तैनूं ताप गये कद पोह २॥
फ़कीरा आपे० २१
चोर न पैये, तैनूं भूत न चमडे, होर गयो क्यों हो २॥
फ़कीरा आपे० २२
तू साक्षी केढ़ी केथां मारें, हुन थक कर चलयां हैं सौं २
॥ मेरे प्यारे आपे० २३
खुल्यां तैनूं भौ न खांदे, लुक लुक क़ैद न हो २ मे०२४
वहदत नूं कर कसरत देखें, गयों भैंगा किधरों हो २॥
मेरे प्यारे आपे० २५
ताज तखत छड ठट्टी मल्ली, ऐस गल्लों तूं रो २॥फ़०२६

छड के घर दीयां खंडां खीरां, की लोड़ चबावें तो: २
॥ मरजानियां ! आपे० २७

तेरे घट विच राम वसेन्दा, हाय ! कुट २ भर न भों॥ फ० २८
राम रहीम सब बन्दे तेरे, तैथों वडा न कोय २ ॥ फ० २९
आप भागीरथ आप ही तीरथ, बन गंगा मल धोय २ ॥
पर्दे फाहश होवी रब करके, नगा सूरज हो २ ॥ फ० ३१
छड मोहरा सुन राम धुहाई, अपना आप न कोह २ ॥ फ० ३२

मनस्तर पत्ति वार —१ ऐ फकीर (साधू) ! तू आप ईश्वर हो, अर्थात तू आप ब्रह्म है ऐसा अनुभव कर ॥ क्योंकि तू आप ही पति है और तू आप ही स्त्री है और आप ही पिन्नी (चाल्दैन) है, इसलिये आप (ईश्वर) अपने में अनुभव कर ॥

२ तू आप ही बधाई आप ही रोना और आलापना रूप है, इसलिये आप (ईश्वर) अपने में अनुभव कर ॥

३ तू ही आप राझा (आशक) है और तेरी प्यारी (हीर) तेरी बगल में है, उस को बाहर मत ढूंढ और न उस की तालाश में (उसे अपने साथ भूल कर) जंगल में रो । ऐ फकीर ! आप ईश्वर अपने आप अनुभव कर ॥

४ ऐ प्यारे ! तेरे जैसा यहां और वहां कोई नज़र नहीं आता (तूं ही १ अद्वतीय स्वरूप है) इसलीये ऐ साधू ! तू आप ही ब्रह्म है, ऐसे अनुभव कर ॥

५ अपने चांद जैसे सुन्दर मुखडे पर अपने हाथ से पर्दा डाल कर चुपके एक तरफ क्यों खड़ा हो रहा है ? ऐ प्यारे ! जरा बाहर आ, क्योंकि तू आप ही ईश्वर है, ऐसा अपने आप को अनुभव कर ॥

६ तू खुद सब की प्यारी जान है तुझ को इसलीये कोई बोली ठठोली असर नहीं करती, इस लीये प्यारे ! तू आप ही अपने आप को ब्रह्म स्वरूप अनुभव कर ॥

७ और जो बोली ठठोली, मित्रता और सेवा हम देखते हैं वह भी सब तू है, इसलीय आप ही ईश्वर हो ॥

८ फांसी, सूली, ज़ैहर इन तमाम के असर से भी जो खतम नहीं होता वह तू है, ए प्यारे ! ऐसा अनुभव कर ॥

९ अगर शरीर रूपी कपडे की बगल (दिल के) अन्दर हम सोये तो वहां (स्वप्नावस्था) में भी ऐ प्यारे! तेरा ही प्रकाश विद्यमान देखा ॥ इसलिये ऐ साधू ! अपने ही स्वरूप को अनुभव कर ॥

१० तू ही शराब के अन्दर मस्ती रूप है और तू ही हर

पुष्प की सुगन्ध है, इसलीये प्यारे ! आप स्वरूप अनुभव कर ॥

११ राग रंग की जो मीठी सुर कलेजे (दिल) को मोह लेती है वह भी तू है, ऐसा अनुभव कर ॥

१२ अज्ञान रूपी कपड़ों को उतार दे और नगा (शुद्ध सफटर) हो कर अपने यूसफ रूपा प्यारे (आत्मदेव) को घुट कर मिल (सून अभद हो) और द्वैत को बिल्कुल नाश कर ॥ ऐ प्यारे ! ऐसे ईश्वर हो ॥

१३ आठवें आकाश पर तेरा ही प्रकाश चमक रहा है और तू प्यारे ! इस से भी अधिक ऊंचे हो, और अधिक ऊंचा हो कर अपने असली स्वरूप को अनुभव कर । ऐसे तू ईश्वर साक्षात हो ॥

१४ यह तमाम दुन्या तो तेरे नासनों का करतब है, सुस्ती में मुंह पर हाथ रखकर मत रो (सिरफ अपने स्वरूप को याद कर) ऐसे सम्पूर्ण से साक्षात अपने को अनुभव कर

१५ अगर तू ईश्वर को कहीं बाहर ढूंढ रहा है तो इस कोदाश से मुंह को मोड़ और अपने अन्दर पीछे हट क्योंकि अपना स्वरूप अपने अन्दर अनुभव होता है ॥ ऐसे तु प्यारे ईश्वर हो ॥

१६ तू तो खुद सब का माशूक (मौला) है और नौकर

नहीं, नौकर बनने की झूठी आदत को प्यारे! छोड और इस तरह अपना असली स्वरूप समझ और अनुभव करके तू आप ईश्वर हो ॥

१७ वायू और इन्द्र देवता यह सब तेरा बोझ ढो रहे हैं (अर्थात सेवा कर रहे है) मगर तुझ को नहीं कहां ढो सक्ते? अर्थात तुझे कहीं नहीं लेजा सक्ते ॥ इस लीये स्वरूपको अनुभव कर

१८ ए प्यारे! काहे को यह घुमन घेरीया (छुपन लुकन) तू खेल रहा है? इन खेलों से बाज़ आकर (मुह मोड कर) शान्त हो कर बैठ, और अपने स्वरूप में स्थित हो, ऐसे आप साक्षात ईश्वर हो ॥

१९ तेरे हुक्म से तो तारे इधर उधर नाचते हैं, तू तो खुद कुटस्थ होकर बैठ (अर्थात तू तो खेल से न खेला जा) और अपने स्वरूप में स्थित हो। ऐसे तू आप साक्षात ईश्वर हो॥

२० तुझ को शायद अनन्त सुख (आनन्द) हजम नहीं होता जिस से तू दुन्या की राख उड़ाने को तय्यार हो जाता है। ऐ प्यारे! ऐसी बदहजमी को दूर कर और अपने निजानन्द में स्थित हो। ऐसे साक्षात ईश्वर हो ॥

२१ तू तो खुद दुःख के दूर करनेवाला और सुख के देनेवाला है, इस लीये तुझ को भला तीन ताप दुन्या के कहां? इस

लीये अपने स्वरूप का अनुभव कर और साक्षात ईश्वर हो ॥

२२ तुझ को कोई चोर नहीं लेजा सकता और ना ही कोई भूत पशाच तुझ को डरा सकता है ना अपना असर कर सकता है ॥ तू फिर और (भिन्य) क्यों हो रहा है? अपने स्वरूप में आ, वहां स्थिति कर, और साक्षात ईश्वर हो ॥

२३ तू तो शुद्ध साक्षी है, और कौन से भारी काम कर रहा है जिस में तू थक कर सोने लगा है ? ऐ प्यारे ! क्यों सोने लग पड़ा है ? उठ जाग अपने स्वरूप में स्थित हो और ऐसे साक्षात ईश्वर बन ॥

२४ आजाद होने से तुझ को कोई भूत इत्यादि तो नहीं खाते, फिर तू छुप छुप कर कैद क्यों हो रहा है ? उठ आजाद हो और अपने स्वरूप में आ, और साक्षात ईश्वर हो ॥

२५ एकता को तू बहु करके देखता है, तेरी दृष्टि भेंगी क्यों हो गयी है। अपनी दृष्टि को ठीक कर और अपने स्वरूप को अनुभव कर, ऐसे तब तू ईश्वर हो ॥

२६ अपने स्वरूप रूपी ताज और तख़त को छोड़ कर तू ने टुटी कुटया मल ली है इस बेवकूफी पर तू रो ॥ और खूब रो कर अपने स्वरूप रूपी तख़त पर बैठ और साक्षात ईश्वर हो ॥

२७ अपने घर का निजानन्द छोड कर तू घास फूस क्यों चुगाने लगा है ? ऐ प्यारे! किसवास्ते तोह (घास) तू चबा रहा है? अपने निजानन्द की तरफ मुंह मोड और स्वयं ईश्वर हो ॥

२८ तेरे अन्दर राम आप बस रहा है। हाय वहां (राम की जगह पर) अब घास कूट कूट कर मत भर, ऐ प्यारे! क्यों घर (दिल) अन्दर ईश्वर ध्यान की जगह (विषय वासना रूपी) तोह (भूसा) भर रहा है? अपने अन्दर स्वरूप का ध्यान और अनुभव कर, और ऐसे साक्षात ईश्वर हो ॥

२९ राम और ईश्वर सब तेरे बन्दे (चाकर, सेवाकारी) हैं और तुझसे बडा (मालिक) और कोई नहीं है। जब तुझसे बडा और कोई नहीं है तो फिर तु आप बन्दा क्यों बना फिरता है? (अर्थात आप अपने को बन्दा क्यों मान रहा है) ऐ प्यारे! तू आप मालक है और अपने आप को मालक सबका अनुभव कर और ऐसे साक्षात ईश्वर हो ॥

३० तू आप ही भागीरथ है (जो भीगीरथी गंगा को स्वर्ग से नीचे लाया है) और आप ही तीरथ है, इसलिये आप ही गंगा बन कर अपनी मैल तू धो, और ऐसे आप ईश्वर को अनुभव कर ॥

३१ ईश्वर करके तेरे सब पर्दे दूर हों, और तू सूरज की तरह नंगा हो (ता कि तेरे नंगा होने से सारी दुन्या प्रकाशमान

हो) और ऐसे तू साक्षात ईश्वर हुवा नज़र आवे ॥

३२ (दुन्या रूपी शत्रंज के जो गिरने के मोहरे हैं इन विषय रूपी) मोहरों को छोड़, और राम की पुकार (दुहाई) को सुन (राम कहता है) कि इन (विषय पदार्थों) मोहरों में फसने से कहीं अपने आप को मत मार, इन को छोड़ कर अपने स्वरूप और स्वराज में स्थिति कर, और वहां स्थित हुवा साक्षात ईश्वर हो ॥

---

(१०) साईं की सदा

यह दुन्या जाये गुज़श्तन है, साईं की है यह सदा वावा ॥ टेक०
यहां जो है रफ़्तनी अफ़तन है, तू इस में दिल न लगा वावा ॥ १ ॥ यह०
ज्ञानी न रहे ध्यानी न रहे, जो जो थे लासानी न रहे।
थे आखर को फ़ानी न रहे, फ़ानी को कहां बक़ा वावा ॥ २ ॥ यह०
थे कैसे कैसे शाह ज़िमीं, थे कैसे कैसे महल संगीन्।

१ गुजरने (पास से चले जाने) का स्थान २ आवाज़, पुकार ३ चले जाने वाला, स्थिर न रहने वाला ४ नाश होने वाला ५ स्थिर रहना, नित्य रहना ६ पृथ्वि के राजा ७ पत्थर के महल

हैं आज़ कहां वह मकान्–ओ–मकीं, न निशान रहा न पता बाबा ॥ ३ ॥ यह०

न वह शूर रहे न वह वीर रहे, न वह शाह रहे न वज़ीर रहे।
न अमीर रहे न फ़कीर रहे, मौला का नाम रहा बाबा ॥ ४ ॥ यह०

जो चीज़ यहां है फ़ानी है, जो शै है आनी जानी है।
दुन्या वह राम कहानी है, कुछ हाल हमें न खुला बाबा ॥ ५ ॥ यह०

माल ईमाल को लाते हैं, फल साथ अपने ले जाते हैं।
जो देते हैं सो पाते हैं, है यूंहि तार लगा बाबा ॥ ६ ॥ यह०

आने जाने का यहां तार लगा, दुन्या है इक बाज़ार लगा।
दिल इस में न तूं ज़िनहार लगा, कब निकला वह जो फंसा बाबा ॥ ७ ॥ यह०

यां मर्द वोही कहलाते हैं, जो जाकर फिर नहीं आते हैं।

८ जगह व अस्थान ९ सूरमा, बहादर १० कर्म, पुरुषारथ
११ कदाचित्

जो आते है और जाते हैं, वह मर्द नही असला[१२] बाबा ॥ ८ ॥ यह०

क्यों उमर अबस[१३] तू ने खोई, कुछ कर ले अब भी ढूंढा जोई[१४]।

मैं कहता हूं तुझ से यहां कोई, न रहा, न रहा, न रहा बाबा ॥ ९ ॥ यह०

तेह कर तेह कर बिस्तर अपना, बान्ध उठ कर रख्ते सफर[१५] अपना।

दुन्या की सराय को घर अपना, तू ने है ग़लत समझा बाबा ॥ १० ॥ यह०

क्या घोड़े बेचें के सोया है[१६], क्या वक्त राएगां[१७] खोया है।

जो सोया है वह रोया है, कहते है मर्दे खुदा बाबा ॥ ११ ॥ यह०

१२ असल, ठीक, नेक पुरुष १३ बेफायद, नकम्मी, १४ ईश्वर का ढूंढना, ईश्वर प्राप्तिकी जिज्ञासा १५ सफर (चलने का) सर्व असबाब १६ अर्थात बे खबर घन सुषुप्ति में सोया है १७ बे फायदा, फजूल

जितना यह माल खज़ाना है, और तू ने अपना माना है।
सब छोड़ के यहां से जाना है, करता है इकट्ठा क्या
बावा ॥ १२ ॥ यह०

क्यों दिल दौलत में लगाया है, सच कहता हुं झूठी माया है।
यह चलती फिरती छाया है, क्या है इतबार इस का
बावा ॥ १३ ॥ यह०

दुन्या को न कहो तूं मेरी है, ग़ाफ़ल दुन्या कब तेरी है।
साईं की जैसे फेरी है, फिरता है तूं इस जाः बावा
॥ १४ ॥ यह०

यह मुलको माल, यह जाहो हशम, यह ख्वेशो अकारब जो हैं बहम।
सब जीते जी के हैं हमदम, फिर चलना है तन्हा
बावा० ॥ १५ ॥ यह०

१८ जगह, दुन्या १९ दरजा भरु बतया २० अपने संबन्धी, रिशतेदार और हमसाया २१ साथ प्राप्त हुवे २ २२ अकेले

जो नेक कमाई करते हैं, जो सांसों पर गुजरते है।
जो जीते जी ही मरते हैं, जीना है बस उनका बाबा
॥ १६ ॥ यह०

२३ मुराद है, कि जो जीते जी परमेश्वर को प्राप्त हो कर जीवनमुक्त हो जाते हैं ॥

निजानन्द (खुदमस्ती).

१ राग शंकराभरण ताल धुमाली

अक़ल नक़ल नही चाहे हम को पाग़ल पन दरकार
हमें इक पागल पन दरकार ॥ टेक

छोड़ पुवाड़े झगड़े सारे गोता वेहदत अन्दर मार ॥
हमें इक० १

लाख उपाओ करले प्यारे, कदे न मिलसी यार ॥ हमें०२

वेखुद होजा देख तमाशा, आपे खुद दिलदार ॥ हमें० ३

१ एकता, अद्वैत २ कभी भी ३ अहंकार रहित ४ आशक माशूक (प्यारा)

२ लावनी ताल धुमाली

कोई हाल मस्त कोई माल मस्त कोई तूती मैना सूए में
कोई खान मस्त पैरान मस्त कोई राग रागनी दुहे में
कोई अमल मस्त कोई रमल मस्त कोई शतरंज चौपट जूए में
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब पड़े अविद्या कूए में ॥ १

कोई अकलमस्त कोई शेकल मस्त कोई चंचलताई हांसी में
कोई वेद मस्त केतब मस्त कोई मक्के में कोई कांसी में
कोई ग्राम मस्त कोई धाम मस्त कोई सेवक में कोई दासी में
इक खुद मस्ती विन और मस्त सब बन्धे अविद्या फांसी में॥२
कोई पाठ मस्त कोई ठाठ मस्त कोई भैरों में कोई काली में
कोई ग्रन्थ मस्त कोई पन्थ मस्त कोई श्वेते पीते रंग लाली में
कोई ख़ाम मस्त कोई खाम मस्त कोई पूर्ण में कोई खाली में
इक खुद मस्ती विन और मस्त सब बन्धे अविद्या जाली में॥३
कोई हाट मस्त कोई घाट मस्त कोई वन पर्वत औजाड़ा में
कोई जात मस्त कोई पात मस्त कोई तात भ्रात सुत दारा में
कोई कर्म मस्त कोई धर्म मस्त कोई मसजद ठाकरद्वारा में
इक खुद मस्ती विन और मस्त सब बहे अविद्या धारा में॥४
कोई साक मस्त कोई खाक मस्त कोई खासे में कोई मलमल में
कोई योग मस्त कोई भोग मस्त कोई इस्थिति में कोई
चलचल में

१ सफेद. २ जर्द. ३ उजाड, बियाबान.

कोई ऋद्धि मस्त कोई सिद्धि मस्त कोई लैन देन की कल कल में
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब फंसे अविद्या दल दल में ॥५॥

कोई उर्ध मस्त कोई अधं मस्त कोई बाहर में कोई अन्तर में
कोई देश मस्त परदेश मस्त कोई औशध में कोई मन्त्र में
कोई आप मस्त कोई ताप मस्त कोई नाटक चेटक तन्त्र में
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब फंसे अविद्या जन्त्र में ॥ ६

कोई सुष्टे मस्त कोई तुष्टे मस्त कोई दीर्घ में कोई छोटे में
कोई गुफा मस्त कोई सुफा मस्त कोई तूबे में कोई लोटे में
कोई ज्ञान मस्त कोई ध्यान मस्त कोई असली में कोई खोटे में
इक खुद मस्ती बिन और मस्त सब रहे अविद्या टोटे में ॥ ७

४ नीचे. ५ ठीक अरोग्य. ६ प्रसन्नचित्त.

---

३ राग झजोटी ताल तीन

आ दे मुकाम उच्चे आ मेरे प्यारया! (टेक)

पा गले असली पागल हो जा, मस्त अलस्त सफा मेरे
प्यारया ! आ दे मुकाम०[1]

ज़ाहर सूरत दौंला मौला, बातनै खास खुदा मेरे
प्यारया ! आ दे मुकाम०[2]

पुस्तक पोथी सुट्टें गंगा विच, दम दम अलख जगा मेरे
प्यारया ! आ दे०[3]

सेलीं टोपी ला दे सिर तों, रुण्ड मुड होजा मेरे
प्यारया ! आ दे०[4]

इज्जत फोकी फूक दुन्या दी, अक्क धतूरा खा मेरे
प्यारया ! आ दे०[5]

झगडे झेडे फैसल रिंदा, लेखा पाक चुका मेरे प्यारया !
आ दे०[6]

कदका वगल ढण्डोरा किहाँ, ढूण्डन किते न जा मेरे
प्यारया ! आ दे०[7]

१ रमज (असली वस्तू) २ भाला भाला ३ अन्दरसे ४ फैंक
५ इज्जत की (दुन्या की) पगडी, टोपी ६ साफ, बे बाक ७ कैसा

तेरी बुक्कल विच प्यारा लेटे, खोल तनी गल ला मेरे प्यारया ! आ दे०८

आपे भुल भुलावें आपे, आपे बने खुदा मेरे प्यारया! आ दे०९

पर्दे फाड़ दूई दे सारे, इक्को इक दिखा मेरे प्यारया! आ दे०१०

८ बगल, गोद ९ द्वैत.

---

४ राग भैरवी ताल दादरा

गर हम ने दिल सनम को दीया, फिर किसी को क्या
इस्लाम छोड़ कुफर लीया, फिर किसी को क्या
हमने तो अपना आप गिरेबां कीया है चाक
आप ही सीया सीया न सीया, फिर किसी को क्या
आंखें हमारी लाल सनम, कुच्छ नशा पीया ?

१ प्यारा २ मुसलमानी धर्म ३ अपना कपड़ा या चोगा ४ फाड़ना

आप ही पीया पीया न पीया, फिर किसी को क्या
अपनी तो ज़िंदगानी मीयां मिसल हुबावें है
गो खिज़र लाख बरस जीया, फिर किसी को क्या
दुन्या में हमने आ के भला या बुरा कीया
जो कुच्छ कीया सो हमने कीया, फिर किसी को क्या

५ बुदबुदे की तरह, सदृश बुलबुले के ६ मुसल्मानों में पानी के देवता का नाम है

---

५ राग माड ताल धुमाली

भला हुवा हर वीसरो सिर से टरी बला ।
जैसे थे वैसे भये अन कुच्छ कहा न जाय ॥
मुख से जपूं न कर से जपूं उर से जपू न राम ।
राम सदा हम को भजे हम पावें विश्राम ॥
राम मरे तो हम मरे? हमरी मरे बला ।
सत्य पुरुषों का वालका मरे न मारा जाय ॥

१ भूल गया २ हाथ ३ दिल अथवा नाभि से ४ आराम

हद टप्पे सो औलिया बेहद टप्पे सो पीर।
हद बेहद दोनों टप्पे, वा का नाम फक़ीर ॥
हद हद कर दे सब गये बेहद गया न कोय।
हद बेहद मैदान में रहयो कबीरा सोय ॥
मन ऐसो निर्मल भयो जैसे गंगा नीरै।
पीछे पीछे हर फिरे, कहत कबीर कबीर ॥

१ पैगम्बर ६ जल

---

६ राग माड ताल दादरा

१. आप में यार देख कर, आईना पुर सफा कि यूं
मारे खुशी के क्या कहें, शशंदर सा रह गया कि यूं
२. रोके जो इल्तमास की, दिल से न भूलयो कभी
पर्दा हटा दूई मिटा, उस ने भुला दीया कि यूं
३. मैं ने कहा कि रंज ओ गम, मिटते हैं किसतरह कहो
सीना लगा के सीने से, माह ने बता दीया कि यूं

१ साफ शीशा २ अश्चर्य ३ अर्ज़

४ गर्मी हो इस बला कि हाय, भुनते हों जिस से मर्दों जॅन
अपनी ही आब-ओ ताब है, खुद हि हू देखता कि यू
५ दुन्या-ओ आक़िबत बना वाह वा जो जहॅल ने कीया
तारों सा मिहरे राम ने पल में उड़ा दीया कि यू

४ स्त्री पुरुष ५ तेज और दमक (चमक) ६ लोक और परलोक ७ अविद्या ८ सूरज

पंक्तिवार अर्थ

१ जैसे साफ शीशे में वस्तू पूरी तरह नजर आती है इस तरह अपने (दिल) अन्दर यार (स्वरूप) को देख कर ऐसा हैरान (आश्चर्य) हो गया कि खुशी के मारे (मुह से) कुच्छ न बोला गया (बोल सका)

२ जब मैं ने उस स्वरूप (यार) से रो कर अर्ज करी "कि मुझे कभी न भूलना" तो उस ने द्वैत का पर्दा बीच से हटा दीया और मेरे से अभेद होकर अर्थात मेरा ही स्वरूप बन कर उस ने मेरे को हाट भुला दिया (क्यों कि यादगीरी तो द्वैत में होती है)

३ मैं ने उस यार से कहा कि रंज और गम कैसे मिटते हैं, तो उस ने छाती से छाती मिलाकर (अर्थात अभेद होकर) कहा कि ऐसे दूर होते हैं, और तरह नहीं

४ इस गजब की गर्मी हो कि दाने की तरह पुरुष और स्त्री भुन रहे हों, मगर मैं ऐसा देखता हूं कि मेरी हि यह चमक दमक (तेज) है और मैं खुद हूं

५ लोक और परलोक जो कुच्छ अविद्या (अज्ञान) ने बनाया था, मेरे राम ने उस को ऐसे उडा दीया जैसे सूरज तारों को उडा देता है

---

७ गजल ताल दादरा.

हस्ती-ओ- इल्म हूं मस्ती हूं, नहीं नाम मेरा
किबरयाई-ओ-खुदाई, है फकतै काम मेरा
चेशमे लैला हूं, दिले कैसं,-व-दस्ते फरहाद

१ सत् चिदानन्द मैं हू २ बुजुर्गी, इक्बालमन्दी ३ सिर्फ ४ लैली की आंख ५ मजनू का दिल (लैली मजनू दो .आशक् माशूक पंजाब देश में हुवे हैं) ६ (शीरीं का .आशक) फर्हाद का हाथ (जिस ने पहाड को फोड डाला)

बोसाँ देना हो तो दे ले, है लबे जाम मेरा
गोशे गुल हुं रुखे यूसफ, दमे .ईसाँ सरे सरमद
तेरे सीने में वसूं हूं, है वोही धाम मेरा
हलके मंसूरे तने शम्स,–व– इल्मे .उलमा
वाह वा बेहर हूं और, बुदबुदाँ इक राम मेरा

७ चूमना हो तो चूम ले ८ मेरा मुंह रूपी प्याला तेरे नजदीक है ९ फूल का कान १० यूसफ का चेहरा ११ ईसा का दम १२ सरमदका सिर १३ दिल १३ घर १४ मसूर (ब्रह्म ज्ञानी) का कंठ (हलक) १६ शमस तबेज का तन (बदन) १७ विद्वानों की विद्या १८ समुद्र १९ बुलबुला

---

८ राग जिला ताल दादरा

क्या पेशवाई बाजा अनाहद शब्द है आज।
वैलकम को कैसी रौशनी, समदान्यों: है आज ॥१॥
चक्कर से इस जहान के फिरे असल घर को हम।

१ आगे चल कर लेने वाल २ अनहद ध्वनी, ॐ (प्रणव)
३ मुबारकबादी ४ उत्तम, शुद्ध

फुट वाल सब ज़मीन है, पे पर फ़िदा है आज ॥२॥
चक्कर में है जहान, मैं मर्कज़ हूं मिहर सां ।
धोके से लोग कहते हैं, सूरज चढ़ा है आज ॥३॥
शहज़ादे का जॅलूस है, अब तख़ते ज़ात पर ।
हर ज़र्रह सदक़ः जाता है, नग़्मा सरा है आज ॥४॥
हर वर्गो मिहरो माह का रक्सो सरोद है ।
आराम अमन चैन का तूफ़ां बपा है आज ॥५॥
किस शोखेचश्म की है यह आमद कि नूरे बर्क़ ।
दीदों को फाड़ फाड़ के राह देखता है आज ॥६॥
आता केरम नशां शाहे अंबर दस्त है ।

वारश की राह पानी छिडकता खुदा है आज ॥७॥
झुक झुक सलाम करता है अब चाद .ईद है।
ईकंवाले राम राँम का खुद हो रहा है आज ॥८॥

२१ राम के हुक्म का मानना २ कवि का नाम

भावार्थ —

१ आगे को जाकर लेने वाला प्रणव का बाजा क्या उत्तम बज रहा है और रौशनी सुवाग १ के वास्ते क्या उत्तम जग मगा रही है

२ इस दुन्या के चक्कर से निकल कर हम जब अपने असली धाम (निज स्वरूप) की तरफ मुडे तो पृथ्वि हमारी खेल (फुट ५ ल) हो कर चरणों पर वारे जाने लगी

३ ससार तो चक्कर में है, मैं उस चक्कर का केन्द्र सूरज की तरह हू। लोग धोक से कहते हैं कि आज सूरज चढा है (क्यों कि सूरज तो नित्य स्थित रहता है)

४ अपने स्वराज्य की गद्दी पर बैठने का आज शुभ समा हो रहा है। इस वास्ते एक २ ज़रह (परमाणु) कुर्बान जा रहा है,

और गा रहा है (जब स्वरूपमें निष्ठा हो तो सब उस पर .कुर्बान हो जाते हैं)

५ (इस अनुभव पर) हर पता सूरज और चान्द नाच रहा है, आनन्द शान्ति का समुद्र आज बैह रहा है)

६ किस प्यारे के आने की यह खबर है, कि जिस के आने का बिजली सादृश्य प्रकाश (तेज) आंखो को फाड़ फाड़ कर देख रहा है

७ कृपा करने वाला (आनन्द देने वाला) यार (ज्ञान रूपी सूरज) आनन्द के बादल को हाथ में लीये आरहा है और वर्षा की जगह रास्ते मे आनन्द का जल छिड़क रहा है अर्थात अनुभव हो रहा है और आनन्द की वर्षा खूब हो रही है

८ ,ईद का जो चान्द निकला है अर्थात अनुभव जो हुवा है (उस ज्ञानी के वास्ते) वह मानो उसको नमस्कार झुक झुक कर कर रहा है। राम का इक़बाल अर्थात राम के हुक्म का मान स्वयं हो रहा है

९ राग जिला ताल दादरा

बाज़ीचा-ऐ-इत्फ़ाल है दुन्या मेरे आगे
होता है शब-ओ-रोज़ तमाशा मेरे आगे
इक खेल है औरंगे सुलेमान मेरे नज़दीक
इक बात है .इजाज़े मसीहा मेरे आगे
जुज़ नाम नहीं सूरते आलम मेरे नज़दीक
जुज़ वहम नहीं हस्ती-ए-अशया मेरे आगे
होता है निहां खाक में सहरा मेरे होते
घिसता है जंरी खाक पै[12] दरया मेर आगे

१ बच्चों का खेल २ रात और दिन ३ सुलेमान बादशाह का शाही तख्त ४ करामात, मोजज़ा ५ नाम है ईसामसीह का ६ स्वाये ७ जहान की शकल ८ वस्तु, पदार्थ की मौजूदगी, अथवा उस का दृश्य मात्र ९ छिपजाना १० खाक ११ माथा (मस्तक) १२ पर

---

१० राग आनन्द भैरवी ताल धुमाली

दुन्या की छत पर चढ़ ललकार　　(टेक)

बादशाह दुन्या के हैं मोहरे मेरी शतरंज के
दिललगी की चाल हैं सब रंग, सुलाह्-ओ-जंग के
रक्से शादी से मेरे जब कांप उटती है ज़मीन्
देख कर मैं खिलखिलाता कहकहाता हूं वहीं
खुश खड़ा दुन्या की छत पर हूं तमाशा देखता
गैह बगह देता लगा हूं, वैहशियों की सी सदा
ऐ मुकाली रेल गाड़ी! उड़ गयी। ऐ सिर जली!
ऐ खरे दँज्जाल! नखराः बाजीयों में जूं परी

१ खुशी के नाच से २ खिल कर हसना ३ कभी कभी ४ वैहशी पशूवों की तरह आवाज ५ भाड़े सुखवाली ६ जले हुवे सिखाली अर्थात सिर से धुवां निकालने वाली ७ एक गधा को, कहते हैं जो हजरत .ईसा के दुश्मन के तले रहता था और जिस का पेट अजहद लम्बा था और बाकी अंग बहुत छोटे, सो उस गधे से रेल को दर्शाया है ८ मानन्द परी की तरह.

भोले भाले आदमी भर भर के लम्बे पेट में
ले डेकारें लोटती है रेत में या खेत में
छोड़ धोका बाज़ीया और साफ कहो सच मुच वता
मंज़ले मंकसूद तक कोई हुआ तुझ से रेसा ?
पेट में तेरे पडा जो वह गया ! लो वह गया !
लेके हाथे मजले मक़सूद पीछे रह गया
ऐ जवान् वाबू ! यह गर्मी ों ? जरा थमकर चलो
वैग ले कर हाथ में सरपट न यू जल्दी करो
दौडते क्या हो ग्राये नूर के मिलने को तुम ?
वह न वाहर है जरा पीछे हटो वाँतन को तुम
क्यों हो मुजरम ! ऐहलकारों की खुशामद में पड़े ?
यह कचेहरी वह नही तुम को रिहाई दे सके
पैहन कर पोशाक गैहने बुर्का ओढे नाज़ से

९ यहा मुराद है सीटी से अथवा चीख से १० आखरी मुकाम असली घर तक ११ पहुचा १२ किन्तु लेकिन १३ अन्दर-

चोरी चोरी गुलवदन मिलने चली है यार से
ऐ महब्बत से भरी ! ऐ प्यारी बीबी खूबरू !
चौंक मत घबरा नहीं सुन कर मेरी ललकार को
निकल भागा दिल तेरा, पैरों से बढ़ कर दौड़ में
दिल हरम है यार का, लेकिन हो गिर न दौड़ में
हो खड़ी जा ! बुर्क़ाः जामाः और बदन तक दे उतार
बे हया हो एक दम में, ले अभी मिलता है यार
दौड़ क़ासिद ! पर लगा कर, उड़ मेरी जां ! पेच खा कर
हर दिलो हर जां में जाकर, बैठ जम कर घर बना कर
"मैं खुदा हूं", "मैं खुदा हूं" रोज़ जाँ में फूंक दे
हर रगो रेशे में घुस कर मस्ती-ओ-सुरूर झोंक दे
गैरबीनी ! गैरदानी और गुलामी बंदगी (को)

१४ पुष्प के बदन वाली, अति नाज़क, यहां वृत्ति से मुराद है १५ अति सुन्दर १६ आवाज़, ध्वनी १७ मन्दर १८ ठेहर स्थित १९ सदेसा लेजाने वाला २० भेद गुप्त २१ मस्ती (निजानन्द) और शराब (ज्ञानामृत) २२ द्वैत दृष्टि २३ द्वैतभावना

चार गोले दे धड़ा धड़ एक ही एक कूक दे
रौशनी पर कर स्वारी आंख से कर नूर थौरी
हर दिलो दीदों: में जा झंडी अलफ का ठोंक दे

२४ आनन्द रूपी प्रकाश की वर्षा आंख से २५ हर दिल और आंख २६ यहां मुराद अद्वैत के झंडा से है और रसाला अलफ जो स्वामी जी ने निकाला था उस से भी है क्योंकि वह रसाला भी अद्वैत प्रतिपादन करता है इस वास्ते उस की जगह अलफ लिख दीया है

---

११ राग जिला ताल दादरा

गुल को शमीम, आब गोहर और ज़र को मैं
देता बहादरी हूं, बब्रा शेरे नर को मैं
शाहों को रोब और हसीनों को हुसन-ओ नाज़
देता हूं जबकि देखूं उठा कर नज़र को मैं

१ फूल २ खशबू, सुगन्धि ३ चमक दमक, रौनक ४ मोती ५ सोना, स्वर्ण ६ पुरुष पुल्लिंग शेर, ७ डर, दबदबा ८ सुन्दर ९ सौन्दर्य, खुबसूरती १० नज़ाकत या नखरा.

सूरज को सोना चाद को चान्दी तो दे चुके
फिर भी ख्वायफ करते है देखूं जिद्धर को मैं
अंब्रूए कैहंकशां भी अनोखी कमन्द है
वे कैद हो असीर जो देखू इद्धर को मै
तारे झमक झमक के बुलाते है राम को
आखों में उन की रहता हूं जाऊं किद्धर को मैं

११ मुजरा, नाच १२ आखों की भवें १३ आकाश में एक लम्बी सफदी जो रात के समय नजर आती है जिस को (Milky Path) दुधीया रास्ता कहते है १४ अजीब १५ कैद

---

१२ राग भैरवी ताल चलन्त

यह डर से मिहर आ चमका अहाहाहा, अहाहाहा
उधर मेह बीम से लपका, अहाहाहा, अहाहाहा
हवा अटखेलीया करती है मेरे इक इशारे से

१ सूरज २ चाद ३ चोहल पोहल करना

है कोड़ा⁴ मौत पर-येरा, अहाहाहा अहाहाहा
अकाई⁵ जात में मेरी असंतों⁶ रग है पैदा
मजे करता हूं मैं क्या क्या, अहाहाहा अहाहाहा
कहूं क्या हाल इस दिल का कि शादी⁷ मौजें⁸ मारे है
है इक उमडा हुवा दरया, अहाहाहा अहाहाहा
यह जिस्मे राम⁹, ऐ वेदंगो¹⁰ ! तंसव्वर¹¹ मेहज़¹² है तेरा
हमारा बिगड़ता है क्या, अहाहाहा¹³ अहाहाहा ॥

४ चाबुक ५ एक अद्वितीय ६ अपना असली स्वरूप ८ खुशी, आनन्द ८ लैहरे मारना ९ राम का शरीर १० बुरा बोलने वाले या ताना मारने वाले ! ११ वैहम (ख्याल) १२ सिर्फ १३ अश्चर्य और हर्ष के समय ऐसा बोला जाता है

---

१३ गजल ताल पशतो

पीता हूं नूर¹ हर दम, जामे सरूर² पे हम } टेक
है आसमान प्याला, वह शरावे नूर³ वाला }

१ प्रकाश २ आनन्द का प्याला ३ प्रकाश रूपी शराब यानी ज्ञानामृत

है जी में अपने आता दू जो है जिस को भाता
हाथी गुलाम घोड़े जेवर ज़मीन जोड़े
ले जो है जिस को भाता मांगे वगैर दाता॥पीता हूं० १
हर कौम की दुआयें हर मत की ईल्तजायें
आती हैं पास मेरे क्या देर क्या स्वेरे
जैसे अड़ाती गायें जंगल से घर को आयें॥पीता हूं० २
सब ख्वाहशें नमाजें गुण कर्म और मुरादें
हाथों में हूं फिराता दुन्या हू यू बनाता
मेमार जैसे ईटे, हाथों में है घुमाता ॥ पीता हू० ३
दुन्या के सब वखेड़े झगड़े फसाद झेड़े
दिल में नहीं अड़कते, न निगह को बदल सकते
गोया गुलाल हैं यह, सुर्मा मसाल हैं यह ॥ पीता हूं० ४
नेचर के लॉज सारे अहकाम हैं हमारे

४ दिल ५ प्रार्थनायें ६ दरखास्तें ७ मकान बनाने वाला
८ आंखों में सुर्मे की तरह ९ प्रकृति (कुदरत) १० कानून, नीयम् ११ हुकम, खिदमतगार (इन्तज़ाम करने वाला)

क्या मिहँर क्या सतारे हैं मानते इशारे
हैं दँस्तो पा हर इक के मर्ज़ी पे मेरी चलते ॥ पीता हू० ५
कशशे मिंकँल की .कुद्रत मेरी है मिहँरो उलफत
है निगह तेज़ मेरी, इक नूर की अन्धेरी
बिजली शँफक अङ्गारे, 'सँीने के हैं शरारे ॥ पीता हूं० ६
मैं खेलता हू होली दुन्या से गैन्द गोली
ख्वाह इस तरफ को फेंकू ख्वाह उस तरफ चला दू
पीता हू जाँम हर दम, नाचू मुंदाम थप थम
दिन रात है लँरज़म, हूं शाहे रांम बेगम ॥ पीता हू० ७

१२ सूरज १३ हाथ अरु पाओं १४ (खैंचने की) ताक़त का नाम Law of gravitation) १५ मिहरबानी और प्यार १६ दोनों समय मिल्ने के वकत जो आकाश में लाली होती है १७ दिक १८ प्रेम प्याला १९ नित्य, हमेशा २० आनन्द से आसूवों का धीमे धीमे टपकना (या) बरसना २१ बेगम राम बादशाह हू.

१४ गुजन ताल कृवाली

(१) हुबाबे जिस्म लाखों मर मिटे, पैदा हुये गुम में
सदा हूं बेहैर बेहद लैहर है धोखा फ़रावां का

(२) मेरा सीना है मशरक़ आफताबे ज़ाते तायां का
तलूए-सुबह ए-शादी, वाशुदन है मेरे मज़गां का

(३) .ज़ुबां अपनी बेहारे .ईद का मुज़दह सुनाती है
दुरों के जगमगाने से हुवा आलम चरागां का

(४) सरापा नूर पेशानी पै मेरी मैह देरखशां है

१ बुलबुला २ शरीर ३ समुद्र ४ एकता पर ५ कसरत, .ज्यादा, नानत्व का धोखा है ६ दिल ७ प्रकाशस्वरूप आत्मा (सूरज) का घर (पूरब तरफ) है ८ आनन्द की सुबह (प्रातः काल) का निकलना ९ खुलना १० पलकें आंखो की ११ .ई-दकी बहार १२ खुशखबरी १३ मोती (इस जगह दान्तों से मुराद है) १४ (ज्ञान रूपी) दीपकों का लोक १५ चमकीली आभा, चर्कों से मुराद है १६ चांद (शिव) १७ चमकता

कि झूमर[18] है जंनी सीमी[19] पे गिर्जाये[20] जिमिस्तां का

(५) खुशी से जान जांमे[21] में नहीं फूली[22] समाती अब
गुलों[22] के बाँर[23] से टूटा, यह लो दाँमान्[24] बियावां का

(६) चमन में दौरं[25] है जारी, तरंब[26] का चैहच[27] हाने का
चहकने में हुवा तबदील शेरंन[28] मुर्गं नाला का

(७) निगाहे मस्त[29] ने जब राम की आँमद[30] की सुन पाई
है मंजमा[31] सैद[32] होने को यहा वैहशी[33] गंजाला का

१८ झूमर माथे पर लटकने वाला जेवर (गहना) १९ चांदी की पेशानी (बर्फ) पर २० पावती (उमा) २१ अपन अन्दर के खाने रूपी पल्ल में २२ फूल २३ बोझ २४ पल्ला जगल का (मराद यह है, कि राम अभी नीचे आया) २५ समय, काल २६ खुशी २७ शान, हाल्त २८ रोते हुये पक्षीयोंका २९ मस्त पुरुषकी नजर ३० आने की ३१ मोह, हजूम ३२ शकार होने को ३३ जगली मृगों का

अर्थ पकृती घार

१ बुदबुदा रूपी शरीर लाखों मर मिटे और मुझ में पैदा

हो गये, मगर सर्वदा मैं अद्वैत रूपी समुद्र रहता हूं जिसमें नाना रूपी लहरें धोखा सिर्फ हैं

२. मेरा जो दिल है वह पूर्व है जहां से (प्रकाशस्वरूप) सूरज प्रगट होता है और आनन्द की प्रातःकाल मेरी पलकों के खुलने से निकल आती है ॥

३. मेरी जो जुबान् है वह आनन्द की बहार की खुशखबरी सुनाती है (शब्दरूपी) मोतियों के (मुंह से निकलकर) जगमगाने से दीपमाला का समय बन्ध गया ॥

४. मेरी चमकीली पेशानी के (बरफों के) उपर चांद ऐसे चमक रहा है मानो कि पार्वती के रौशन (मुनव्वर) माथे पर झूमर (जेवर) लटक रहा है ॥

५. आनन्द इतना बढ गया कि जान अब तनके अन्दर नहीं समाती (अर्थात इतना आनन्द बढ गया कि राम को पहाडों में रहना मुश्कल हो गया) फूलों के बोझ से वह जंगल का पल्ला टुट गया (अर्थात् आनन्द के बढ़ने से वह राम पहाडों से नीचे मैदान में उतर आया).

६. बाग में खुशी के चैहचहाने का समय जारी है और इस

आनन्द के बढने से रोते हुये मुर्गों (पक्षियों) का शोर चैहचहाने में बदल गया

७ ब्रह्म ज्ञानी की नजर ने जब राम के आने की खबर सुनी तो दर्शन की इन्तजार लोग ऐसे करने लग पड़े मानो कि जगली मृगों का हजूम (ग्रोह) देखने का आशक हो रहा है (अर्थात् जैसे मृग जल की इन्तजार मे टिकटिकी बान्धे रहते हैं ऐसे सर्व लोग रामकी इन्तजार में लगे हैं)

---

१५ गजल

मुझ बैहरे खुशी की लैहरों पर दुन्या की किशती रहती है
अज सैले सरूर धड़कती है छाती और किशती बैहती है
गुल खिलते हैं । गाते है रो रो बुलबुल। क्या हसते हैं नॉले नद्या
रगे शॅफक घुलता है। बादे सँबा चलती है । गिरता है

१ खुशी का समुद्र २ आनन्द के तेज तूफान (बहाओ) से ३ फूल ४ धारा चशमें ५ प्रात काल और सायकाल जो आकाश में लाली बादलों में होती है ६ पर्वा वायू

छम छम बाँरां, मुझ में ! मुझ में !! मुझ !!! ॥ (टेक)

करते हैं अंजम जगमग । जलता है सूरज धक धक ।
सजते हैं बागो वियाबां

बसते हैं नंदन पैरस । पुजते हैं काशी मक्का । बनते हैं
जिन्नतो रुंजवां, मुझ में ! मुझ मे !! मुझ में !!!

उड़ती हैं रेलें फर फर ! बैहती हैं बोटें झर झर ! आती
है आन्धी सर सर

लड़ती है फौजे मर मर ! फिरते हैं जोगी दर दर । होती
है पूजा हर हर, मुझ मे ! मुझ में !! मुझ में !!!

चैर्खे का रंग रसीला । नीला नीला । हर तरफ दमकता है
कैलास झलकता है । बैहेरे डलकता है । चांद चमकता
है, मुझ में ! मुझ में !! मुझ में !!!

आज़ादी है आज़ादी है आजादी मेरे हां । गुंजायशो

● वर्षा ८ तारे ९ बाग और जगल १० स्वर्ग और नर्क ११ बेड़ी कशती १२ आकाश १३ समुद्र १४ स्थान की गुजा-न्यश (पुरती)

जा सब के लीये बेहदो पाँयाँ

सब वेद और दर्शन, सब मज़हब । क़ुरआन-अञ्जील और त्रैपटका

बुद्ध, शंकर, ईसा और अहमद । था रहना सहना इन सब का, मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! मुझ में!

थे कपल कनाद और अफलातूं । अस्पैंसर कैंट और हैमिलटन

श्री राम युद्धिष्ठर अस्कन्दर । विक्रम क़ैसर अलज़बथ अकबर, मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! मुझ में!

मैदाने अँबद और रोज़े अज़ल । कुल मांज़ी हाल और मुस्तक़बिल

चीज़ों का बेहद रद्दो बदल । और तख़ता-ए-दैहर का

१५ बेशुमार १६ बुद्ध मत की पुस्तक १७ यूरप के फलस्फरों के यह नाम है १८ अनन्त मैदान अर्थात् लाइन्तहाई १९ प्रलय कालका दिन २० वर्तमान भविष्यद् २१ बदलते रहना २२ समय का पलटा

है हल चल, मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! मुझ में!
हूं रिश्ता[23] ए-वहदत दर कसरत। है इल्लतो[24] सिहत[25] और राहत[26]
हर विद्या, इल्म हुनर हिकमत। हर खूबी, दौलत और वरकत
हर निमत, इज्जत और लज्जत। हर कशिश का मर्कज,[27] हर ताकत
हर मतलब-कारण कारज सब। क्यों किस जाँ, कैसे-क्योंकर कब, मुझ में! मुझ में!! मुझ में!!! मुझ में!
हूं आगे पीछे ऊपर नीचे जाहर वातन मै ही मै।
मांशूक और आशक शाइरे मजमून बुलबुल गुलशन में ही मै॥

२३ एकता का धागा २४ कारण २५ तदुरस्ती २६ आराम २७ केन्द्र २८ स्थान २९ अन्दर ३० प्यारा (आत्मा) ३१ भक्त ३२ कवि ३३ बाग.

१६ गजल ताल पश्तो

ठंडक भरी है दिलमें, आनन्द बेह रहा है
अमृत बरस रहा है, झिम! झिम!! झिम!!! (टेक)
फैली सुबहे शादी, क्या चैन की घड़ी है
खुश के छुटे फव्वारे, फरहत चटक रही है
क्या नूर की झड़ी है, झिम! झिम!! झिम!!!
शबनमें के दर्दे ने चाहा, पॉमाल कर दे गुलें को
सब फिकर मिल कर आये, कि नढाल करदें दिलको
आया सबाँ का झोंका, वह भगाये रौशनी का
झड़ती है शबनमें गम, झिम! झिम!! झिम!!!
डट कर खड़ा हूं खौफ से खाली जहान में
तसकीने दिल भरी है मेरे दिल में जान में

१ आनन्द की प्रात काल २ खुशी, आनन्द ३ ओस ४ मोह ५ नीचे दबाना, पाऑमाल रौंदना ६ फूल ७ पर्वां हवा अर्थात् वह हवा जो पूरब से चल रही हो ८ प्रकाश रूपी वायु, यहाँ मुराद सूरज से है ९ दिल में चैन, आराम

सूंघें जेमां मक्रां मेरे पाओं मिसले सग
मैं कैसे आसकूं हू केदे वियान में
ठंडक भरी है दिल में, आनन्द वह रहा है
अमृत बरस रहा है, झिम ! झिम !! झिम !!!

१० काल-देश ११ कुत्ते की तरह

---

१७ राग भैरवी ताल चलन्त

कहूं क्या रंग उस गुल का, अहाहाहा अहाहाहा
हूवा रंगीं चमन सारा, अहाहाहा अहाहाहा
नमक छिड़के है वह किस २, मजे से दिलके जख़मों पर
मजे लेता हू मैं क्या क्या, अहाहाहा अहाहाहा
खुदा जाने हलावत क्या थी, आबे तेगे कातल में
लबे हर जखम है गोया, अहाहाहा अहाहाहा

१ फूल (सुन्दर दोस्त, आत्मस्वरूप) २ रंगदार (नाना प्रकार का) ३ बाग़ ४ मिठास (मीठा जायका) सुस्वाद ५ क़ातल की तलवार की धार ६ हर ज़ख़म के समीप

शरांरो वर्क में क्या फर्क, मैं समझूं कि दोनों में
है इक शोर्ला भबोका सा, अहाहाहा अहाहाहा
चला गर्दान् हू सांकी का, कि जामे ईशक् से मुझको
दीया घूट उस ने इक ऐसा, अहाहाहा अहाहाहा
मेरी सूरतें परस्ती, हेकॅ परस्ती है, कहूं मैं क्या
कि इस सूरत में है क्या क्या, अहाहाहा अहाहाहा
जर्फेर .आलॅम कहूं? कहू मैं क्या, तबीयत की रवॅानी का
कि है उमडा हूवा दरया, अहाहाहा अहाहाहा

७ अगारा और बिजली ८ भड़की हुई लाट ९ एहसान मन्द १० शराब (प्रेम रस) पिलाने वाला, यहां आत्मवित् से मुराद है ११ .इशक (प्रेम) का पियाला १२ मूरती पूजा (बुत परस्ती) १३ ईश्वर पूजा १४ वर्वा का लकबंह १५ हाल (अवस्था) १६ रफतार (चाल)

---

१८ गजल ताल कुवाली

(१) जब उमडा दरया उलफत का, हर चार तरफ
आबादी है

हर रात नयी इक शादी है, हर रोज़ मुबारक
वादी है
खुश खंदाः है रंगी गुल का, खुश शादी शाद
मुरादी है
वन सूरज आप दरखंशां है, खुद जंगल है, खुद
वादी है
नित राहत है, नित फरहत है, नित रंग नये आ-
ज़ादी है १

(२) हर रग रेशे में हर मूं में अमृत भर भर भरपूर हुवा
सब कुलफत दूरी दूर हुई, मन शांदी मर्ग से चूर हुवा
हर बर्ग बधाइयां देता है, हर ज़र्रेह जर्रेह तूर हुवा

१ हंसा खिला हुवा २ प्रकाशमान ३ आबाद स्थान ४ सिर का बाल ५ बे आरामी, दुःख ६ आनन्द के अनन्त बढ़ने से जो मृत्यु होती है ७ पत्ता वृक्ष का ८ स्वस्ति ९ प्रमाणु १० अ-ग्नि का पर्वत

जो है सो है अपना मज़हर, ख्वाह आबी नारी बादी है
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी है आज़ादी है २

(३) रिम झिम, रिम झिम आंसू बरसें, यह अबरें बहारें देता है
क्या खूब मज़े की बारश में वह लुत्फ़ वसल का लेता है
कशती मौजों में डूबे है, बदमस्त उसे कब खेता है
यह गंगोत्री है जी उठना, मत झिजको, उफ बरबादी है
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी है आज़ादी है ३

११ जायेजहूर, जाहर होनेका स्थान १२ पानी से पैदा हुवा २ १३ अग्नि से उत्पन्न हुवा २ १४ हवा से उतपन्न हुवा २ १५ आराम १६ खुशी १७ बादल १८ चलाना १९ डूब जाना २० जिन्दा होना

(४) मातम रंजूरी बीमारी गलती कमजोरी नादारी
ठोकर ऊंचा नीचा, मिहनत जाती (है) उन पर
जॉ वारी
इन सब की मददों के बायस, चशमाः मस्ती का
है जारी
गुम शीरें[24], कि शीरीं तूफां में, कोह[25] और तेशा
फरहादी है
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी क्या आ-
जादी है ४

(५) इस मरने में क्या लज्जत है, जिस मुह को चाट
लगे इस की
थूके है शाहशाही पर, सब ने.ऽमत दौलत हो फीकी

२१ रोना पीटना २२ गम २३ गरीबी, जिस समय पास कुछ न हो. २४ मीठी नदी जो फरहाद अपनी माशूका (शीरीं) के इशक में पहाड़ पर से तोड़ कर मैदानों में लाया था २५ पर्वत २६ चटक, स्वाद, एज्जत.

मैं चाहो ! दिल सिर दे फूंको, और आग जलावो भट्टी की
क्या ससता बादा: बिकता है, "ले लो" का शोर मुनादी है
क्या ठंडक है, क्या राहत है, क्या शादी क्या आज़ादी है ८

इल्लते मालूल में मत डूबो, सब कारण कार्य्य तुम ही हो
तुम ही दफतर से खारज हो, और लेते चारज तुम ही हो
तुम ही मसरूफ बने बैठे, और होते हैरज तुम ही हो
तू दीवर है, तू बुकैला है, तू पापी तू फर्यादी है
नित फरहत है, नित राहत है, नित रंग नयी आज़ादी है ६

२७ शराब २८ आनन्द रूपी शराब २९ कारण ३० कार्य्य किसी काम में हरज करने वाले ३२ मुंसफ, जज ३३ वकील

(७) दिन रैंन[34] का झगडा न देखा, गो सूरज का चिट्टा सिर है
जब खुलती दीदाये रोशन[35] है, हंगामये ख्वाब[36] कहा फिर है
आनन्द सरूर[37] समुद्र है जिस का आगाज[38], न आखर है
सब राम पसारा दुन्या का, जादूगर की उस्तादी है
नित फरहत है, नित राहत है, नित रग नये आजादी है ७

३४ रात ३५ ज्ञान चक्षु ३६ स्वप्न की दुन्या, स्वप्न का झगडा फसाद ३७ आनन्द, खुशी ३८ आदि, शुरू

पङ्क्ति वार अर्थ

१ जब प्रेम का समुद्र बैहने लग पडा तो हर तरफ प्रेम की मस्ती नजर आने लग पडी अब सुन्दर पुष्प की तरह हसना और खिलना रहता है, नित दिन रात खुशी औ आनन्द है, आप ही,

सूरज बन कर चमक रहा है और आप ही जगल बस्ती बन रहा है, नित्य आनन्द शान्ति और नित्य सर्व प्रकार की खुशी आजादी हो रही है ॥ १

२ हर रग और नाडी में और रोम रोम मे अमृत भरा हुवा है, सब दु ख और घृण (नफरत) दूर हो गया और मन (अहंकार) मरने (मौत) की खुशी से चूर हो गया है, हर पत्ता व धाइया (स्वस्ति) दे रहा है, और प्रमाणु मात्र भी ज्ञानाग्नि से अग्नि के पर्वत की तरह प्रकाशमान हुवा। अब जो है सो सब अपने को ही बताने या जाहर करने का स्थान है ॥ ख्वाह वह पानी की शकल है ख्वाह अग्नि की और ख्वाह हवा की सूरत है (यह तमाम मुझ अपने को ही जाहर करने वाले हैं) ॥ २

३ आनन्द की वर्षा के आसू रिम झिम बरस रहे है, और यह आनन्द का बादल क्या अच्छी बहार दे रहा है, इस ज़ोर की वर्षा में वह (चित्त) क्या खूब अनुभव (वसल) का लुतफ ले रहा है, [शरीर रूपी] किश्ती तो आनन्दकी लहरों मे डूबने लग रही है मगर वह सधा [आनन्द में] बदमस्त उसे कब चलाता है? (शरीर का ख्याल नहीं करता) क्योंकि [शरीरका] यह डूबना असल में जी उठना है, इस वास्ते ऐ प्यारों! इस मौत

से मत झिझको [झिझकनेमें अपनी बरबादी है] इस में तो क्या ठंडक है क्या आराम है और क्या ही आनन्द और क्या ही आजादी है [कुछ वर्णन नहीं हो सक्ता] ॥३॥

४ मातम गम, बीमारी, गलती कमजोरी तंगी, नीची ऊंची ठोकर अरु पुरुषारथ, इन सब पर जान .कुर्बान् हो रही है और इन सब की मदद से इस मस्ती का समुद्र बेह रहा है शीरीनी के .इशक़ में फर्हाद का तेशा और पहाड़ अरु शीरीं गुम हो रहे हैं क्या शान्ति है, क्या आराम है, क्या आनन्द और क्याही आजादी हो रहे हैं ४

५. इस मरने में क्या ही उमदा लज्जत है, जिस मुहको इस लज्जत की चाट (स्वाद) लग गयी वह शाहशाही पर थूकता है और सर्व धन इकबात फीका हो जाता है ॥ अगर यह (आनन्द की) शराब चाहे, तो दिल और सिर को फूक कर (इस शराब के वास्ते) उसकी भट्टी जलावो । वाह! क्या सस्ती शराब (आनन्द की अपने सिर के .इवज) बिक रही है, और (कबीर की तरह) "ले लो" "ले लो" का शोर हो रहा है ॥ इस शराब से क्या शान्ति, आराम, आनन्द, और आजादी है ५

६. हेतु (कारण) और फल (कार्य्य) में मत डूबो, क्योंकि

सब कारण कार्य्य तुम ही हो, और जो दफ्तर से खारज होता है अथवा जो नौकर होता है वह सब तुम आप हो ॥ अगर कोइ किसी काम में मसरूफ है, तो तुम हो, और अगर कोइ हर्ज करने वाला है सो तुम हो ॥ तू ही मुनसफ है, तू ही वकील है और तू ही पापी औ फरयादी है ॥ नित्य चैन है नित्य शान्ती है और नित्य राग रंग और आज़ादी है ६

७. सूरज गो आप सफ़ेद है, मगर दिन रात का झगड़ा उस में नहीं, क्योंकि दिन रात तो पृथ्वि के घुमने पर मौकूफ हैं ऐसे जब आंख खुलती है तो स्वप्न फिर बाक़ी नहीं रहता, मगर खुद आप आनन्द और हर्षका बेहद (अनन्त) समुद्र है, यह जो दुन्या है सब राग का पसारा है और उस जादूगर की यह दस्तादी है ॥ स्वय तो नित्य चैन है, शान्ति है और नित्य राग रग • और नयी आज़ादी है ७

यमनोत्री

गजल तिताल

इस बलन्दी पर माया की दाल नहीं गलती ॥ ना दुन्या की दाल ही गलती है ॥ निहायत गर्म २ चश्मा सार, इदती काला आर, आबशारों की बहार, चमकदार चान्दी की शरमाने

चाले सफ़ेद दोपट्टे (झाग, फेन) और उन के नीचे आकाश की रंगत को लजाने वाला (शरमाने वाला) जमना रानी का गात बात बात में काशमीर को मात करते हैं ॥ आबशार तो तरंगे बेखुदी में नृत्य (नाच) कर रहे हैं ॥ जमना रानी साज बजा रही है ॥ राम शहंशाह गा रहा है :—

१९ ग़ज़ल ताल तीन.

हिप हिप हुर्रे[३] । हिप हिप हुर्रे ॥ टेक

(१) अब देवन के घर शादी है, लो ! राम का दर्शन पाया है

पां कोवां नाचते आते हैं, हिप हिप[३] हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(२) खुश खुर्रमे[४] मिल मिल गाते हैं, हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे

है मंगल साज़ बजाते हैं, हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे ॥

१ खुशी २ पाओं से नाचते आते हैं ३ अंग्रेजी भाषा में अति खुशी का बोधक यह शब्द है ४ आनन्द, मस्त हो कर

(३) सब ख्वाहश मतलब हासल है, सब खूबों से मैं वासलं हूँ
क्यों हम से भेद छुपाते है, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(४) हर इक का अन्तर आत्म हू, मै सब का आकाँ साहिब हू
मुझ पाये दु खड़े जाते है, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(५) सब आंखों में मै देखू हू, सब कानों में मै सुनता हू
दिल बरकत मुझ से पाते है, हिप पिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(६) गह इस्त्रों सीमीं बरं का हू, गह नारों शेर-बबर का हू
हम क्या क्या स्वाग बनाते है, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

५ सुन्दर लोग ६ मिला हुवा ७ मालक ८ कभी ९ नाज, नखरा १० चान्दी जैसी सूरत वाली प्यारी ११ गर्ज १२ बबर शेर (सिंह)

(७) मैं कृष्ण बना, मैं कंस बना, मैं राम बना, मैं रावण था
हां वेद अब क़समें खाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(८) मैं अन्तर्यामी साकनै हूं, हर पुतली नाच नचाता हूं
हम सूत्रतार हिलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(९) सब ऋषियों के आयीनों दिल में, मेरा नूर दरख़शां था
मुझ ही से शाइर लाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(१०) मैं खालिक़ मालक दाता हूं, चश्मक से दहरें बनाता हूं

१३ स्थिर १४ सूत्रधारी की तरह पुतली की तार हला ते हैं १५ अन्तःकरण रूपी शीशा १६ प्रकाश १७ चमकताथा १८ कवि (अर्थात् मेरे आत्म स्वरूप से यह सब कवितादि निकलती है) १९ सृष्टि के रचने वाला २० आंखकी झपक में २१ युग, समय

क्या नक़्शे रंग जमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(११) इक कुन[२२] से दुन्या पैदा कर, इस मन्दर में खुद रहता हूं

हम तनहा शैहर बसाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(१२) वह मिसरी हूं जिस के बायस दुन्या की इशरत शीरीं[२५] है

गुल मुझ से रंग सजाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(१३) मसजूद हूं किबला काबा हूं, मौजूद अंगा, नापैद सा हूं

२२ हुक्म २३ सबब, कारण २४ विषय आनन्द, विषय के पदारथ २५ मीठी २६ फूल २७ उपास्य, पूजा कीया गया २८ जिसकी तरफ़ मुंह करके ईश्वर पूजा [ध्यान] करें २९ पूर्णता, ३० काम ३१ इस्म

सब मुझ को कूक बुलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(१४) कुल आलम मेरा साया[32] है, हर आन बदलता आया है

जैल[33] कामत[34] गिर्द घुमाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(१५) यह जगत हमारी किरणें हैं, फैलीं हर सूं[35] मुझ मर्कज़[36] से

शां बूकलमूं दखलाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(१६) मैं हैस्ती[37] सब अशया[38] की हूं, मैं जान मलायक[39] कुल की हूं

मुझ विन वेवूद[40] कहाते हैं, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

३२ साया, प्रतिबिम्ब ३३ बिम्ब ३४ तरफ ३५ केन्दर ३६ नाना प्रकार के ३७ अस्ति, जान सब की ३८ वस्तु ३९ फरिश्तों की ४० न होना, असत

(१७) वेजानों मे हम सोते हैं हैवान[41] में चलते फिरते हैं
इन्सान में नींद जगाते हैं, हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे ॥

(१८) संसार तजँल्ली[42] है मेरी, सब अन्दर बाहर मैं ही मैं हूं
हम क्या [43] शोले भड़काते है, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

(१९) जादूगर हू, जादू हू खुद, और आप तमाँशा बी[44] मैं हू
हम जादू खेल रचाते है, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे॥

(२०) है मस्त पड़ा मैहमां में अपनी, कुन्छ भी गैर[45] अज राम नहीं
सब कल्पत धूम मचाते है, हिप हिप हुर्रे, हिप हिप हुर्रे ॥

४१ पशु ४२ तेज, चमक ४३ अग्नि की लाटें ४४ तमाशा देखने वाला ४५ राम के सिवाय

नोट—यह कविता राम महाराज से उस समय लिखी गयी जिन दिनों में वह बिलकुल अकेले टिहरी के नजदीक गोटी सिरायीं की एक गुहा (गुफा) बमरोगी में कुच्छ दिन बिलकुल निराहार रहे थे और मस्ती से बेहोश हुए बिलकुल दुन्या से बेखबर १, दो रात्री गंगा तट पर ही पड़े रहे और नारायण ने तब उन को पा कर जगाया.

२ राग गजल खुमाज ताल दादरा

(१) चलना सबा का ठुम ठुमक, लाता प्यामे यार है
टुक आंख कब लगने मिली, तीरे निगहे तय्यार है
(२) होशो खिरद से इत्तफाकन आंख गर दो चार हैं
बस यार की फिर छेड़ खानी का गर्म बाज़ार है
(३) मालूम होता है हमें, मतलब का हम से प्यार है
सखती से क्यों छीने है दिल, क्या यूं हमें इनकार है?
(४) लिखने की नैं पढ़ने की फुरसत, कामकी नैं

हम को नकम्मा कर दिया, वह आप तो बेकार है

(५) पैहरः महब्बत का जो आये, हमबग़ल होता है वह
गुस्सा तबीयत का नकालें स्वरू दिलदार है

(६) सोने पै हाज़र ख्वाब में, जागे पै साँको आब मे
हसने में हंम मिलता है, मिल रोता है ल्लू नार है

(७) गह बर्क़ वशँ खंदाँ बना, गह अब्रतर गिरयाँ बना
हर सूरतो हर रग में पैदा बुते .अय्यार है

(८) दौलत गनीमत जान दर्दे .इशक़ की मन खो उसे
माल्हो मता घर बार ज़ेर, सदके मुबारक नैर है

(९) मंजूर नालायक़ को होता है, .इलाजे दर्दे इशक़
जब इशक़ ही माशूक़ हो, क्या सिहत में बीमार है

६ पृथ्वि और जल ७ ज्यों बिजली की मानन्द ८ हमला हुआ ९ बादल की तरह तरबतर १० रोते हुवे ११ तसवीर जिस से यार का अन्दाजा लगाया जावे, अथवा अपने प्यारे का तराज़ू १२ माल अर असबाव १३ धन १४ मुबारक भाग .इशक़ की है

(१०) क्या इन्तज़ार-ओ-क्या मुसीबत, क्या बला क्या खारे दश्त[15]
शोला मुबारक जब भड़क उट्ठा, तो सब गुलनॅार[16] है

(११) दौलत नहीं ताक़त नहीं, तालीम नै, तर्केरीम नै
शाहे गनी[17] को तो फक़त, इर्फ़ाने हक़[18] दर्कार है

(१२) उमरों की उम्मीदें उड़ा, छोटी बड़ी सब ख्वाहशें
दीदार का लीजिये मज़ा, जब उड़ गयी दीवार है

(१३) मंसूर से पूछी किसी ने, कूचाये जॉनॉ[19] की राह
खुद साफ दिल में राह बतलाती ज़ुबाने दॉरे[20] है

(१४) इस जिस्म से जान कूद कर, गंगाये वहदत[21] में पड़ी
कर लें मदोछा जान्वर, लो वह पड़ा मुरदार है

(१५) तशरीफ लाता है जुनूं, चशमों सिरो दिल फर्शे राह

१५ जंगलके कांटे १६ अनार का फूल, यहां अग्नि के पुष्प से भी मुराद है १७ इज्जत वजुर्गी १८ अमीर सखीदिल बादशाह १९ आत्मा का ज्ञान २० ईश्वर के घर का रास्ता २१ सूली की नोक (जुबान) २२ एकता की गंगा (अर्थात समुद्र)

पैहलू में मत रखना खिरद, को रांड यह बदकार है

(१६) पल्ला छुटा इस जिस्म से, सिर से टली अपने बला
वैल्कम! ऐ तेगे ख़ूँचकां, क्या मौंत लज्जतदार है

(१७) यह जिस्मो जा नौकर को दे, ठेका सदा का भर दीया
तू जान तेरा काम रे, क्या हम को इस से कार है

(१८) खुश हो के करता काम है नौकर मेरा चाकर मेरा
हो राम बैठा बादशाह हुश्यार खिदमत गार है

(१९) सोता नहीं यह रात दिन, क्या उड़ गयी दीदों से नींद
गफलत नहीं दम भर इसे, यह हर घड़ी बेदार है

(२०) नौकर मेरा यह कौन है, आँका हूं इस का कौन राम?
खाविंद हूं मैं या बादशाह? यह क्या अजब असरार है

२३ खून चलाने वाली अर्थात खून करने वाली तलवार
२४ मौत २५ आंखें २६ जागा हुवा २७ मालक २८ नौकर
२९ भेद, गुप्त बात

(२१) वाहदे मुजर्रद लाशरीको ग़ैर सानी बे बदल
आक़ा कहां खादम कहां? यह क्या लग्व गुफ़तार है
(२२) तनहास्तम तनहास्तम दर [३४] बैहरो बर यकतास्तम
नुतक़ो .जुबां का राम तक आ पहुंचना दुश्वार है
(२३) ऐ बादशाहाने जहां! ऐ अंजमे हफ़्त आस्मान!
तुम सब पै हूं मैं हुक्मरान, सब से बड़ी सरकार है
(२४) जादू निगाहे यार हूं, नशा लैबे मै गू हूं मैं
आबे हयाते रुख हूं मैं, अबरू मेरी तल्वार है
(२५) यह कांकुले .जुलमाते माया, पेच पेचां है, [४१] वले
सीधे को जल्वाः-ए-राम है, उलटे को डसता मार है

३० बिल्कुल अकेला ३१ साथी रहित ३२ मसाल (अपने बराबर) रहित ३३ मैं अकेला हूं ३४ पृथ्वि समुद्र पर ३५ अकेला हूं ३६ बात, गुफ़्तगू, बोली (समझ) ३७ मुशकल ३८ ऐ सातों आकाशों के सतारो! ३९ आनन्द रूपी शराब की क़िसम वाले नशा का पीने वाला ४० (माया रूपी) काली घघोर .जुल्फें ४१ लेकिन ४२ राम का दर्शन ४३ सांप (सर्प)

१ प्रात काल की वायु का ठुमक २ चलना अपने यार (स्वरूप) का सदेसा ला रहा है । ज़रा सी आख भी लगने नहीं मिलती, क्योंकि जब जरा लग जाती है (सोने लगता हू) तो झट उस यार (स्वस्वरूप) की नगाह (प्रकाश) का तीर त्यार है (ताकि मैं सोने न पाऊं अर्थात उसे भूल न जाऊ)

२ अगर इत्तफाक से अक्ल और होश में आने लगता हू तो उसी समय यार छेड़खानी करने लग पड़ता है, ताकि म फिर बेहोश और आत्मानन्द म पागल हो जाऊ, अर्थात् मैं अब दुन्या का न रहू, सिर्फ यार (स्वस्वरूप) का हा हा जाऊ ॥ (इस छेड़खानी स)

३ ऐसा मालूम होता है कि यार का हम से मतलब का प्यार है (मतलब हमारा दिल लेने से है), भला सख्ती से क्यों दिल छीनता है, क्या वैसे हमको इनकार है (जब पेहिले से ही यार के हवाले दिल करने को त्यार बैठे हैं तो अब सख्ती स क्यों छीनना चाहता है ?)

४ दिल को यार क अर्पण करने से न लिखने की फुरसत रही, और न किसी काज की ॥ आप तो वह बेकार (अकर्ता) हो था अब हमको भी वैसा बेकार कर दीया है ॥

५ जब प्रेम का समय आता है तो वह झट हमबग़ल हो लेता है, ऐसी हालत में हम किसपर गुस्सा निकालें, क्योंकि रूबरू (साह्मने) पकड़ने वाला तो अपना यार है ॥

६ वह सोने में हाज़र है जाग्रत में भी साथ है, पृथ्वी जल पर वह मौजूद है, हंसते समय वह साथ मिलकर हसता है और रोते समय वह साथ रोता है (अभेद ऐसा है)

७ कभी बिजली की तरह चमकता है और हसता है, और कभी बादल बरस कर रोता है, मगर हमें तो हर सूरत और रंग में वही जाहर होता हुवा नजर आता है ॥

८ ऐ प्यारे पुरुष ! इश्क़ (प्रेम) के धनको ग़नीमत जान, इसको मत खो, बल्कि इस प्रेम की आग पर सारे घर बार, धन दौलत को वार दे ॥

९ इस प्रेम के दर्द का .इलाज करना तो अज्ञानी पुरुष को मंजूर होता है, क्योंकि जब प्रेम ही माशूक़ (अपना दोस्त) हो तो क्या ऐसी उमदा (अरोग्यता) में भी बीमार है ॥

१० इन्तजार मुसीबत, बला और जंगल का कांटा यह सब उसी वक्त जलकर फूल (आग का पुष्प) हो गये. जिस समय ज्ञानाग्नि अन्दर प्रज्वलित हुई ॥

११ दौलत, बल, विद्या और इज्जत तो नहीं चाहिए, इस बेपरवाह बादशाह को तो सिर्फ आत्मज्ञान (ब्रह्म विद्या) ही काफी है ॥

१२ कई बरसोंकी आशा (स्वरूप के अनुभवमें जो पर्दे अर्थात (दीवार) का काम कर रही है) इन सब छोटी बडीयोंको (आत्म ज्ञान से) जला दो और जब इस तरह से ख्वाहशों की दीवार उड जाव तो फिर यार (स्वस्वरूप) के दर्शन का मजा लो

१३ मंसूर एक मस्त ब्रह्मवेता का नाम है, जब वह सूली पर चढाया गया तो उस समय एक पुरुषने उस से (यार की गली) स्वस्वरूप के अनुभव करने का रास्ता पूछा ॥ मंसूर तो चुप रहा क्योंकि वह सूली पर उस समय था, मगर सूली की नोक अथवा सिर ने (जिस को जबाने दार कहते है) मंसूर के दिल म साफ घुसकर बतला दिया, कि यह रास्ता है अर्थात यार के अनुभव का (सिर्फ दिलके अन्दर घुसना ही) रास्ता है

१४ इस शरीर से शारीरक जान कूदकर तो अद्वैत की गंगा में पड गयी है अब इस बेजान शरीर (मुर्दे) को (कर्म रूपी) पक्षी आयें और महोत्सव कर लें (क्योंकि साधू के मरने के पश्चात पढारा होता है तो मस्त पुरुष अपने शरीर को ही सब के

अर्पण करना पंढारा समझता है इस वास्ते राम जब मस्त हुवे तो शरीर को बेजान देखकर पढारे के वास्ते पक्षीयों को बुलाते है.

१५. जब निजानन्द से पागलपन आने लगे तो उस समय पास दुन्या की अक्ल न रखना, बलकि अपने दिल और आंखो के द्वारा उसको आने देना चाहे.

१६. जब राम अजहद मस्त हुवे तो बोल उठे " इस शरीर से जब झगडा दूर हूवा, और (इस का सम्बन्ध छोडने से) इस की ज़ुम्मे वारी की सिर से बला टल गयी, अब तो राम खून पीने वाली तलवार (मुसीबत) को भी वैल्कम अर्थात स्वागत करते हैं क्योंकि उनको यह मौत बडी लज्जत दायक है.

१७ यह देह प्राण तो अपने नौकर (ईश्वर) के हवाले करके उस से नित्य का ठेका लेलीया है, अब यार (स्वस्वरूप) ! तू जान तेरा काम, हम को इस (शरीर) से क्या मतलब हैं

१८. नौकर बडा खुश हो के काम करता है, राम अब बादशाह हो बैठा है, क्योंकि खिदमतगार बड़ा हुश्यार है॥

१९. नौकर ऐसा अच्छा है कि रात दिन यह जरा भी सोता नहीं, मानो उसकी आंखों में नीन्द ही नहीं, और दम भर भी इस को सुस्ती नहीं, हर घड़ी सदा जागता है.

२०. ऐ राम! मेरा नौकर कौन है? और मालक कौन है? मैं क्या मालक हू या नौकर हू? यह क्या आश्चर्य भेद है (कुच्छ नहीं कहा जासकता है)

२१ मैं तो अकेला अद्वैत नित्य बेमिसाल हू, मालक कहा और नौकर कहा? यह क्या गलत बोल चाल है

२२ मैंही अकेला हू, मैंही एक हू, पृथ्वि जल पर मैंही अकेला हू, अक्ल (बुद्धि) और बानी की मुझ तक गम्यता (पहुचना) मुशकल है

२३ ऐ दुन्या के बादशाह! और ऐ सातों असमानों के सतारा! मैं तुम सब पै हुक्मरान् (हाकम) हू, मेरी हकुमत तुम सब से बडी है

२४ मैं अपने यार (स्वरूप) की जादूभरी निगाह (दृष्टि) हू, और मस्तीकी शराब का नशा मैं हू, और अमृत मैंहू, भर्वे (माया) मेरी तल्वार है

२५ यह मेरी माया की काली जुल्फें (अविद्या के पदार्थ) पेचदार तो हैं मगर जो मुझ को (मेरे असली स्वरूप से) सीधा आनकर देखता है उस को तो (असली) राम के दर्शन होते हैं, और जो उलट (पीछे को) होकर (मेरी माया रूपी

सियाह ज़ुल्फ़ों को) देखता है उसको ("राम" शब्द का उलट "मार") अविद्याका सांप काट डालता है

राग भैरवी ताल केहरवा.

(१) बिछड़ती दुलहन[1] चेतन से है जब, खड़े हैं रोम और गला रुके है
कि फिर न आने की है कोई ढेब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १ ॥
(२) यह दीनो दुन्या[4] तुम्हें मुबारक, हमारा दुलहा[5] हमें सलामत
पे[6] याद रखना, यह आखरी छब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ २ ॥
(३) है मौत दुन्या में बस गनीमत[7], खरीदो राहत[8] को मौत के भाओ

१ बियाही हुई लड़की २ घर ३ तरीका, रस्ता ४ धर्म और दौलत ५ वियाहा हुवा लड़का ६ मगर ७ उत्तम ८ आराम

न करना चूँ तक, यही है मंजहव, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ३ ॥

(४) जिसे हो समझे कि जाग्रत है, यह ख्वाबे गुफलत है मखत, ऐ जा !

क्लोरोफॉरम है सब मेताल्व, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ४ ॥

(५) ठग्गों को कपड़े उतार देदो, लुटा दो अस्वाबो मालो ज़र सब

खुशी से गर्दन पे तेग धर तब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ५ ॥

(६) जो आर्जू को हैं दिल में रखते, हैं बोसाँ दीवाना संग को देते

यह फूटी किस्मत को देख जब कब खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ६ ॥

९ धर्म १० दवाई जिसके सूंघने से पुरुष बेहोश हो जाता है ११ मुरादें मतलब १२ तल्वार १३ चूमना १४ कुना

(७) कहा जो उसने उड़ा दो टुकड़े, जिगर के टुकड़ों के प्यारे अरुजन !
यह सुन के नादां के खुश्क हैं लब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ७ ॥

(८) लहू का दरया जो चीरते हैं, हैं तखत पाते वोही हक़ीक़ी
त.ऽल्लुक़ों को जला भी दो सब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ८ ॥

(९) है रात काली घटा भियानक, गज़ब दरिन्दे हैं, वाये जंगल
अकेला रोता है तिफ़्ल या रब, ! खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ ९ ॥

(१०) गुलों के बिस्तर पे ख्वाब ऐसा, कि दिल में [20] दीदों में खार[21] भर दे

१५ यहां कृष्ण से मुराद है १६ सबन्धियोंको १७ पद्म १८ बच्चा १९ फूलों के २० आंखो में २१ कांटे

है सीनां: क्यों हाथ से गया दव, खड़े हैं रोम
और गला रुके है ॥ १० ॥

(११) न बाक़ी छोड़ेंगे इल्म कोई, थे इस इरादे से
जम के बैठे

है पिछला लिखा पढ़ा भी गायँव, खड़े हैं रोम
और गला रुके है ॥ ११ ॥

(१२) है बैठा पट्ठों में कच्चा पारा, रही न हिलने की
तानो ताक़त

न असर करता है नैशे अकरब, खड़े हैं रोम
और गला रुके है ॥ १२ ॥

(१३) पीये नगाहों के जाम रज कर, न सिर की सुद्ध
बुद्ध रही न तन की

न दिन ही सूझे है, नै तो अब शब, खड़े हैं रोम
और गला रुके है ॥ १३ ॥

२२ छाती २३ भूला हुवा २४ हिम्मत और बल २५ बिच्छू
का डंक २६ प्याले २७ रात

(१४) हवासे खमँसा: के बन्द थे दरें, किधर से कावज हुवा है आकर
बला का नश्शा, सितम, त.ऽज्जब, खडे हैं रोम और गला रुके है ॥ १४ ॥

(१५) यह कैसी आंधी है जोशे मस्ती की, कैसा तूफां सरूर का है!
रही ज़मीं मेह न मेहरो कौकब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १५ ॥

(१६) थीं मन के मन्दर में रक्सैं करती, तरह तरह की सी ख्वाहिशें मिल
चरागे खाँना से जल गया सब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १६ ॥

(१७) है चौड चौपट यह खेल दुन्या, लपेट गंगा में इस को फैंका

२८ पांचो कर्म इन्द्रियोंके २९ दरवाजे ३० बडे गजबका आश्चर्य ३१ चांद ३२ सूरज और तारे ३३ नाच करना ३४ स्वयं घर का दीपक

मरा है फीलॉ उड़ा है अशाँहैव, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १७ ॥

(१८) पड़ा है छाती पे घर के छाती, कहां की दुँई कहां की वहँदत
है किस को ताकत बियान की अब, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १८ ॥

(१९) यह जिस्मे फर्जी की मौत का अब, मजा समेटे मे नहीं समिटना
उठाना दुभँर है वैहमे कालँवं, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ १९ ॥

(२०) कलेजे ठंडक है, जी में राहँत, भरा है शाँदी से सीनाये राँम
हैं नैनँ अमृत से पुर त्था त्न, खड़े हैं रोम और गला रुके है ॥ २० ॥

३५ हाथी ३६ घोड़ा ३७ द्वैत ३८ एकता ३९ मुश्किल ४० वैहम का शरीर ४१ चैन ४२ खुशी ४३ राम का दिल ४४ पक्षु

१. जब लड़की पति के साथ बियाही जाकर अपने माता पिता के घर से अलग होने लगती है,-तो लड़की और माता पिता के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और अश्चर्य हुए गला रुके जाता है। लड़की के घर वापस फिर आने की कोई ढब (तरीका) मालूम नहीं होती, इसवास्ते सर्वदा की जुदाई होते देख कर माता पिता और लड़की के रोंगटे खड़े हो जाते हैं और गला रुक जाता है ॥ १ ॥

२. (लड़की फिर मन में यह कहने लगती है) कि हे माता पिताजी ! यह घर और आप की दुन्या आपको मुबारक हो और हमारा पति हमको कल्याणदायक हो, मगर यह (जुदा होते समय की) आखरी छब (अवस्था) ज़रूर याद रखनी, " कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं और गला रुक रहा है " ॥ ऐसे ही जब पुरुष की वृत्ति रूपी लड़की (अपने) पति (स्वस्वरूप) के साथ बियाही जाती है अर्थात आत्मा से तदाकार होती है तो उस के मात पिता (अहंकार और बुद्धि) के रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और गला मारे बेबसी के रुकता जाता है और उस वृत्ति को अब वापस आते न देखकर सर्व इन्द्रियों में रोमांच हो जाता है, उस समय वृत्ति भी अपने मात-पितायों से यह कहती मालूम

देती है, कि ऐ अहकार रूपी पिता! और बुद्धि रूपी माता! यह दुन्या अब तुम्हें मुबारक हो और हमको हमारा दुल्हा (स्वस्वरूप) आनन्दायक सलामत हो ॥ २ ॥

३ (अहंकार की) यह मौत दुन्या में अति उत्तम है, और इस मौत को दुन्या के सब आरामों के भाओ खरीदलो, इस में चू चरान् न करना ही धर्म है ॥ या इस (मौत) को खरीदते समय रोंगट खड़े हो जाते हैं और गला रुक जाता है ॥ ३ ॥

४ ऐ प्यारे! जिसे आप जाग्रत समझ रहे हो वह तो घोर स्वप्न है क्योंकि सब विषय के पदार्थ तो क्लोरोफारम दवाई की तरह को देखने अथवा सूघने से सब रोम खड़े हो जाते हैं, और गला रुक जाता है ॥ ४ ॥

५ दग्गा को कपड़े उतार कर देदो और माल असबाब सब लुटा दो, और (अहकार की) गर्दन पर खुशी से तलवार रखदो, ताकि तब रोम खड़े हों और गला रुक जावे (मगर जब तक आनन्द से अपने आप अहंकार को नहीं मारोगे तब तक किसी प्रकार का भला आप का नहीं होगा ॥ ५ ॥

६ जो इच्छा मात्र को दिल में रखते हैं वह पागल कुत्ते को चुम्मा (बोसा) देते हैं, ऐसी पूरी प्रारब्ध को देख कर

रोमांच हो जाते हैं और गला रुक जाता है. ॥ ६ ॥

७. जब उस (कृष्ण) ने अरुजन को कहा, कि सर्व सबन्धीयों को टुकडे २ कर दो, यह सुन कर उस अज्ञानी (अर्जुन) के ग्ग्शक होंटहो जाते हैं, और रोमांच होते हैं, अरु गला रुकता हैं ॥ ७ ॥

८. (फिर कृष्ण कहता है कि ऐ प्यारे !) जो पुरुष लहू का दरया (अर्थात सबन्धीयों को) चीरते हैं (मारते हैं) वोही (स्वराज्य) असली तखत पाते हैं इस वास्ते ऐ प्यार ! सर्व दुन्यावी संबन्धीयों को जला भी दो, पर यह सुन के रोमांच होते हैं, और अरुजन का गला रुकता जाता है ॥ ८ ॥

९, १० (ऐसा स्वप्न आ रहा है) रात काली है, घट्गोर घटा आ रही है, खूंखार पशू (शेर इत्यादि) बडे भारी जंगल में हे, उस बन में लड्का अकेला रोता है और रोमांच हो रहे हैं, गला रुक रहा है, मगर फूलों के बिस्तर पर ऐसा भ्यानक ख्वाब आ रहा है कि दिलमें और आंखो में काँटे भर दे, लेकिन ऐ प्यारे ! हाथ से छाती क्यों दब गयी ? जिस कारण ऐसा भयबीत स्वप्न आ रहा है और रोमांच होते जाते हैं अरु गला रुके जाता है ॥ ९, १० ॥

११. इस इरादे से (गंगा किनारे) जम कर बैठे थे कि अब

बाकी कोई द्वार नहीं छोड़ेंगे, मगर पिछला लिखा पढ़ा भी गुम हो गया है और रोंगटे खड़े हो रहे हैं, और गला रुक रहा है ॥ ११ ॥

१२. यहाँ मे ऐसा कच्चा पारा बैठ गया है (मस्ती का इतना जोश चढ़ गया) कि हिलने कि भी ताकत नहीं रही, और न ही अब बिच्छूका डंक असर कुच्छ करता है बलकि ऐसी हालत हो रही है " कि रोंगटे खड़े हो रहे हैं, और गला रुक रहा है " ॥१२॥

१३. यार की निगाह रूपी अनुभव के प्याले ऐसे रसकर पिये हैं, कि अपने सिर और तन की भी सुद्धि बुद्धि नहीं रही और अब न तो दिन सूझता है और न रात ही नजर आये है, बल्कि रोमाञ्च खड़े हो रहे हैं, और गला रुका रहता है ॥१३॥

१४ पांचों कर्म इन्द्रियों के दरवाजे तो बन्ध थे, मगर मालूम नहीं कि किस तरफ से यह मस्ती का जोश) अन्दर आकर बावला हो गया है जो बला का नशा है और सितम ढा रहा है, जिस से रोमाञ्च खड़े हो रहे हैं, और गला रुके जा रहा है ॥१४॥

१५. यह ज्ञान की मस्ती की कैसी घटा आ रही है और निजानन्द का जोश कैसे चढ़ रहा है कि पृथ्वी, चांद, सूरज तारे की भी सुद्धि बुद्धि नहीं रही अर्थात द्वैत बिल्कुल आसमान न

रही, वलकि रोंगटे खडे हैं, और गला रुका हुवा है ॥ १५ ॥

१६. मन रूपी मन्दर में जो नाना प्रकार की स्वाइशें (इच्छा) नाच रही थीं वह घर के दीपकसे (आत्मानुभवसे) सब जल गयीं, अर्थात अपने अन्दर ज्ञान अग्नि ऐसे प्रज्वलित हुई कि सब तरह के सङ्कल्प जल गये और रोंगटे खड़े हो गये और गला रुक गया ॥ १६ ॥

१७ यह दुन्या शत्रञ्ज के खेल की तरह है. इस तमाम को लपेट कर अब गगामें फेंक दीया, वह फीला मरा अरु वह घोडा मरा यह देख कर रोम खडे हैं अरु गला रुके हैं ॥ १७ ॥

१८ छाती पर धर कर छाती यार के पडा हूं अब कहां की द्वैत अरु कहा की एकता ! जिस को बताने की अब ताकत है, सिर्फ खड़े हैं रोम अरु गला रुके है ॥ १८ ॥

१९. (यह जो आनन्द आ रहा है यह क्या है?) यह आ-समान (वैहमी) शरीर की मौत का मज़ा है जो समेटे से भी नहीं सिमिटता है, अब तो (इस आनन्द के भडकने से) यह पचभौतक शरीर उठाना भी मुशकल हो गया है, क्योंकि आनन्द के मारे खडे हैं रोम अरु गला रुके है ॥ १९ ॥

२० कलेजे (हृदय) में शान्ति है अर दिल में अब चैन है,

खुशी से राम का अन्दर भरा हुवा है, और नैन (आनन्द के) अमृतमें लबा लब भरे हुए हैं अर्थात आनन्द के मारे आंसू टपक रहे हैं, और रोम खड़े हैं अरु गला रुक रहा है ॥ २० ॥

राम का एक प्यारे के नाम खत.

२२ राग भैरवी ताल पशतो.

सरोदो रक्सो शादी दम बदम है, तफक्कुर दूर है और ग़म को रम है

ग़ज़ब खुशी है, बेरूँ अज़ रक़म है, यक़ीक़न जान, तेरी ही क़सम है

मुबारक हो तबीयत का यह खिलना, यह रस भीनी अवस्था जामे जम है

मुबारक दे रहा है चांद झुक कर, सलामों से कमर में उस की खम है

१ गाना बजाना और नाच २ खुशी, आनन्द ३ फिकर ४ भागना (भागा हुवा) ५ लिखे से बाहर ६ जमशेद बादशाह का प्याला, अर्थात आत्मानन्द रूपी मस्ती का प्याला ७ नमस्कारों से ८ कुबड़ा पन, झुकाओ

पीये जाओ दमा दम जाम भर कर, तुम्हारा आज लाखों
पर क़लम है

गुंलों से पुर हुवा है दामने शौक़, फ़लक खेमा है, कैवाँन
पर अलम है

तेरे [16]दीदों पै भूले से हो शबनम, कभी देखा सुना
"सूरज पै नम है"?

रखें आगे को क्या क्या हम न उम्मेद, कि मारा गुर्गे
ग़म, पैहिला क़दम है

दिखाया प्रकृति ने नाच पूरा, [18]खिटे में उड़ गयी, ऐ
है सितम है

ग़लतं गुफ़तम, शकायत की नहीं जाँ, मिली आ पुरुष
गे, अद्लो करम है

९ आत्मानन्द के प्याले १० पुष्पों से ११ शौक का पल्ला अर्थात गूढ जज्ञासा १२ आकाश १३ तम्बू मंडप १३ शनिश्चर तारे का नाम १५ झण्डा १६ आखों से १७ ग़म चिन्ता का भेड़िया १८ बदले में इच्छा में १९ जुल्म है, अजब है २० मैं ने ग़लत बोला २१ जगह २२ अन्साफ और बखशश अर्थात

नः कहता था तुम्हे क्या राँम पैहिले ? सनाहे [२३]ईद आई ! रात कम है

(प्रकृति अपने पुरुष में आ मिली है और यही उसके वास्ते करना उचित और ठीक है) २३ कवि का नाम ४ आनन्द की प्रात काल

---

२३ गजल क्वाली

(गर यूं हुआ तो क्या हुवा और यूं हुवा तो क्या हुवा) टेक
था एक दिन वह धूम का, निकले था जब अस्वार हो
हर दम पुकारे था नेकीब, आगे बढ़ो पीछे हटो
या एक दिन देखा उसे, तन्हा पड़ा फिरता है वह
बस क्या खुशी क्या न खुशी, यकसा है सब ऐ दोस्तो!
गर यू० १

या नेमतें खाता रहा, दौलत के दस्तर खान पर
मेवे मिठाई या मजे हलवा ओ तुर्शी और शकर

• १ चोबदार, चोबदार २ अकेला ३ अच्छे अच्छे पदार्थ ४ खट्टा मीठी

या बान्ध झोली भीख की टुकड़ोंके ऊपर धर नज़र
हो कर गदा फिरने लगा कूचा बकूचा दर बदर॥ गर यूं २
या .ईशरतों के ठाठ थे, या .ऐश के असबाब थे
साकी सुराही गुलबदन, जामो शराबे नाब थे
या बेकसी के दर्द मे बेहाल थे बेताब थे
आखिर जो देखा दोस्तो! सब कुच्छ खियालो खाब थे॥
गर यूं० ३

जो .ईशरते आकर मिली तो वह भी कर जाना मीयां
जो दर्दो दुःख आकर पड़े, तो वह भी भरजाना मीयां
ख्वाह दुःखमें ख्वाह सुखमें गर्ज़ यां से गुज़र जाना मीयां
है चार दिन की जिन्दगी, आखरको मरजाना मीयां॥
गर यूं० ४

५ फकीर ६ गली दर गली ७ विषयानन्द अर्थात .ऐश के असबाब ८ शराब पिलाने वाला ९ शराब रखने का बर्तन १० सुन्दर स्त्रियें ११ प्याला १२ अंगूरी शराब १३ विषय भोग १४ सैहजाना १५ यहां

२४ गजल भैरवी ताल पशतो

कैसें रग लागे खूब भाग जागे, हरी गयी सब भूक और नगं मेरी
चूडे साच स्वेरूप के चढे हम को, टूट पडी जब काच की वंगें मेरी
तारों सग आकाश में चमकती है, विन डोर अब उडी पैतग मेरी
झडी नूर की बरसने लगी जोरो, चद सूर में एक तरग मेरी

१ उड गया, दूर हो गयी २ शरम ३ सत्यस्वरूप ४ पहनने का कडा, इस जगह मुराद अहकार से है ५ साथ ६ यहा वृत्ति से मुराद है ७ प्रकाश की वर्षा ८ जोर से

---

२५ गजल क्वाली (दादरा)

पा लीया जो था कि पाना, काम क्या बाकी रहा
• जानना था सोई जाना, काम क्या बाक़ी रहा (टेक)
आ गया आना जहां, पहुचा यहा जाना जहां

अब नहीं आना न जाना, काम क्या बाक़ी रहा
बन गया बनना बनाने बिन[1], बना जो बन बना
अब नहीं बानी-ओ-बानाँ[2], काम क्या बाक़ी रहा
जानते आये हैं जिसे जान, झगडा तै[4] हुवा
उठ गया बकना बकाना, काम क्या बाक़ी रहा
लाख चौरासी के चक्कर से थका, खोली कमर
अब रहा आराम पाना, काम क्या बाक़ी रहा
स्वप्न के मानन्द यह सब अनहुवा[5] ही हो रहा
फिर कहां करना कराना, काम क्या बाक़ी रहा
डाल दो हथ्यार, मेरी रायँ[6] पुख़ता अब हुई
लग गया पूरा नशाना, काम क्या बाक़ी रहा
होने दो जो हो रहा है, कुच्छ किसी से मत कहो
सन्त हो किसि को सताना, काम क्या बाक़ी रहा

१ बिग़ैर २ बनाने वाला ३ बनाने की वस्तु, ताना ४ ख़तम, फ़ैसल ५ बिग़ैर हुवे ही हो रहा है ६ दलील, निश्चय पक्की

आत्मा के ज्ञान से हुवा कृतार्थ जनम है
अब नहीं कुन्छ और पाना, काम क्या बाक़ी रहा
देह के प्रारब्ध मे मिलता है सब को सर्व कुन्छ
फिर जगत को क्यों रिझाना, काम क्या बाक़ी रहा
घोर निद्रा से जगाया मस्त गुरू ने वाह वा
अब नहीं जगना जगाना, काम क्या बाक़ी रहा
मान कर मन में मीया मौलों का मेला है यह सब
फिर बन् अब क्या मौलोना, काम क्या बाक़ी रहा
जान कर तौहीद का मनशों, शुभाः सब मिट गया
यू ही गाल्मों का रजाना, काम क्या बाक़ी रहा
एक में कसरत-व कसरत में भी एक ही एक है
अब नहीं डरना डराना, काम क्या बाक़ी रहा
अकल से भी दूर है, कहने-व-सुनने मे परे

७ उत्तम, मनुष्य ८ खुशामद करना, चापलूसी करना
९ गहरी, घूक नींद १० ईश्वर ११ मौल्वी, पंडित १२ अद्वैत, यहदत १३ मतलब, मन्तव्य १४ बहुत, अनेक

हो चुका कहना कहाना, काम क्या बाक़ी रहा
रमेंज़ है तौहीद, यहां .हुंकमा की हिकमत तंग है
हो गया दिल भी दिवानां, काम क्या बाक़ी रहा
रह गये .उलमा-व-फुंज़ला .इल्म की तहक़ीक़ में
भ्रम है पढ़ना पढ़ाना, काम क्या बाक़ी रहा
द्वैत और अद्वैत के झगड़े में लड़ना है फ़ज़ूल
अब न दान्तों को घमाना, काम क्या बाक़ी रहा
जान कर दुनिया को पूरे तौर से ख़्वाब-ओ-ख़्याल
अब नहीं तपना तपाना, काम क्या बाक़ी रहा
कुच्छ नहीं मतलब किसी से, सो रहा टांगें पिसार
अब कहीं काहे को जाना, काम क्या बाक़ी रहा
हो गयी दे दे के डङ्का, सारी शङ्का भी फ़ना:
अब मिला निर्भय ठिकाना, काम क्या बाक़ी रहा

१५ इशारा १६ अक्लमद १७ .अक्ल १८ पागल
९ आलिम और फाज़ल २० दर्याफ्त, ढूंड २१ स्वमवत
:२ तुबाह २३ भयरहित-और (सताब कवि का भी है)

२६ गजल ताल दादरा

नी मैं पाया महरम यार } टेक
जिस दे हुस्न दी अजब बहार }
जिस दा जोगी ध्यान लगावन
पीर पैगम्बर निशि दिन ध्यावन
पंडित आलिम अन्त न पावन
तिस दा कुल अजहार ॥ नी मैं० १
"मैं" "तूं" दा जद भेद मिटाया
कुफर इस्लाम दा नाम भुलाया
ऐन गैन दा फर्क गवाया
खुल्या सब असरार ॥ नी मैं० २
वहदत कसरत विच समाई
कसरत वहदत हो के भाई

१ अपना प्यारा, स्वस्वरूप २ सौंदरयता ३ हर रोज ४ आत्मज्ञानी ५ दृश्य, नाम रूप ६ नास्तक पन ७ अद्वैत और द्वैत से यहां मुराद है ८ भेद, रमूज ९ एकता

जुज़ं विच कुले दी सूझी पाई
विसेरं गया संसार ॥ नी मैं० ३
कहन सुनन ते न्यारा जोई
लांमकान कहे सब कोई
"है" "नाहीं" दा झगड़ा होई
तिस दा गर्म बाज़ार ॥ नीमैं० ४
सांक़ी ने भर जाम पिलाया
वे खुद हो के जशन मनाया
ग़ैरीयत दा नाम गंवाया
हूई जय जैय कार ॥ नी मैं० ५

१० नाना, बहुत ११ व्यष्टि १२ समष्टि १३ भूल गया १४ भिन्न, अलग, परे १४ स्थान रहित, अर्थात देश से परे १५ निजानन्द रूपी शराब पिलाने वाला, यहां गुरु से मुराद है १६ प्रेम प्याला अथवा आत्मानन्द का प्याला १७ खुशी मनाना १८ भेदता, भेद दृष्टि १९ आनन्द का हुलास.

२७ गजल कव्वाली

(१) घटा कर आप पहले में हमें आंखें दिखाता है
सुना बैठेंगे हम सच्ची फकीरों को सताता है:

(२) अरे दुन्या के बाशन्दो! डरो मत बीमे को छोड़ो
यह शीरीं[३] रू तो मिसरी है, भवें नाहक़ चढ़ाता है

(३) यह मल्बूंट डालना चेहरे पे गंगा जी से सीखा है
है अन्दर से महा शीतल, यह ऊपर से डराता है

(४) बनावट की जबीं पुर चीन है उलफत से मुर्लबर दिल
बनावट चालबाजी से यह क्यों भरें में लाता है

(५) अगर है ज़र्रः ज़र्रह में बल्कि लाखवें जुज में
तो जुज्व-ओ-कुल्ल भी सब यह है, दिगर झट उड़
ही जाता है

१ अपने पास २ डर, खौफ ३ मीठे मुह वाला, मीठे ओष्ठ वाला ४ बेफायदा ५ माथे पर बल, त्यूरी ६ बलवाली पेशानी से भरा हुआ माथा ७ प्रेम ८ लबालब भरा हुआ ९ प्रमाणु, मात्र १० व्यष्टि और समष्टि ११ दूसरा

(६) नगाहे गौर रख क़ायम ज़रा बुर्क़ा[11] को ताके जा
यह बुरक़ा साफ उड़ता है, वह प्यारा नज़र आता है

(७) तलातुम[13] खेज़ बेहरे हुसैनो[12] खूबी है अहाहाहा
हवास-ओ-होशकी किशती को दम भर में बहाता है

(८) हसीनों[14] ! हुसन-ओ-खूबी है मिरी ज़ुलफे सियाह[15] का ज़ैल[16]
अबस[17] साया परस्तों का पड़ा दिल तलमलाता है

(९) अरे शोहरत[18]! अरे रुसवाई[19]! अरे तोहमत! अरे अज़मत[20]!
मरो लड़ लड़ के तुम अब राम तो पल्ला छुड़ाता है

११ पर्दा १२ लेहरें मारने वाला १३ सौन्दर्यता का समुद्र १४ सुन्दर पुरुष १५ काली ज़ुल्फ १६ साया, प्रतिबिम्ब १७ बे फायदः है १८ बदनामी १९ बज़ुर्गी, बड़ाई २० उन से अलग होना

पंक्तिवारार्थः—

१. राम का शरीर जब ज़रा नासाज था तो उस वक्त अपने (यार) स्वरूप से यूं मुखातब हुवाः—ऐ प्यारे (दुलारे)

अपने समीप बठलाकर हमें आखें दखलाता है, हम सची कह बैठेंगें, क्या फकीरों को सताता है ?

२ ऐ दुन्या के लोगो! मत डरो, खौफ (भय) को छोड दो, क्योंकि यह मीठी सूरत वाला मिसरी रूप असल मे ह मगर भवें वे फायद चढालीया करता है (अर्थात उपर २ से कोप में आजाता है और वह भी वेफायदा)

३ चहरे पर वल डालना (त्योरी चढाना) गगाजी से सीखा है (क्योंकि वैहते समय गगाके जल पर भवर पडने है मगर अन्दर से जल बिलकुल ठडा होता है ऐसेही यह यार प्यारा) अन्दर से महा शीतल है और उपर से डराता है (गगा की तरह

४ यार की वलों से भरी पेशानी सिर्फ बनावटी है, क्योंकि दिल उस का प्रेम से लबालब भरा हुवा है, मगर मालूम नहीं कि यह बनावटी चालबाजी मे लोगों को भंरें में क्यों ले आता है

५ अगर वह प्रमाणु मात्र में है और उस के लाखवे हिस्से में है, तो व्यष्टि और समष्टि भी वोही सब है, उस के स्वाये अन्य कुछ रह ही नहीं सकता

६ गौर की नजर बराबर रख कर (इस माया के) पर्दे को

देखते जा, यह पर्दा साफ़ उठ जाता है जब प्यारा (यार) नजर आने लगता है

७. अहाहाहा ख़ूबसूरती (सौन्दर्यता) का समुद्र क्या लहरें मार रहा है जो होश और हवास की नौका को दम भर में बहा ले जाता है

८. ऐ ख़ूबसूरतों! (सुन्दर पुरुषो!) (यह याद रखो) तुम्हारी ख़ूबसूरती जो है वह मेरी काली .ज़ुल्फ़ (माया) ही का सिर्फ़ साया है परछायीं (साया) को पूजने वालों का (साया पर आशक़ होने वालों का) दिल बेफ़ायदा- तलमलाता (टम-टमाता) है

९. ओ शोहरत! ओ ख़ुवारी (ज़िल्लत)! ओ तोहमत (.ऐब की चुग़ली)! ओ बड़ाई! तुम सब अब लड़ २ के मर जावो, राम तो तुम सब से साफ़ पल्ला छुड़ाता है (तुम से कना-राकश-अलग-होता है)

---

(२८) ग़ज़ल कैहरवा

(१) वाह वाह कामां[१] रे नौकर मेरा, सुगर सियाना[२] रे

१ काम करने वाला २ बड़ा .अक़्लमन्द

नौकर मेरा (टेक)

(२) खिदमत करदयां कदे न डरदा, रोज़े अज़ल तों सेवा करदा
लूं लूं दे विच रेहंदा वसदा, हर दी समाना रे नोकर मेरा ॥ वाह वाह० १

(३) जद मौला मौला पर्न छडदा, नौकर नखरे टसरे फड़दा
फिर भी टेहल ओह पूरी करदा, हर नाच नचानारे नौकर मेरा ॥ वाह वाह० २

(४) बादशाही छड अंदल मल्ली, पर यह शाह कोलों कद चाल्ली
नौकर नूं उठ चौरी झेली, हाय वीयों राना गनारे नौकर

३ अनादि काल से ४ रोम रोम में ५ नौकर ६ हर वस्तु में समाने वाला, सर्वव्यापक ७ ईश्वर ८ गुसाईं, ऐश्वर्य ९ सेवा १० हर नाच नाचने वाला और नचाने वाला ११ चरदाग १२ चवर करा १३ भोला भाला, भेद

मेरा ॥ वाह वाह० ३

(५) वे समझी दा झगडा पाया, नौकर तों इतबाँर उठाया विच दलीलां वक्त गंवाया, विंन्हे ग़ज़ब निशाना रे नौकर मेरा ॥ वाह वाह ४

(६) लाया अपने घर विच डेरा, राम अकेला सूरज जेड़ा नूर जलाँल है नौकर मेरा, दिगँर न जाना रे नौकर मेरा

सुघड़ सियाना रे नौकर मेरा, वाह वाह कामां रे नौकर मेरा ॥ ८ ॥

१४ निश्चय, यकीन १५ छेदें, वेधे १६ तेज प्रकाश १७ अन्य, दूसरा

यह कविता पजाबी भाषा में है इस मे राम महाराज ईश्वर को नौकर का खताब देकर पुरुष को उपदेश कर रहे है

१ वाहवाह काम करने वाले नौकर मेरे, शाबाश ! वाह रे • दाना नौकर मेरे शाबाश !

नहीं रखता वह बेवकूफी से उलट अपने घर में झगड़ा डाल देता है और मुफ्त में तरह तरह की दलीलों में समय खो देता है, अरे प्यारे ! मेरा नौकर तो हर काम में गज़ब का निशाना लगाता है.

६ राम बादशाह ने जो अकेला सूरज है जब अपने असली (स्वस्वरूप) घर में स्थिती की तो अपना स्वयं प्रकाश ही नौकर पाया, अन्य कोई नौकर नजर न आया.

यह मेरा नौकर क्या दाना है वाह वाह काम करने वाले ऐ नौकर मेरे !

---

(२१) रागनी जै जै वन्ती ताल चाचर

उड़ा रहा हूं मैं रंग भर भर, तरह २ की यह सारी दुन्या
से[1] खूब होली मचा रखी थी, पै अब तो हो [2]ली यह सारी दुन्या
मैं सांस लेता हूं रंग खुलते हैं, चाहूं दम में अभी उड़ा दूं
अजब तमाशा है रंग रलियां, है खेल जादू यह सारी दुन्या
पड़ा हूं मस्ती में ग़र्क़ बेखुद, न ग़ैर[3] आया चला न ठैहरा

१ क्या २ हो गयी, खतम हो गयी ३ दूसरा, अन्य

नशे में खर्राटा सा लीया था, जो शोर वर्पा है सारी दुन्या
भरी है खूबी हर एक खरावी में, ज़र्रह ज़र्रह है मिर्हर आसा
लड़ाई शिकवे में भी मज़े हैं, यह ख्वाब चोखा है सारी दुन्या
लफाफा देखा जो लम्बा चौरा, हुवा तहय्युर, कि क्या ही होगा
जो फाड़ देखा, ओहो! कहूं क्या? हुई ही कब थी यह सारी दुन्या
यह राम सुनियेगा क्या कहानी, शुरू न इस का, खतम न हो यह
जो सच पूछो! है राम ही राम॥ यह महज़ धोखा है सारी दुन्या

४ सूरज ज़ंगा ५ अजीब, अश्चर्य ६ हैरानी ७ राम धरि के नाम से मुराद है ८ सिर्फ

(३०) होरी राग कालङ्गड़ा ताल दीपचंदी

रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई। अचरज लखियो न जाई
असत सत कर दिखलाई ॥ रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने
मचाई (टेक)

एक समय श्रीकृष्ण के मन में, होरी खेलिन की आई
एक से होरी मचे नहीं कबहुं, यातें करूं बहुताई
यही प्रभु ने ठैहराई॥ रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥१॥

पांच भूत की धातु मिला कर, अंड पचकारी बनाई
चौदः भुवन रंग भीतर भरकर, नाना रूप धराई
प्रकट भये कृष्ण कन्हाई। रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई २

पांच विषय की गुलाल बनाकर, वीच ब्रह्मांड उडाई
जिस जिस नैन गुलाल पडी, उसकी सुध बुध विसराई
नहीं सूझत अपनाई[१]। रे कृष्ण कैसी होरी तैं ने मचाई ॥३॥

वेद अंत अजन की सिलाखा[२], जिस ने नैन में पाई

१ अपना आप, अपना स्वरूप २ शीशा, सलाई

तिस का ही ठीक तमै नाश्यो, सूझ पड़ी अपनाई
होरी कछु वनी न वनाई, रे कृष्ण कैसी होरी तैं
मचा